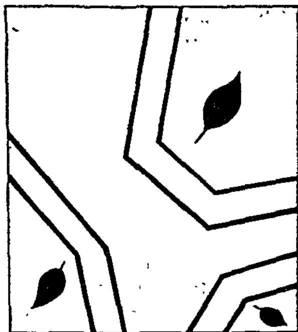
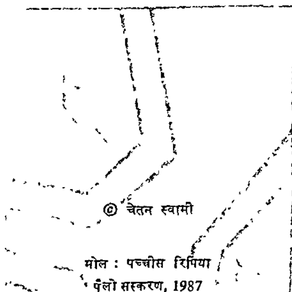
क कविता प्रकाशन, बीकानेर

आंगणै बिचाळै भींतां

चेतन स्वामी



राजस्थानी भाषा साहित्य एवम् संस्कृति अकादमी,
बीकानेर रै आंशिक आर्थिक सहयोग सूं प्रकाशित



मोल : पच्चीस रिपिया
पैलो संस्करण, 1987
प्रकाशक : कविता प्रकाशन, तेलीवाड़ो, बीकानेर (राज०)
छापोखानो : विकास आर्ट प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

ANGNE BICHALE BHEENTAN (Short Stories)
By Chetan Swami Rs. 25-00

आ पोथी
मालचंद तिवाड़ी रै नांव
जिण कनै सीखण सारू
सलीकै रै अलावा भी
भोत की है......

क्रम

पुण्याई

"भगवान रै दरबार संग जातां अेक बरोबर हुवै, उणरै अठै तो जैड़ो अगरवाळ वैड़ो मेघवाळ। कोई ऊंच-नीच नी है। नीठ गांव री पुण्या। जागी है, तू चलाय'र ओ'ड़ो क्यू बणै···काम किणी रा रुक्या हुवै तो थारा ई रुकसी, फिकर ना कर लाडेसर, कोडी नै कण—हाथी नै मण देवणवाळो अेक वो ई है। मिनख री की खिमता नी है। चाम चली जावणी है, नाम रैय जावणो है···बावळा अिस्या मौका लारै भज्योड़ा हुवै उणरै ई हाथ आवै।" सिरेपंच समझा रैयो हो लाधू नै। छैकड़लो बंगार लगावण रै मिस सिरेपंच उणरी हेठै लुळयोड़ी कूप नै ऊपर लोळी। वो संकै रै भार सूं दबग्यो। इता मोटा मिनख उण रा इण भांत थोरा करै, अबै वो कांअी बोलै नै काअी नी बोलै···होणजात रा इण भात नेवरा करै इण सू ऊंची बात भळै कांअी हुय सकै···लोग तो भीटीजण रै भौ सू उणरी छियां सूं ई दूर न्हाटै।

"आव गट्टा माथै बैठा!" सिरेपंच उणरो बांवळियो घणै लाड सूं झालनै पाखती रै गट्टा माथै बैठण रो कैयो। वो सैंतरो-बैंतरो सो बैठग्यो। सामै जोयो तो ठाः लाग्यो कै गाव रा संग मोजीज मिनख उणरै मुंडै कानी जोय रैया है···आज वो पीपळ गट्टा माथै बैठतां इण वात नै बिसरग्यो कै उणनै खल्ला पैरयां उण माथै बैठण रो समाजू इधकार नी है। वो तो भूलग्यो, पण समाजू इधकारो दैवण नी दैवण रो निरणै करणवाळा भी आंख मीचनै आंधा हुयग्या। सिरेपंच मी उणरै पाखती गट्टा माथै बैठग्यो।

"हां तो बता तू कांई सोच्यो ?"

उण अपरीछण ही उण सू सवाई नीची घातनी। वो निरणं नीं कर पाय रैयो हो कै काओ कैवै नै कांओ नीं कैवै। उणनै बोलो देख'र सिरे-पंच भळै उणरो कांधो पपोळ्यो।

"अच्छ्या जावण दै सगळी बातां" तनै तो हाल कित्ताक बरस आया हुवैला। थारो पैदा हुवणो मनै काल-परसू री सी बात लागै" अमाण चेतै है मनै थारै जलम रो साल, खैर, अठै बैठ्या मिनखा में सगळा सू बुजरग मगनीराम जी है।"

पीपळ गट्टा रै आसैपासै-विराज्योडा थका सैंग मिनखां री धांटक्यां हाल नै मगनीरामजी रै धोळै रात मे उळझगी। कम सोझी अर कमतो सुणन वाळा मगनीराम सैंग नै आपरै कानी झाकतां देख'र बगना-सा हुयग्या। सिरेपंच जोर सू बूझ्यो''''थयू काका किती उमर आयगी।" सैंग गावेडी मुळकै हा। मगनीराम रै साफ समझ में नीं आई कै सिरेपच काओ बूझै है। कनै बैठ्यो एक जुवान कान कनै मुडो लेयनै सागण बात जोर सू कैयी तो मगनीराम रै सावळ समझ मे आई। बिना दाता रै पोपळै मुडै सू मुळकता कैयो—"भाई उमर-धुमर रो तो की बेरो नी, पण खांधिया विचारा लारै-लारै दौड़ै है अर हू आगै-आगै भाजू हूं।" बैठ्योडा सगळा मिनखा रो अेकै सागै ठहाको लाग्यो। सिरेपंच अर लाधूराम भी हँस्या बिना ना रैय सक्या। हेसी ठम्या पछै सिरेपंच खंखार'र कैयो "इया है रे भाई लाधू, कै इण गाव में मगनी काका सू बूढो कोई मिनख कोनी। आनै सौगन देयनै बूझलै कै अठै इण गाव मे कोई साधू आपरो ठायचो कियो हुवै तो ? ठाः नी साई री काओ कुदरत है कै कोई साधू म्हारी देखणी में अठै च्यार छव महीणा स् बेमी रुक्यो ई कोनी, अे नीलकंठगिरीजी ही है जका आपरी पुण्याई सू इण गाव नै पवितर कर्‌यो है, तू जाणै ओ बळद ब्यावणो गांव है।"

सगळा हँस्या। लाधूराम भी मुळक्यो।

"म्हारी देखणी में आवै कै कोई भी साधू अठै जमण री कोसिस करतो तो अे म्हारा भाई गिडक लगायनै तगड देवता। साधू आंरै खातर खमठोळ री बसन रैयी, पण लखदाद है नीलकंठगिरीजी नै जको इयाकला

चांदा मिनखां मे टिकनै बारह साल री तपस्या पूरी करी।"

मगळां री घाटक्यां उण ठौड़ री सीध में लुळगी जठै नीम हेठै नीलकंठगिरी आंख्यां बंद करया बैठ्या हा। नीलकंठगिरी री कुटिया माथै नूवी नूंवी मगारैडी धजावा फर्रा रैयी ही।

सिरेपंच देख रैयो हो कै अबै उणनै घणी भूमिका नी बाधनै आपरी बात खतम कर देवणी चाहीजै।

"देख रे भाई लाधू, तनै बुलावण रो मकसद फगत इतो हीज हो रे कै भगवान री किरपा सू अबै इण गाव री मागीडी पुण्याई जागण वाळी है। बाबा नीलकठगिरीजी इण गांव नै अमर करणो चावै। आज तांई जको काम इण गाव में नी हुयो। वो करणो चावै, बाबो जीवत समाध लेवणी चावै।"

लाधूराम रै समझ मे नी आय रैयी ही कै बावै री समाधी मे वो किण भात री आखडी है जको इण भांत रो मान-सनमान नै नेवरा करीज रैया है। वो चितबंगू हुवै ज्यू कदै ई सिरेपंच, कदै ई सामै विराजियोडा लोगां नै तो कदै ई बावैरी कुटिया कानी देख रैयो हो।

उण संकना-कवाई खावता बूझ्यो - "पण मैं कोई आडी थोड़ी ई देवूं हूं—बावो समाधी लेय रैया है इण मे म्हारै काअी अडकांम है···?"

"है अडकांम···जणै ई तो तनै बुलायो है अर इता मिनख थारै मुडै कानी देखा हा···मैं तो तनै आवता ई कैय दियो हो नी कै काम किणी रा रुकै कोनी···ओ असल पुन्न रो मौको हाथ आयो है, इण में क्यू चूकै है दस बीघा रो खेड़ियो है उण में तूं किसी हांसल उपजा लेवै है। वाजवी पईसा जका हुयसी तनै दिराय दिया जासी..."

लाधू आपरै खेत मे बावैरी समाधी री बात पैला ई गावैड्या कनै सू मुळगुळ मे सुण लीवी ही। उण जिण सू बात सुणी उण नै उतर देय दियो हो कै वो आपरै खेत में समाधी नी लेवण देवै। बावै छोटो सो (खेत) ही क्यू नी हुवै, है तो ऐन सडक माथै अर गाव रै साव नेडै।

"पण म्हारै तो इनो ई टुकडो है जमीन रो, हूं पछै क्या में हाथ घाल स्यू।"

लाधू री बात सिरेपंच बिचाळै ई काट दीवी।

"उणरी तूं क्यूं फिकर करैं, थारैं सातर कोई दूजी जमीन री जुगाड़ करस्यां, तूं तो हां-नां रो उथळो दैय दै···नही जणास वाजवी पईसा दिराय देस्यां। भोळा, ओ कोई एक आदमी रो काम थोड़ो ई है जको तूं जीव नान्हो करैं। सगळै जगत सातर पुन्न रो काम है।"

लाघू मेघवाळ जाणैं आपरी कावड में हो, जिण सूं वैसी सांवकीजग्यो हुवै। बावो नीलकंठगिरी भी जवर मछया दरसाई, जीवत समाध लैवण री अर वा ई उणरैं खेत में। लाघू री समझ में नी आय रैयी ही कै बावो उणरैं ई खेत में समाध क्यूं लैवणी चावै। उण सूं ई लगतो मिरैपंच रो भी तो खेत है। उण सूं पांच गुणो वडो है। लाघू सूं रैयो नी गयो तो कैय दियो—

"थारो खेत भी तो म्हारी सीवाजोड़ ई है बावै नै उठै दिरवाय दो समाधी?"

"अरे वावळा, अे काम कोई मिनख रै चायां थोड़ा ई हुवै है। भगवान रो आदेस वावैं नै जिण ठौड़ रो हुयो है, उण नै आपां किया अलोप सका हां। म्हारैं खेत में समाध लैवण रो आदेस हुवतो, तो जणा पछै इता आदम्यां सामैं थारो मुंडो जोवण री काभी जरूरत पड़ी ही···"

□

गावराम आगैं लाघू नैं नी चावतां थकां भी हुंकारो भरणो ई पड्यो। लाघू रो ओ गाव अणूतो लाठो नी है। फगत ढाई सौ घरा री वसती है। हाईवै रोड मायैं वस्योडो ओ गाव अेक मोटैं सैंर सूं फगत पन्द्रह किलोमीटर री भाय माथैं है। सैंर सूं घणो अळगो नी हुवण रैं कारण बिजळी-पाणी री तोड़ो कोनी।

वावैं नीलकठगिरी घणा वाजा गाजा रैं सागैं समाध लीवी। सिरे-पंच रैं दवदवैं पुलिस थाणो की नी कर सक्या। गांव माय अनोखी रौनक वापर रैंयी ही। लोग लाघू री पीठ थपथपा रैया हा—"वाह, लाघू! वाह तूं तो भौ-भौ सूं तिरग्यो, जलम सुक्यारथ हुयग्यो···थारी जमीन मायैं किता जणा रा माथा झुकैला?"

पण लाधू असमंजस में की नी बोलै ।

समाधी में वड़ण री वैळा बावै च्यारूमेर ऊभा लोग लुगायां नै कैयो हो—"जाओ रे, गांववाळां, किण ई तरै रै बेमार-सेमार कै विषधर रै डस्योड़ा नै समाध कनलै नीमड़ै रा पत्ता खवाड दिया, वो वारहैपड़ंग हुय जावैला।"

अैन सड़क माथै अर गाव रै बस स्टेण्ड कनै लाधू रै खेत मे बण्योड़ी समाध माथै भीड रा गट्ट जुड़ण लागग्या। सडक ऊपरांकर जावणवाळा जातरी आप आपरी असवारयां नै ढाबनै नीचै उतरै अर बावै री धोक दैय नै ई पाछा बहीर हुवै। बावै पूर्णिमा री तिथ अर मगळवार रै दिन समाध लीवी, उण सू हरेक मगळवार अर पूर्णिमा रै दिन जातरो मेळो भरीजै। अळगै-अळगै तांई बाबा रा पर्चा पूगग्या। हरेक सकट वाळा लोग बाबा रै धोक देवण नै आवै। देखता-देखता कच्ची समाध माथै पक्को मिंदर बणन लागग्यो। गांव रा केई पच-सिरेपच अर कनलै सै'र रा की मोजीज मिनखा मिलनै अेक समाध कमेठी भी बणाय लीवी।

रोजीना इक्यांतरै जद भो समाधी री दान पेटी खोली जावै, वा लोटां सूं लबालब भरियोडी मिलै। सिरेपच रो काको समाध रो पुजारी हुयग्यो। अबै तो समाध रै च्यारा कानी दूकानां भी सजण लागगी। दूकानां मे बावै री मोकळी फोटूवा अर पर्चां री पोथ्या भी मिलण लागगी।

कनलै सै'र रो एक दानी तो समाधी रै अडोअड एक लूठी धरमसाळा भी बणावणी सरू कर दी। धरमसाळा रै बारलै पासी सड़क सामी मोकळी दूकाना ई चाकीजी है।

लाधू री समझ में नी आय रैयी ही कै वो कांओ करै ? ऊपरली रुत माथै खड़ी है। सगळा ई आप आपरा खेत बावैला पण उणरो खेत तो सुवयारथ री मेंट चढग्यो। वो खेत रा पईसा लैवणा चावतो पण उणरी ई जातवाळा उणनै पईसा लैवण सू बरज दियो, वा कैयो इण सू जात री हेठी हुवै।

सिरेपंच आगै उण कोई दूजी जमीन दिरावण रा धोरा कियाल अबै तो सिरेपंच गिनारै ई नी। छैवट एक दिन वो अकली [illegible]

सू कैंवण लाग्यो—"सिरपंच साव, मनैं कठैं न कठैं दूजो खेत दिरवाय दो नी जणास अेक और काम भी आप कर सको !"

सिरेपंच रै खैत दिरावण वाळी वात तो समझ में आय रैयी ही पण दूजो किसो काम हुय सकै बा वात समझ परवारै ही ।

"दूजो किसो काम कर सकू—पईसा लैंवण सू तो तू नै थारा समाज-वाळा खुद नाट दै दी ।"

"पईसा तो मैं आप नी लैंवू ।"

"तो पछै ?"

"मनै आप समाध नैडै अेक दूकान दिरवाय दे—म्हारो गुजराण हुय जावैला ।"

सिरेपच नै इण वात माथै घणो अचंभो हुयो—हीण जात दुकान करैला, अर वा भी समाध जिसी पवितर जगां माथै । पण सिरेपंच आपरो धीजो नी गमायो ।

"देख रे बावळा, म्हारै दूकान दैवण मे कोई अडकास नी है, पण दूकानां दैवण रा रुळ घणा करडा है !"

"मैं तो म्हारो खेत ई दियो है, रूळ मे हेर-फेर आप चावो जियां कर सको ।"

"नही रे भाई, म्हारै हाथ री बात कठै रैयी । कमेठी करै जियां हुवै । अेकूक दूकान रो छव हजार रिपिया सालीणो भाडो है अर दस हजार रिपिया एडवास दैवणा पडै । भोगै पडै तो तू ई लैय लै, हा थारै खातर की कमती वेसी मी कमेठी नै करण रो कैय देस्यां ।"

"पण आपरा भाणजा भी तो च्यार दूकानां लीवी है अर धरमसाळा चिणाई है वां सेठां री भी तो च्यार दूकाना है ।"

"ले, तू तो घणी नुक्ताचीणी करै रे भाई, पण म्हारै अठै कोई रिस्ते-दारी नी है । भाणजा आप आपरा खेत कमेठी रै नावै मंडाया है अर धरमसाळा रा सेठां री सर्तें दूकान चिणावण सू पैंनी ई च्यार दूकानां री है···कच्चो काम म्हारै कोनी हुवै···।" इतो कैयनै सिरेपंच सा'व चल्या गया ।

लाघू री,समझ मे नी आय रैयी ही कै वो काओ करै । अचाणचक

उणर अक यात ऊकला। तायक न सड़क-मडक जावती सिरपंच री वांवळियो झाल लियो।

"सिरेपंच सा'ब मैं ई जीवत समाध लेवूला आपरै खेत में···पूनम रै दिन नीं-कालै अमावस है, कालै रा ई···दोवडी समाध सू गांव री पुण्याई घणी वधैला···।"

सिरेपंच झटकै सू आपरो वांवळियो छुडाय लियो—"ना रे बावळा, धूड़ में दव'र मरणै में कांओ सार है, इयाकली बावळी वाता नीं करणी···।"

पाणी थारो रंग

बदरी रा कोडिया भूवता-सा लखावै हा। हालत म्हारी भी कम कोभी नीं ही। गळै मांय जाणै रेत भर डाटो देय दिन्हो हुवै।

—"मास्टर, मरस्यां।" बदरी रा बोल जाणै माडै मुडै सू रळक पड़्या।

—"म्हासू तो अबै को चालीजै नी।" कैवतो वो धप्प करतो अेक बूई मार्थं ओटाळ हुयग्यो। बूई सूं अेक चिर्राटी जाणै ओळमा देती-सी निकळ उडी।

अळगै-अळगै तांई अेक-बीजै सू सिर गुंथ्यां फगत धोरा ई धोरा। नैड़ै-नैड़ास कोई फोग भी नी दीठो, जिणनै सुरड़, तिरस सागै फरेब कर्‌यो जावै।

मैं रोवणखाली आवाज मांय कैयो—"तू थोड़ी सबूरी राख'र सुस्ताव, मैं देखूं कठै ई पाणी हुवै तो···" बदरी नाड़ हलाय पस्तभाव सू आंख्यां मीचली।

उतरतै वैसाख रो जैड़ो तावड़ो हुया करै, वैड़ो ई हो। पगरखी मांय फवणा अर अेड्यां बळ रैयी ही, पण तिरस रै आगै डील रो ओ पळीतो नाकुछ हो।

चौफेर रेत मार्थं पाणी ई पाणी लैर्‌यां लैय रैयो, पण अकरै तावडै सूं लैर्‌यां लैवतै इण पाणी नै आजलग कुण पीय सक्यो, जको म्हे ई पीवणै री वेवड़ कर सकता।

इण रिंदरोही मांय तिरसा मरनैं, खुरड़ा खोतरण छंड कोई सरधा न्याकी नीं बची ही।

अेक ऊंचै टीब्बै माथै चढ़तां आंख्यां आगळ अंधारी आय रैयी ही। अणूतो जोर लगाय देख्यो—दो-तीन खेतवा अळगै रेल्वै फाटक-सो दीठो। टीब्बै सूं उतरती वैळा मैं किणी पंखेरू री पाख जैड़ो हळको हुयग्यो।

ओटाळ पड्यै, गैळ सूं आख्यां मीचतै बदरी नै चचेड़्यो।—"बदरी पाणी sss!"

बदरी आख्या मिचमिचाई अर हाथ आगै लंफायो, जाणै मैं भर्योडो लोटो सागै ल्यायो हूं। पछै सावचेती सू आंख्यां खोली। बूझ्यो—"कठै है पाणी?"

—"आगै…आगै दो-तीन खेतवा माथै रेल्वै फाटक दिस्सै…तूं थोड़ी हिम्मत कर…।" वो हाल्यो तक नी, तो मैं उणरो बाहूड़ो झाल उभो करणो चायो। उणरै गिजडरपणै माथै मनै झूंझळ आयगी…"देख, तिरसो मैं ई कम नी हूं, पण सफा हांगो नाख्या तो इण बळती ओकळ में ई दोवां रो दाग हुय जावैला…घरवाळा सोध-फिरोळ ई बरात पाछी पूग्यां करैला…उठ!"

बदरी धक्का खावतो-सो उठ्यो।

गैलो पैली ई बिसराय चुक्या हा। अंदाज सू ऊझड़ चाल रैया हा। बदरी आंख्यां मीच्यां, म्हारो खांधो झाल्यां धक्का खावतो थिग रैयो हो। टापी री सीध में पग ठरड़तां मैं उण मौरत नै माडै हो, जिण मांय बरात जावण री हामळ भरी। कितो आछो हुवतो बरात आवतो ई नी। अर नीतर बदरी नै तो अठै आवण खातर नट ई जावतो!

दिनुगै सूं ओ तीजो बुलावो हो। अबकै नाई नी, बोदूरामजी रो विचै-टियो पोतो आयनै कैयो—"काकाजी फुर्ती करो लॉरी तो स्टार्ट खड़ी है।"

उणरै निकळता ई जीसा रै लबडधक्कै चढ़ग्यो। वै मधरै सुर मांय समझावण लाग्या—"मिनख, मिनख रै जाया करै है रे…बिचारां नै क्यूं फालतू भागदौड़ करावै…जावणो है जणा आ घड़ी-घड़ी रा बुलावां मांय कांओ सार है, अर नीं जावणो है जणा—"

—"कुण, सुगनो है कांअी ?"

मुण'र मैं कमरै सू वारै झाक'र देख्यो, तो जीसा री नांव लैंवता वोंदूरामजी खुद बुहा आया। इणी वखत म्हारै मुडै सू निकल पड्यो—"नरग्या, डैण खुद आयग्या—अवै तो जावणो ई पड़सी—।"

दोय-च्यार कपडा टूथ पेस्ट-ब्रश अर दाडी रो समान वेग माय घालतो मैं वोदूरामजी रै लारै ई निकळ पड्यो। घर सू तीजी गळी मे ही नगर-पालिका रा भूतपूर्व अध्यक्ष वोदूरामजी रो पुराणो मकान है। चौडी गळी मांय लॉरी खडी ही अर अेक स्याणो मिनख वरात्या नै वैसण रा नैवरा कर रैयो हो। टीगर-टोळी कांचाकोळ मचा राखी ही। वस रीआगली सीटा माथै वा आपरा कब्जा धिंगाणिया वस्ती दांई ई जमाय लिन्हा। मैं माय वड्यो अर तीनवाळी अेक खाली सीट देख'र उण माथै जमग्यो। अठी-उठी जोयो, लॉरी माय घणकरा टीगर टोळी ई हा, मैं कनला नै बूझ्यो, "काअी वात है, ओजू वराती पूग्या कोनी दीसै ?"

—"वयू आपा आयग्या नी।" जवाव मे वा मसकरी करी अर फिस्स करता हँस पड़्या।

मैं गौर सू निरख्या वानै। लट्ठ री कोरपाण धोती माथै धौळो धक्क कुडतो, कॉलर हेटै चौलडो करनै दियोडो रुमाल। दाड़ी मुतराई सू बण्योडी नै फरराँवती मूछ्या हेटै लाल होठ पान सू रगीज्योड़ा। वारै काना मांय खसोलैंडा अतर रा फोहा री भभरोळ आखी वस माय खिंड रैयी ही। मनै [मन ई मन आ वात चेतै आयगी कै जनेती री तो जूण ई न्यारी हुवै। जमानो भलाई चावै जठै पूग ज्यावै।

थोड़ी ताळ माय ई गीतेरण लुगाया रो झूलरो मोटर नैड़ै आयो, जिण विचाळै नान्हा-सा बींद राजा मौड़ा निजर आया। राजाजी रो साफो मांम्यो नी संभ रैयो हो। लॉरी माय वडतां वींद राजा उणनै आपरै दोवू हाथां सूं इण भांत झाल लियो, जाणै काच रो भाड है अर ठेस लागता ई वधर जावैला। मैं वोंदूरामजी री अक्कल मे सेंधमार कर ई रैयो हो कै अणछक आवाज आई—"अरे, वाह····काअी कँवणी···आयग्यो वदरू ?"

वदरी पनवाड़ी एक खस्ताहाल हवाई वेग लिया हांफतो थको वस माय चढ्यो। म्हारै वाजूवाळी दो री सीट माथै वैठ'र उण आपरो हांफणो

काबू कर्यो, फेर बोल्यो—"मास्टर तू कणा आयो ?"

—"आयां नी ताळ हुयगी। बुलावा माथै बुलावा आवण लाग्या तो भाजणो पड़्यो अर अठै हाल चालण रा कोई स्यान-गुमान ई नी है।"

—"फेर ठीक है।" बदरी नमलनी सू बोल्यो—"मैं सोच्यों, हू ई सगळां सूं मोड़ो पूगूंला'' ले, खा।" बोलतां थकां ई बदरी आपरै खूजै माय हाथ घाल्यो अर मुट्ठी म्हारै सामै खोल दी।

सुपारी रो टुकड़ो लेय'र मैं बूझ्यो—"पईसा तो नी मांगैला ?" —"नगद नी सर्‌यो, पाछो आय'र खातै में मांड दू ला।" कैय'र बदरी जोर सू ठहाको लगायो। मनै संतोख हुयो, चलो बदरी मागै रैवैला तो बोर तो नी हुवूंला।

की ताळ पछै मैं बदरी रै कान माथै होठ धरतां होळै—होळै बूझ्यो —"यार बदरी, पाच कोस री भां कोनी अर लगन ई स्यात गुदळकियो ई हुवैला, फेरू इती वेगी हाय-तोबा मचावण री कांओ जरूत पड़गी बोदू-रामजी नै।"

—"तू मास्टर साब भोळो है।" बदरी जाणै लूठो भेद खोल्यो— फालतू टीगरां रा चोटी-कान खेंचै। आ लॉरड़ी मोफत री है, तेत सटै बरात पूगा देवैला'''लॉरी वाळो कोई दूजी बरात छोडण नै हाथोहाथ पाछो आवतो हुयमी।"

साढी दस वजतां बरात ठिकाणै-सर पूगगी। अेक चौफेर बाड़ सू घेर्‌योड़ी गोदाम जैड़ी धरमशाळा में जनवासो हो। बराती उतर्‌या नी हा कै नास्तै री तस्तर्‌या बंटण लागगी। मैं बदरी सूं कैयो—"तस्तर्‌यां स्यात अंधारै-अंधारै ई वणायनै राख दीवी हुवैला ?"

—"इयां बोदूरामजी रो तप काअी कमती है। नींतर अैड़ै धुर गांव में अैडा तमिया कुण करै है।"

बारै नटण्यां रो भूंगरो गाय रैयो हो, जिण सू धरमशाळा री बोदी भीता गूंज रैयी ही। रसिक बराती तस्तर्‌यां हाथ माय ऊंचाय, उठै पूगग्या। नटण्यां नै वै नी जाणै किण चीज सूं ललचावता सा लखाय रैया हा।

अेक अधखड़ नटणी जिणरो गळो स्यात गीत गावण खातर नी फगत

इमी वाणी मे गुहार लगावण सारू ई वण्योड़ो है—वड़वड़ाय रैयी ही—"मंवरियें पट्टांवाळा वावू···थांरी जुवानी सुख रार्खं···थांरै चांद सरीखो फूटरो बेटो जलमैं···दयो-वीरा, मंगत्या नै हाथ रो मैंत द्यो।"

छैला वावूआं रो मन इण गुहार मे अगै ई नी रम रैयो हो। वै आपरी जुवानी नै इण अघखड़ नटणी री बेटी री जुवानी सूं तोल रैया हा। वोद्र रामजी रा मांडेत्यां रैं उठै चल्या जावण सू रसिका रैं खासा सुविधा हुयगी ही। वांरै हुंवता की संको राखणो पड़तो।

दानी नटणी री खासा लट्टापोरिया सू छैंकड़ काना में फोहा दाब्योड़िया भाईजी रो कोमळ हियो पसीज ई ग्यो। वां लप करतां रुपियैंवाळो सिक्को जेब सू निकाळ्यो अर हाथ ताळकै कर्यो। नटणी ई वारी दानी मनस्या समझनै नैड़ आई—"लाओ बावूजी···सदा लिछमी रो वरतारो रैवै...।"

"ऊं हूं तनै नी...उण नै मेज...।" भाईजी रो इसारो दानी नटणी समझगी। उणनै अैड़ा संस्कृतिवान मिनखां रो घणो तजरबो रैयो है, स्यात। उण बिना की हील हुज्जत रैं मुंहैं आडो हाथ दियां गावती आपरी जुवान बेटी नैं अंगूठै रो धुदो दैय'र आगै करदी। गीतेरण हथाळी पसार दीवी।

माईजी री दानबीरता मार्थ इंदर पुसव बिरखा तो नी कीवी पण वारै मन रै आंगणै सैकड़ कुणा संचनण हुयग्या, जद रुपियै साटै वै उण जुवान नटणी रै हाथ रो स्पर्श कर सक्या।

अघखड़ जनैती रावणहत्थै वाळै भोपै भोपी मांय रस लैय रैया हा। ज्यूं-ज्यू भोपी धूमल रो रूप बखाण करती। जनैती जावती जवानी रैं ओळावै "हम्मैं-हम्मैं बूढी हुय जावैला···" कैय'र स्यात खुद नै ई कैय रैया हुसी कै बूढा हुय जावोला, पण हद है इण उमर री फिटाई नैं कै वै दिनो दिन बूढा हुवता ई जाय रैया है।

मैं वदरी रो वावळियो पकड़'र कैयो—"चाल यार···घूम'र गांव देख आवा।"

—"मना कुण कर्यो है ?" बदरी बोल्यो—"मैं त्यार हूं पण पाछा वेगा आवांला मयू कै तावड़ियो अकरो पड़तो जाय रैयो है।"

धरमसाळा सू निवळ'र म्है टाडे में आयग्या। गवाड़ में लाग्योड़ी ट्रियां धड़ा अर घूघटा सू अेकमेक हुयोड़ी लुगायां सू ढकीज रैयी ही। ाबै-चौड़ै टाडै मांय मोकळा घेर-घुमेर बिरछ सैराय रैया हा। अेक नीम ी छियां में म्हांरी बरातवाळी लॉरी उभी देखनै बदरी मनै उठै लैयग्यो। ी जाणै उणनै किया ठा' लाग्यो कै लॉरी रो ड्राइवर जर्दो खावै। बदरी ड्राइवर सू बूझ्यो,—"कियां ड्राइवर साब अठै ई विराजोला का दूजी···"

—"अठै ठैर्‌यां कियां पार पड़ैला बाबू साब···" ड्राइवर मजाकिया ंभीरता सू कैयो, "कनलै गाव सू अेक बरात उठावणी है। बस, अबै वान्या ई, इयां ई चाय-पाणी मे मोड़ो कर दिन्हो।"

—"कुण-से गांव सूं?" बदरी बूझ्यो अर ताळी री फटकार सूं इसारो करतां जर्दो ई मांग लियो।

—"गिराजसर सू आगलो···काओ नाम···?"

—"गिराजसर जावोला?" बदरी जाणै थिमक पड़्यो—"अठै सू कितो अळगो है गिराजसर?"

····"क्यूं चालणो है कांओ गिराजसर, "ड्राइवर हंस'र बूझ्यो।

····"चालणो तो···" बदरी म्हारै कानी देख्यो तो उणरै चैरै माथैः मनैं संशय निजर आयो।

मैं बूझ्यो, "गिराजसर थारो सासरो है कांओ, बदरी?"

..."अरे नहीं मास्टर तू तो मजाक करै···जठै कोई मोटरगाडी, मैसागाडी नी जावै उठै बंदे रो सासरो···हु···हु···।"

..."जणै पछै गिराजसर रै नांव सू इतो गळगळो हुवण री काओ जरूत है?"

..."भाया तू सरकारी नौकर है, तनैं कांओ ठाः आ प्राइवेट दूकान-दारी कांओ चीज है। पैली कनै सूं समान द्यो, पछै पइसां खातर लारै भाजो···।"

"बस, बस। मैं समझग्यो।" मैं बिचाळै ई कैयो, "तो बठै आपनैं उधार वसूलण नैं जावणो है?"

"हां यार। अर जावतां ई पईसा तता मिल जावैला···ब्रियां ड्राइवर साब गिराजसर किती ताळ में पूग जावोला?"

भलेर देवी।

—"हां, वां मैं अबार कर देसू बदरी भाईजी"'पण म्हारै घरै कुल्ळो करया बिना बिलकुल भी जावण दू ना।" हड़मान अणसुणी करतां आपरी जेब सू नोट निकाळ्या अर गिण'र अेक सौ तीस रिपिया बदरी नै भला दिन्हा। बदरी रिपिया हाथ माय लिया अणबस-सो म्हारै कानी देखण लाग्यो।

—"चाय आवै तद तांई आप अठै ई बिराजो"'मैं बामण दादै री दूकान में निगह कर आवू कोई हरी सब्जी हुवै तो"'बामण दादो इण गांव रो 'बडोबजार' है जठै साग-तरकारी सूं लेय'र सोने-चांदी री खरीद बेच हुवै"'" हड़मान हंस'र बतायो अर कैयो, "अबार चाय आवै अर हू ई आवू, थे अठै ई आराम करो।"

मनै तिरस लाग्योडी ही। मैं सोच्यो, चाय ल्यावण वाळै सूं पाणी मंगाऊंला। हड़मान उतावळो-सो निकळग्यो। मैं हड़मान रै हियै री हुलस रो असर बदरी रै चैरै माथै सोधणो चावतो। उणरै चैरै रो रंग उड्योडो हो। म्हा सू निजर मिलतां ई बोल्यो—"मास्टर, आज तो फसग्या"'।"

मैं बदरी रै इण अणमोल्यै बौहार सूं अचंभै मांय पड़ग्यो। तद ई बदरी फेरू कैयो,—"चाल"'अबै उभो रैवण मांय ई मुसीबत है"'बात तनै रस्तै माय बताऊंला, चाल, आज्या।'

बदरी फेरू म्हारो बांवळियो पकड्यो अर उण कच्चै आसरै सू खैंच'र मनै बारै लेय आयो। मैं उणनै रोक'र बूझतो, पण उणरी बदहवासी देखनै मनै भी किणी अणहुणी री आसंका लखाई। तरै-तरै रा अनुमान साधतो मैं बदरी रै लारै बोलबालो चाल पड़्यो।

गाव री सीव सू बारै निकळ आयां पछै ही बदरी निठाई सूं सांस भरी। मैं तेज चालण सू कोनी तरिया हाफ चुक्यो हो। दोवां री सासा सावळ हुई तद मैं बूझ्यो, "बदरी, छेकड़ तनै कांई निजर आयग्यो हो,"' गाव माय थारी किणी सू दुस्मणी तो नीं है ?"

—"दुस्मणी अर इण गांव माय ?" बदरी हैंस्यो तो म्हारै अचूभै री कोई सीव नी रैयी।

—"हद है तूं अबै हेंस रैयो है।" मैं पूं[illegible]

—"अबै रोवणै सू कांओी फायदो ? रोवणो तो तद पड़तो जद उण कुम्हार रै अठै कच्ची रसोई खा'र जनेऊ नै लाज मारतो। थारै में मास्टर पढ़ लिख'र भी अक्कल नी आई। यार, आपां बांमणा रै घरै जाया-जलम्या आं कारु कमीण जातां रै घरै रसोई जीमण लाग्या तो,...तो आपांनै कुण बूझैला रे ?"

—"बदरी...।" म्हारी चीख निकळगी

—"बोल मास्टर......समझदारी करी नी मैं ?"

—"वो बिचारो साग तरकारी लैय'र आवैला, थां पिंडतजी महाराज खातर। उणरै दिल माथै कांओी बीतैला ?"

—"तू दिल री बात करै, अठै धरम माथै काओी बीतती ?"

—"उण बुलाया कोनी हा, आपां ही गया हा।"

—"बहस मत कर मास्टर। मनै म्हारा पईसा मिलग्या, बात आई-गई। चाल अबै बोदूराम जी रै पोतै री बरात में जीमांला...खाथो चाल...।" कैयर बदरी अेक पगडांडी रो रुख कर लियो।

मैं मुड'र देख्यो, हडमान रो गांव कठैई धोरां लारै लुकग्यो हो। उण पगडांडी कोस भर नीठ चग्या हुवांला कै म्हां दोवां रै मुंडै सू अेकै सागै निकळ्यो, "तिस्स लाग रैयी है।"

मैं देख्यो बदरी रो मुंडो सूख चुक्यो हो। उणरै होठां माथै पापड़्यां जमगी ही। मैं कैयो,—"अे रस्तै मांय आवता फोगड़ा सुरड़-सुरड़ नै चिगळ बोकर तिस्स नी लागैला। घंटा खण में तो पूग ई जावाला...।"

"फोगड़ा चूसणै सूं तो तिस्स बत्ती लागै है, मास्टर।" कैवतां उण अेक झूपडी कानी इशारो किया,—"वा देख, धोरै माथै झूपड़ी है, स्यात पाणी भी मिलैला...।"

झूपड़ी देखनै दोवां माय फुरती-सी आयगी। गैलै सूं टळनै झूंपड़ी नैड़ै पूगा। माय जाय'र देख्यो तो आप-आप रै भाग माथै रोवणै री जची। घडै रै नाव माथै अेक फूटोड़ो ठीगळो म्हां दोवां रो मुडो चिगाय रैयो हो। उण ठीगळै नै देख'र तो म्हांरी तिरस औरुं बधगी। बार-बार लुखा होठां माथै जीभ फैरनै आला कर रैया हा, पण सागै-सागै ओ भी लखावै हो जाणै जीभ माथै थूंक आंम ई नी रैयो है। कंठ तो जाणै चिपग्या हुसी। बदरी

मुंडो लटकाय नै रोबणखाळी आवाज माय कैंयो, "अबै ?"

म्हारो खांधो अपड़यां बदरी आंख्यां बंद कर्‌यां चाल रैयो हो। जूत्यां सू उछळती गरम ओकळ सू गुद्‌दी भरीजती जावै ही। ज्यूं-ज्यूं फाटक नेड़ो आय रैयो हो, म्हारै मांय नूवा प्राण सचरीज रैया हा।

जाणै फाटक तांई पूगण रो ई आखरी मत हो बदरी में। क्रांसिग सूं परली कानी, टापी सू पैली, अेक बोरटी हेटै पूग'र बदरी म्हारो खांधो छोड दिन्हो अर जमीन सूघण लागो। मैं झट करतो टापी कानी लंपयो।

टापी मे ऊंघ करतो मिनख मनै पछै निजर आयो, पैली मैं पाणी रो घडो दीठो। अचीत्यो ई मिनख देखनै वो अधबूढो मिनख हड़बड़ायो अर उण उठनै दकाल करी—"ठेर।"

म्हारा हाथ-पग उणरी दकाल सुणनै हा जठै रा बठै ई रैयग्या। म्हारै हाथ में छल्योड़ी डोली उण खोसली अर कैयो—"इया पाणी पी'र तनै मरणो है कांअी...पैली थोड़ो मुस्ता ले।"

मैं जाणै रोष पड़्यो होवूं, बोल्यो, "बारै म्हारो भायलो है...तिस्सूं मरै .....बेहोस हुयग्यो है।"

"—की कोनी हुवै, उणरै।" उण ध्यावस सूं कैयो। फेरुं छल्योड़ी डोली लैयनै खुद बारै आयो।

थोड़ा सुस्ताया पछै चळू-चळू पाणी पाय'र उण इण बेतुकी जात्रा रो हालचाल बूझ्यो। म्हारै सक्षेप में बतायां वो बोल्यो —"शहरी लागो... पढ्या-लिख्या हो, बामण हो......हूं" उणरी इण गैरी 'हूं' रो अरथ म्हारी समझ मांय नी आयो। वो पलट'र बदरी कानी मुड्यो अर बोल्यो— "पिंडतजी, म्हारै कानी देखो...पाणी पीयां सू पैली नी सर्‌यो, पीयां पछै जात नीं बूझोला ?"

बदरी मुंडो उठाय'र देख्यो पण बोल्यो की नी।

—"मैं हरिजन हूं, जात रो मंगी। ओ घड़ो, जिणरो पाणी पीय'र थारी आंख्यां खुली है, म्हारो ई है। बामण रो धरम लैवण रो गुनो कर मैं भी नरक रो भागीदार हुयग्यो...बोलो हुयो क नी ?"

बदरी आंख्यां फाड़्यां मिनख कानी देखतो रैयो। मैं अेकानी ऊभो दोवां नै देख रैयो हो।

वो आदमी चुप हुयग्यो, तो बदरी सिसकतो उठ्यो अर आगै लंफ'र उण रै खाधै माथै हाथ राख दियो, "भगवान...मनै माफ करज्यो भगवान"।

—"चलो बामण देवता...टापी री छियां मांय थोड़ो अराम करल्यो.. की ताळ ठैर'र भरपेट पाणी पीयर निकळ्या। मैं रस्तो पकडा-वणनै सागै चालूला की दूर...।" मिनख हंसनै कैयो अर टापी कानी बहीर हुयग्यो।

बदरी मारी पगा सू आदमी रै लारै चाल रैयो हो। मैं आवाज दी, —"बदरी...।"

"मास्टर, बहस मत कर। चुपचाप टापी में चल्यो आ...।" हार्योड़ै लहजै मे बदरी कैयो तो मैं देखतो रैयग्यो।

लारै रैयग्या सगळा धोरा री रेत जाणै बदरी रै चैरै माथै पसरगी।

वी० डी० ओ०

उणनैं लखावैं कै—वो जट्ट भरियोड़ो गुड्डो है जिणनैं रस्तै रै सूअै बिचाळै नाख्योड़ो है। लोगां रै पगां तळै आय'र पिचकै, पाछो फूल जावै। पण आज तो हद ही हुयगी। अेक किणी उणनैं झुकनै उठायो अर बिचाळै सूं दो टुकड़ा करनै नाखग्यो।

होळै सुर मांय बूझ्योड़ो सवाल बार बार पड़धुन हुय'र उणरै काना में खुमण लागतो—"तू आलोक ही है नी ? तूं आलोक ही है नी ? हुंस्यार आलोक ?..."

उफ ! औ सुणती वखत वो मर क्यूं नी गयो !

"म्हारो हुंस्यार आलोक हुयां सूं थारो कांई बिगड़ग्यो।" उणनैं लखावै हो—'हुंस्यार आलोक, हुंस्यार आलोक' अेक अटक्योड़ै रिकार्ड रै दांई उणरै काना में लगोतार बाज रैयो है।

इण वखत वो गैलो हुयनै चिरळावण वाळो ई हो कै सामै आवतै मिनख नैं देख'र वो इयां नी कर सक्यो।

पनवाड़ी री दूकान रै कनैंकर निकळता अळसेट में ई उण खुदोखुद नैं उणरै शीशै मे निरख्यो। उण देख्यो उणरी आख्यां रीस अर अपमान री दाझ सूं सिलग रैयी है। खुद री ही राती चुट आंख्यां सू उणनैं डर मैंसूसण लाग्यो।

बजार नैड़ै आवतां-आवतां उण आपरो रुख पार्क कानी कर लिन्हो। पार्क में बैठ'र उणरो जीव कर्‌यो घणै [जोर-जोर सू रोवै। इतो रोवै कै

उणरै मांय जको घी धिरोळा खाय रैयो है वो स्मो पंपळ'र थारै आय जावै अर वो खुद नै हुळको मैसूस करै ।

पार्क में बैठ'र उण बिलां रै बंडळ नै दूब मार्थ पटक नांख्यो अर वांनै घूरण लाग्यो । उण कंडी निमरमी नौकरी अपडली । जठै दिनुगै, सिंझ्या, दोफांरा घूम्या पछै स्यावासी री ठौड़ अपमान मिलै । इण सूं तो आछो रैवतो किणी दूजी नौकरी मिलण तक वो बेकार रैय जावतो ।

ए० ई० री घणी बीणत्या करनै तो उण आ नौकरी पाई अर वा भी बिल डिस्ट्रीव्यूशन री । पैंतीस हजार री आबादी वाळो उणरो कस्बो अर अेकलो वो उण विभाग रो बिल बाटणियो । उणनै अबै समझ में आयो कै उणरै ही इण पद मार्थ काम करण वाळो कर्मचारी इण पद नै खाली क्यूं करग्यो ?

सरु सरु मे उणनै आ नौकरी घणी चोखी लागी । किणी अफसर रो बंधाण नी, फगत घूमणो सै'र माय ।

पैलड़े महीणै री तिणखा लेवतां उणनै घणो अचंभो हुयो । उणनै तीस दिनां रा दो सौ चाळीस रिपिया री ठौड दो सौ दस रिपिया दिया तो उण होळै से प्रतिरोध रै सुर मांय बूझ्यो—"साब आठ रिपिया रोज रै हेसाब सू तो दो सौ चाळीस रिपिया हुवै, अे तो दो सौ दस ही है ? तद तिणखा बाटण वाळै जे० ई० एन० रै नैड़ै उभा कर्मचारी अेकै सागै हँस्या । वो सिटपिटायग्यो । दुबारा उण को नी बूझ्यो । जे० ई० एन० उणरी नादानी माथै मुळक नै रैयग्यो ।

उणरै ई दूजै मस्टररोल साथी, जको ट्यूबवेल माथै ड्यूटी देवै, समझा वण लाग्यो—"तू तो यार पढ्यो-लिख्यो हुय'र भी अणपढां सू बागदो निकळ्यो । मस्टररोल कर्मचारिया नै कदै ई पूरी तिणखा मिलै है कांओ ? तीन दिन री कटौती कटी चौईस रिपिया अर यूनियन रो चंदो कटग्यो छह रिपिया—अबै बोल कमती कियां मिल्या ?"

"यूनियन रो चंदो तो पक्कावाळा सू लिरीजणो चाहीजै अर तीन दिन री कटौती किण बात री ? मैं तो पूरा तीस दिन काम कर्यो है ?"

"थारी समझ माय नी आवैला—ओ नैम है ।" ट्यूबवेल साथी उणरै प्रश्नां री झुंझळ में नी फसणो चावतो । वो उणनै अेकलो छोड'र बूहो

गयो।

तद सू वो भली भांत जाणग्यो कै नौकरी करण खातर तीस रिपिया कटावण री नैम हुवै।

उण कटौतियां नैं सैण कर ली, पण अजकालै जको उणरै सागै बीत र्यो है, इणनै वो सैण किण भांत कर सकै।

आज ही उण किण तरै री हेसी उडाऊ निजरां रो सामनो कर्यो हो। उणनै तद लाग्यो कै वो बावनो हुयग्यो है अर थोड़ी ताळ और रैयो तो बावनै री जग्या जमी माथै चालतो-फिरतो मकोडो हुय जावैला।

उणनै फैरुं खुदोखुद माथै रीस आवण लागगी कै क्यूं उण आ नौकरी करी जठै पल-पल उणरी महत्वकांक्षावां नैं कुंठित हुवणी पड़ै। स्वाभिमान कचीयो जावै।

वै सगळा नजारा उणरै सामैं टुकडा-टुकडां मे उभा हुयग्या जका मोह भागण रा साखी है।

□

एक-तीन-पाच-सात अर इण तरै वो पूरी उणतीस पेड्यां फदाकग्यो। दो-दो पेड़ियां मैळी चढण सू उणरी सास भरीजगी। अबै पेडियां नी बारुं-दी हो। सांसा नैं काबू में करतो वो बारुंदै रैं फर्श नैं देख रैयो हो। हाथ माय पकड्या बिलां नैं फडफडावतो थो की छिणां तांई स्यांत उभो हैली मे वापर्योडै सरनाटै रो जायजो लैवतो रैयो। कोई बारै नी आयो। किणी नैं बारै नी आवतां देख'र मजबूरण उण हेलो पाड्यो—"जैचंद-लाल रुगलाल...।"

की ताळ पछै अेक बिहारी छोकरो आय'र उणरै साम्ही उभो हुयग्यो।

"क्या डाक है ?"

"नहीं...पाणी रा बिल है।" उण दो पाना निकाळ'र छोकरै नैं झला दिया।

उणनै पूरी बिहारी जात माथै खीझ हुवण लागगी। कैड़ी धोंचू अर पागल जात है। बिलां रै ढिगलै नैं देख'र भी डाक रै बारै मे बूझै।

अक्कल रा इता उजीर है जणै ई तो साठ रिपिया महीणैं में सेठाणियां रा पूर पल्ला धोवण सूं लैय'र भाड़ू बुहारी तक रो आखो खोरसो करै। सेठिया लोगां रा उतर्‌योड़ा कपड़ा पैर'र भी राजी।

अबै वो अिकोवड़ी मंजल रै गंदलै-सै मकान रो दरुजो खटखटा रैयो हो। घणी ताळ कूंटो बजायां पछै माय सू खरखरावती आवाज आई "कुण है?"

"मैं हूं पाणी रा बिल वाळो।"

"ठैरो, खोलू।"

दरुजै में बूढळी प्रगट हुई।

"माथो दुखै हो बेटा, इण खातर सोयगी...आज अळस पौर सूं ई माथै माय घोवो उठ रैयो हो।" बिना बूझ्यां ही बूढळी दरुजो बंद अर मोड़ो खोलण रो कारण बता दिन्हो।

'माथो दुखै है तो मैं किसो अमृतांजन बांट रैयो हू।" कैंवण रो मन हुयो पण कैयो कोनी।

बिल भलाय'र वो आवण लाग्यो तो बूढळी टोक्यो—"अऽऽ ठैरी तो बेटा।"

वो ठैरग्यो।

"देखो तो बेटा, किता रुपिया रो है ओ बिल!"

"दस रिपिया रो।" उण बिना देख्या ई लापरवाही सू कैयो अर जावण लाग्ग्यो। उण फैरुं टोक दिन्हो—"पण लारली दफै तो सात रिपिया सितर पईसा ही हा नी?"

"हां, हा पण अबै बधा दिन्हा।" कैय'र वो आगै बूहोग्यो। गळी रै छेंकड़लै कनारै ताई बिल बांट'र वो पाछो आयो तो बूढळी उणनै उठैई बिल भाल्यां मिली।

"पईसा तो वधा दिया चोखी बात, पण पाणी आजकालै कम आवै, आ कांओी बात है? पईसा लेवो जणा पाणी तो पूरसल दिया करो।" बूढळी बड़बड़ा रैयी ही अर उणनै लखावै हो जाणै आखै वाटर वर्क्स री बिगड़ी व्यवस्था रो अेक अेकलो वो ई जिम्मेदार है।

उण वळती निजरा सू बूढळी कानी देख्यो।

"पाणी कांओ मैं देवू, म्हारो काम तो बिल बांटणो है।"

आ वात वो दिन में वीसू दर्फ दोहरावै।

वो बूढळी सूं पिंड छुड़ाय'र दूजी गळी रै पाटै नैड़ो आयग्यो। जठै उणरी ही उमर रा कीं छोकरा बैठ्या तास खेल रैया हा। उणनै देख्यो तो—अेकर सगळा खेल रोक दियो अर बूझण लाग्या—"क्यू ँ बिल है म्हांरो।"

"हां है।" वो धिरजाई सूं सगळा रा बिल निकालण लाग्यो।

छोकरां नै बिल झलाय'र वो चूनगरां रै मोहल्लै में उतरग्यो। कीं मुसलमान लुगायां चोपाळ रै पीपळ तळै बैठी हताई कर रैयी ही। उणनै आवतो देख्यो तो सगळां री निजरयां उण माथै टिकगी। वांरी हताई रा सुर उणरै कानां में पड़्या तो वो सहमग्यो। वै कैय रैयी ही—

"जै पाणी पूरसल पावणो है तो अेक ही उपाय है, इण बिल बांटण वाळै नै पीपळ सूं बांध देवो...अफसर आयनै छुड़ा लै जायसी...तद ठाः लागैला करम फुट्यां नै। आ गिरमी री रुत अर टोपै-टोपै पाणी नै तरसां। ऊपर सू अे बूहा आवै हरेक महीणै'ओ बिल ल्यो माटर सपलाई रो।"

उणनै पाछो सिरकणै में ही भलो लखायो। बिना बिल बांट्यां ही वो पाछो मुड़ग्यो। उणनै मालम है अे लुगायां जितो नी करै वितो ई थोड़ो है। किणी आवतै-जावतै नै पकड़ा दैवैला इण गळी रा बिल।

दो-तीन गली दूर आ जायां पछै भी उणनै लखावतो रैयो, जाणै लुगाया उणरो तारो करती आय रैयी है। बदहाल-सो वो अेक तिराहे माथै आय'र उभो हुयग्यो। सांसां नै ठीक करतो वो सोचण लागग्यो। खुद रै सुखी जीवण री इछा नै इण भांत तो वो-कदैई पूरी नी कर सकैला। नौकरी लागता ई उण सोच्यो हो-आछो ई तो है छह महीणा टेम्परेरी रैयां पछै वो खुद ही पक्को हुय जावैला। तद बरस दो बरस में पदोन्नति कर क्लर्क बण जावैला। फेरुं वो सुखी हुयसी। उणरो नान्हो-सो परिवार है—क्लर्की जीवण सूं समूचै परिवार रो पेट पोख लैवैला। पण लागै आ छह महीणा री लोह री भीत वो किण भांत ही नी डाक पावैला। इण तरै सुमिता नै समझाया करतो हो—"सुमिता, तू मन लगाय'र क्यूं कोनी

पढ़ें—पढाई में घरवाळां रा पईसा लागै है नीं।"

उणरै दानैपणै माथै सुमिता [मुळकनै कैंवती— "पढणै री दरकार तो तनै है, तनै नौकरी करणी है, म्हा छोरियां रो काओ...।"

तद वो गरबीज जावतो आपरै हुस्यार हुवणै माथै अर ताणा-बेज करतो कै वो घणो पढैला अर घणी आछी नौकरी करैला।

वो दानैपणै सू कैंवतो—"हा भई तनै भणाई करनै करणो ही कांओ है...म्हानै पढणो है अर मैं पढ रैयो हू।" घर री हालत जाणतां थकां भी वो किया सोच लैंवतो कै वो घणो पढैला।

आठवीं पास करनै वो हाईस्कूल में आयग्यो। सुमिता आठवीं पछै उणनै आज ही मिली। तीन बरसा पछै उणनै सामी पाय'र वो हड़बड़ाय सो गयो।

जिण सुमिता नैं वो घडल्लै सू डाट दिया करतो। उण सू आज निजरां नीं मिला सक्यो। थिला रै ढिगलै माय सूं दो पाना निकाळ'र उणनै झला दिन्हा अर जावण लागग्यो। ओजूं वो दो पग ही नीं चाल पायो कै उणनै सुणीज्यो—"तू आलोक ही है नी..."

"हां।" इण सू बेसी वो की नी कैय पायो। उणरी वा 'हां' घणी मार खायां पछै सीकारणै जैड़ी ही। हैली सू हेटै उतरतां उणरी पीड्यां काप रैयी ही। अैड़ी गरबीली मुळक नैं वो देख कियां सक्यो। कांओ काओ नी कैय रैयी ही वा मुळक—"लगन सू पढाई करनै घणी आछी अफसरी पाई...घणो घमड हो नी भणाई माथै ?...।

पार्क माय बैठ्यो वो दूब नैं दोवा हाथा सू खैंच रैयो हो। "हा हां घणो घमड हो...ओजू काओ मरग्यो घमड......नौकरी सारै घमड थोडी बेच सूं।"

अेक धिढ निस्चै धारनै वो ऑफिस कानी चाल पड़्यो ऑफिस रै दरुजै मायै ही दूलीचद सामो मिलग्यो। उण सू टकरावता ई वो सदा दाई चहक्यो— "ओ हो वी. डी. ओ. आज घणो राजी निजर आय रैयो है। पण दोस्त की नूंवी खबर रो मी ठा: है ?"

"कैंडी खबर ?" उणरै जाणन मांय किणी तरै री उतावळ नी ही। "घणी कोझी खबर है वी. डी. ओ., पण तूं फिकर मत करजै, मैं ए० ई०

सूं कय दूं सा...तू भी अेकर उणरै घर जाय'र पंग चंपी कर आइज्यो... चीफ साब रो सख्त आदेस है कै नूंवा मस्टर रोल कर्मचारियां री ठौड़ इन्टरव्यू सूं भर्ती की जावैला, पण तू चिंत्या ना कर, थारै गंभीर सुभाव रै कारण ए० ई० था सूं प्रभावित है, बस! थोड़ी सी पगचंपी री जरूत है...।" बात खतम करतां दूलीचंद आंख मारी।

—"ए० ई० री पगचंपी करैला म्हारी जूती।" उण सिर झटक'र कियो तो दूलीचंद अणबोल रैयग्यो। वो फुसफुसायो—"बी०डी०ओ०..."

"हां...हां..." वो मुळक्यो।

पांन लागग्यो

"गोपाळजी नै पांन लड़ग्यो। वै तीन दिनां सू खेत मांय हा। उठै कोई अेरू लडग्यो। गाव रै आधीटै आवता ई बेहोस हुयग्या।" घर मांय आवतां ई घरवाळी सबसू पैली अे समचार बताया। वा हाथ रो काम सळटा रैयी ही।

मैं हाथ-मुंडो धोयर चौके मे बैठण जाय रैयो हो। उणरी आ बात सुण'र भूख न्हासगी। "पछै, पछै कांई करयो? अबै गाव तो लियाया नी? हुणै कियां है वो?" म्हारी इण उतावळ सू जाणै उणरै कोई फरक नी पड़यो। वा आपरी उणी सुस्त रफ्तार सूं काम करया जावै ही।

झाड़ू, जिण सू वा चौको साफ कर रैयी ही, हाथ माय लियां-लियां ही आंटो मुंडो कर'र कैयो—"अबार थान माथै है...।" थान सू उणरो मतळब गोगाजी रै थान सू हो। अैरू लड़योड़ै रो पैलीपोत उपचार अठै ई हुवतो आयो है।

मैं तुरत कपडा पैर'र थान माथै पूगण नै त्यार हुयग्यो। जावता-जावता घरवाळी टोकी—"जीम तो जावो।" उणरी इण बात माथै झाल तो घणी आई, पण मैं फगत अकरी मीट सू जोवतो बारै निकळग्यो।

गोपाळ म्हारो बाळगोठियो रैयो है, अबार लारला चुणावां में म्हारो उण सू मनमुटाव हुयग्यो। चुणाव सू पैली वो म्हारै कनै राय लेवण नै आयो हो कै आपां नै किण रो 'सपोर्ट' करणो चाहीजै। मैं उणनै साफ-साफ कैय दिन्हो हो—"जात लारै नी अड़यड़णो है...तू तो जाणै,

आपांरै छेतर में थारी जात वाळां री धणेर है। अठै जको भी आवैला, फगत जात रै नाव मू वोट मागण नै आवैला। गांव री दिक्कतां था सू लुक्योड़ी कोनी। कोई वांरो निपटारो करै, तो आपा नै कांओ दोराई है? किणी भी जात रो क्यू नी हुवै, आपा घणो करालां उणरो सपोर्ट अर खूब दिरावाला भोट।"

पण वो भोरीजग्यो। लारलो एम० एल० ए० जको सत्तारूढ़ पार्टी रो हुवण रै सागै-सागै उणरी ही जात रो है, इण दफै फेरूं चुणाव रै मौकै गांव में आयो। एम० एल० ए० रै प्रभामंडल नैं कुण तोड़ै। घणो ई उण गाव रै विकास सारू कोई काम नी कियो। पूरा पाच साल माय थावै लोग उणरा दरशण नी किया हुवै...।

एम० एल० ए० चुणाव रै ठीक पाच दिन पैली गाव वाळां नै की स्यानदार पैंतरा दिखाया, जिणरी फेंट में आखो गाव आयग्यो। इण सड़क-बीजळी विहूण गाव माय, जिया-किया जिन्नड़ी ढोवण वाळा खातर अे दोवू ई चीजा किणी समस्या रो नाव नीं है। बिना बीजळी अर सड़क रै इण गांव रा टाबर जुवान अर जुवान बूढा हुवता रैया है। गाव री प्राइमरी ताईस्कूल में भणीज्यां पछै,पांच कोस अळगै बडै गाव में जठै दसवी ताई री सकूल है, मांय पढ़ण जावण वाळा की स्कूलिया जरूर कदै-कदै नाक मैंळो-मैंळो करै कै आपां रै अठै भी ऊंची स्कूल, सड़क अर बीजळी हुवणी चाहीजै, पण बूढा-अधबूढा लोगां री समस्या सड़क अर बीजळी कदैई कोनी रैयी। वारै खातर तो इण गांव री खास समस्या पाणी है। जिणनैं पीय'र मिनख, डांगरा अर जिनावर जीवता रैय सकै।

गाव रै टाडै मांय पीपळ-नीम रै जोरदार घेर विचाळै गांव रो कुवो है। कुवो अंडो स्यानदार, जिणरै दोवू कानी इता मोटा-मोटा हौद है कै समूचा छलीज जावै, तो गांव वाळा बीस दिन तांई ठाठ सूं पाणी पीवो। एम० एल० ए० आं ही हौदा माथै ऊभ'र तो गाव वाळां नैं कैयो हो— "अबै अे हौद कदै ई खाली कोनी रैवै। इणा मांय आठ पौर चौईस घड़ी मीठो पाणी छल्योडो रैसी...अबै कोई ढोर-डांगरो नी बिरहाइजैला, नीं ई स्यारी-आंगो करणो पड़ैला।"

कूवो बांवतो रामधन मुंडो फाड़्यां एम० एल० ए० कानी देखतो

रैयग्यो। उणरै मुडै माथै गुलाल-सी बिखरगी...उणनै तो बस, अेक ई बात चोखी लागी। 'स्यारी-आंगो नीं निकाळनो पड़ैला।' जीवो एम० एल० ए० साव, थांरो वस वधै। अठै बापू तीजै दिन बोदा खल्ला पैराय लाव-चडस पकडा देवै, जा आंगो निकाळ आय...।

एम० एल० ए० चाल'र चाठ ताई आयो। चाठ माय सूं पाणी हथाळी मे लैय'र गाव वाळा कानी घूमग्यो।—"ओ पाणी है ? (गांव वाळा री तो सैंकड्ं पीढयां इणनै पाणी मान'र ही पीवती आई है।) हु...ह! जिणनै अणजाण्यै मे पशु पीय लेवै, तो मर जावै, तिरसो आदमी पीयलै तो विरहा जावै...कान फाडना पडै !"

नीचै ऊभी पणिहारियां घूघटै री कोर सू अेकटक देख्यां जावै ही, एम० एल० ए० साव नै। एम० एल० ए० साव खातर तो अे पणिहारियां भी मोट ही। वै वां कानी घूमग्या। हौद सूं नीचो लुळनै कैवण लागा—"अबै आ बैन-बेट्या नै इण खारै पाणी खातर दोजख भुगतणै री जरुत कोनी रैवैला अर नी ही घर लैजाय'र इण खारै वाकळ मांय मीठो पाणी मिलाणै री दरकार रैवैला। बस, घरै बैठ्यां मीठो पाणी मिलैला। बैन-बेट्या नै आखै दिन अठै तावड़ै में तपणै री कोई दरकार नी पड़ैला।"

नीचै ऊभी लुगायां री आंख्या मांय सुख रा डोरा तिरण लाग्या, बानै लखाय रैयो हो जाणै बारै सिर माथै मूण नी है...आ भी कोई जिदगाणी है, आखो दिन अठै सू घड़ा ढोवती रैवो; फैर घर री कुंड मांय मूं पालर निकाळ'र भिलावो इण माय, सैर मांय तो कोई लुगाई पाणी लैवण नी जावै।

कुवै री मारण मांय उभो ऊंट भी एम० एल०'ए० नै निरख रैयो हो, वो आराम सू चीढ रैयो हो, उण अणबोल ओठारु नै भी स्यात एम० एल ए० रै खिडायै सुख री सुगंध आयगी ही, उणरो धणी उणनै चक्कर घाण करण री ठौड़ एम० एल० ए० कानी बाको फाडयां उभो हो। एम० एल० ए० गावबाळा नै समझा रैयो हो—"पाणी री समस्या तो हल हुई ही समझो, पांच कोस अळगै काळवास गांव मे ट्यूबवेल लागग्यो। खूब पाणी निकळ्यो है। उठै सू पाइप नैण जोड़'र आ हौदां नै भर देवांला। की पाइप मैं (जोर देय'र) सरकार सू मिकराया है, जका

स्यात आजकालै मे ही आवरै अठै पूग जावैला। बस, महीणैं भर में इण गांव में विरहाणै री समस्या हल हुय जावैला। अब रैंरी बीजळी री समस्या...वा भी अळगी हुय जावैला। पाइपां रै मार्गै मैं की खभा भी सिकराया है।"

साचमाच में एम० एल० ए० साव रै पधार्‌या रै ठीक पाच घटा वाद ही कच्चै मे चालण वाळो ट्रक खभा अर पाइप लैय'र पूगग्यो। सैर मांय तो ट्रक खाली करवावण खातर मजूर मोधणा पडै, पण अठै तो आखो गाव ही मजूर हुयग्यो। किणी उजराई कोनी मांगी। सब गोपाळ नै गरव सू देखै हा। वियां अबै गोपाळ एम० एल० ए० साब रो सगो भी हुयग्यो। गोपाळ री डावड़की रो रिस्तो एम० एल० ए० आपरै अेकलड़ै माणजै सू तै करग्या। गोपाळ तद सू ई वेंडीज्मोडो-सो आखै गाव में एम०एल०ए० रो प्रचार करतो घूम रैयो है। पूरी विरादरी माय थोडी चलती वाळो (राज में) अर भण्यो-गुण्यो गोपाळ ही है। एकाध नै छोड'र विरादरी मे आंकस है गोपाळ रो।

ट्रक कुवै रै टाईं माय ही खाली हुयो। आखो गांव जाणै पाइप अर खंभा रा दरसण करण नै उमड़ पड्यो। ट्रक खाली हुय'र जाय चुक्यो हो। बूढा-ठाडा अर टावरां रै सागै बूढी लुगायां भी पाइपा नै हाथ लगाय-लगाय देख रैयी ही। अेक छोकरै खाली घड़ै जियां विचली आंगळी सू पाइप वजायो अर नाड़ हलाय'र कैयो—"है तो पक्को।"

गोपाळ सगळा नै गरव सू देख रैयो हो। उणरी आंख्या में सतरंगा सुपना आ-जा रैया हा। वो मन ही मन सोच रैयो हो"'अबै ओ गांव चमन हुय जावैला। सगो है, की तो काण राखैं ई ला'''वो की और भी सोचतो, पण उणरी तिन्द्रा अेक छोकरै चोळो खैंच'र भाग दी, "गोपाळ भईसा, मैं तो अेक खभो म्हारै बारणै आगै लगवाऊंला। पछै रात नै ठिया दड़ी रमण में की अवखाई नी आवैला। खूब च्यानणो हुयसी।" उण हाथ री सीध सू वा ठौड भी बतादी, जठै खंभो रोपाणो हो। गोपाळ मुळक'र हामळ भरी—"हा, हा, उठै ही रोपावाला।"

छोकरै नै जाणै सूरज-चाद लाधग्या। वो घरवाळा नै ओ समचार देवण नै भाजग्यो कै उण गोपाळ भईसा सू घर आगै खंभो रोपावणो मंजूर

करवा लिन्हो है।

एम० एल० ए० फेरूं एम० एल० ए० बणग्यो। जीत रै पछै गोपाळ गांव कानी सू जोरदार माळा पैरावण री बात कैयी, तो म्हा सू रैयीज्यो कोनी। भायलाचारी रै नातै मैं उण नै साफ-साफ मना कर दिन्हो चंदो देवण सू, अर समझायो—"गोपाळ, टाडै माय सीमंट रा च्यार पाइप न्खावण सू आपां मीठो पाणी पीवण नीं लागग्या। काळवासियै सू अठै तांई पाणी ल्यावण खातर अैड़ा ट्रकां ई पाइप चाहीजै। भूखै भजन न होई गोपाला,. भूखो तो धाप्या ई पतीजै।" गोपाळ चिडग्यौ। पण मैं म्हारी बात माथै थिर रैयो। मैं माळा पैरावण खातर कोई चंदो कोनी दिन्हो अर तद सूं ही वो म्हा सूं कट्यो-कट्यो रैवण लाग्यो।

गोपाळ तुरत-फुरत आपरी मैम वेच'र तीन हजार अर बाकी गाव वाळां सू चदो कर'र अेम० एल० ए० नै पांच हजार रिपिया री माळा घाल'र जोरदार सुवागत कर्यो। पाडोसी गाव रो सिरपंच भी अैडो सुवागत देख'र दंग रैयग्यो। सिरपंच सूं विरोधी इण गांववाळा मन ही मन इण वार गोपाळ नै सिरपंच वणावण री तेवड़ली।

गाव वाळा नै चुणाव री उडीकना मेह सू वती रैवै।

□

थान रै नैड़े घणी भीड़ भैळी हुयगी। गोपाळ रै डील माथै सोजन सी आयगी। पग में जठै अेरु लड़्यो हो—सूजनै भरतग हुयग्यो। पग माथै नीम री पत्या वाध्योड़ी ही। आधी बेहोसी मे घी पायीज रैयो हो। थान रो पुजारी छाणा बाळ'र उण माथै घी होम रैयो हो। खीरा माथै घी पड़तां ही जोर सू लपट उठी—सगळा अेकै सागै कैयो, "गोगापीर जोत लैय लीवी।" सगळा सरधा सू हाथ जोड़'र कैयो—"स्याय करज्यो गोगा धणी...।" तासा बजावण वाळां नै जाणै जोत रै सागै ही छिन चढगी। वै ढोल अर थाळी और जोर सू पीटण लागा। पुजारी रो भाई, जिण माथै गोगाजी री छियां आवै, जोर जोर सू साकळा री माथै में खावतो नाचण लाग्यो। पण गोपाळ री बेहोसी में कोई फरक नी आयो।

मैं अणवस सो उभो हो। वेहोसी नैं देखता म्हारी चित्या बधती जावै ही। बार-बार अेक बात जबान माथै आवती जावै ही—इणनैं तुरंत सैं'र चयू नी लैयग्या, उठै स्यात सूई लागती, तो अबार ताई होस में आय जावतो। सर्प काट्यै नैं मूर्छा तो आवणी ही नी चाहीजै। मैं अठी-उठी देख'र सेवा करण वाळा माय सूं अेक नैं पूछ्यो—"इण नैं घी कितो पाय दिन्हो ?"

"दो किलो..."

"उल्टी किती हुई ?"

"अेक भी नीं।"

"अेक भी नी ?...फेर इणनैं क्यूं मारण माथै उतारो हो ? वेगा सूं वेगा सैं'र ले चालो। उठै अस्पताळ मे भर्ती करवाला।"

म्हारी बात सू पुजारी समेत सगळा चिड़ग्या—"देख कोनी रैया... चाबै जोत लैयली है।" मैं वानैं धीरज सू समझाया, तो हताश लोग त्यार हुयग्या। अळगै खड़घो अेक आदमी दूजोड़ै सू कैय तो होळै ही रैयो हो... "सैंर काओी रैवण लागग्यो, अपणैं आपनैं औतार ही समझण लागग्यो..." पण मनैं सुणीजगी। फैरू ई मैं उणरी बात रो कोई बुरो कोनी मान्यो।

म्हारै सागै छकड़ै मे गोपाळ री सेवा-चाकरी करण खातर तीन आदमी भळै त्यार हुयग्या। रस्तै में पावण खातर घी रो पीपो सागै लैय लिन्हो।

रस्तै मे रैय रैय'र अेक बात म्हारै माथै में चक्कर काट रैयी ही। ओ तीन दिना सू खेत मे ही हो। इण उन्हाळै री टैंम खेत में कर कांओी रैयो हो ?.ओ तो भर विरखा में ही भौत कम खेत जावतो रैयो है। रैयो नी गयो तो छकड़ै में बैठ्यै रुघाराम सू बूझ बैठ्यो—"रुघाराम ओ उन्हाळै मे खेत काओी त्यावण नैं गयो हो ?" उण छूटता ई उथळो दिन्हो, जाणै जवाब घड़यां ही बैठो हो—"गांव वाळां सू मुंडो लुकोवण नैं। गैरन वाळै खातर नेताई सौरी कोनी हुवै।" मैं नी समझणै रो भाव दरसायो तो वो कानाफूसी रै अदाज मैं बोल्यो—"बच्चू, तू हफ्तो भर सैंर मे रैय'र अेक दिन छुट्टी कारण नैं गाव आवै। तनैं कांओी ठा: अठै कांओी संकट है ?" सवालिया अंदाज में उणरी भवा तण्योड़ी रैयी—"ठा: है तनैं गांव

री समस्यावां रो ?"

"हां है भाई, इण खातर तो हफ्तै में एक दिन खातर ही सही पण अठै रैवण नैं जरूर आवू। मनैं ओ भी ठाः है, पच्चीस साल पैली अठै साढे तीन सौ घर हा अर अबै पूरा तीन सौ। वै पच्चास घर इण समस्यावां सू डरं'र भाज लिया।"

रुघाराम गळगळो-हुयर्नै कैयो—"चोखो रैयो, भाज लिया। रोजीना धोखो तो नी खावणो पड़ैयो विचारा नैं...अबै ओ गोपाल है तो कांई। इण नैं भी एम० एल० ए० कांई कम धोखा दिया...रोजीना लोग पाइप-खंभा वजा-वजा'र विचारैं नैं तंग करण लाग्या। जद भी सुणतो कै फलाणी तारीख नैं एम० एल० ए० जैपर सू सैं'र आवैला, तो वो पग जूती घाल्या बिना गाव री बीजळी पाणी रा हाल-चाल बूझण भाजतो। लारलै दिनां, सुणा हां, एम० एल० ए० इणनैं घट्टो उतर दैय दिन्हो कै काम काम रै तरीकै सू हुवैला। तू वेगो-वेगो अठै मत आया कर। राज रा काम राज रै तरीका सू हुवैला...एम०एल०ए० आपरैं भाणजै री सगाई भी बीजी ठौड कर दिन्ही। इण सूं तो ओ एकदम तूटग्यो। उणनैं एम० एल० ए० सू अंडै धोखै री आस कोनी ही। ओ तो पूजतो..."

रुघाराम वात पूरी करतो, उण सू पैली ही गोवाळ नैं एक जोरदार उल्टी हुई। लीली...लीली...

"पाणी..." उल्टी हुयां उणनैं थोडो चेतो सो हुयो। पाणी री मांग सागै ही इण नैं धी पायो।

सैंर पुगण में ओजू अेक कोस री छैंती बाकी पडी ही। उल्टी हुया रै बावजूद उण माथैं वेहोसी घिरती जावै ही। रुघाराम उणनैं गोदी में लैय'र होम में ल्यावण रा जतन कर रैयो हो।

मैं सोचूं इणनैं साधारण साप तो नी लड़यो। घणो जैरीलो साप लडयो है। ठाः नी ओ सैंर में भी बचैला कै नी।

थांभ

ढोल री गड़ागड़ रै समचै वांरी छाती माथै जाणै धमीड पड़ रैया हा, अबै लोग रावळै सूं निकळ रैया हुवैला। जिण नाजोगी बेमारी नै आखी उमर भांडी, आज वा ही वैरण वणनै आपरो वळ निकाल रैयी है। वामं‌ रा चपड़कां मूं जिण डील रो की कोनी विगड़्यो, उणनै इण दम बेदम कर नाख्यो। वा तो अैड़ी सपनै मांय ई नी सोची ही कै कदैई इण भात मांची ई झालनो पडैला। 'अक्खू-अक्खू' ई करणो पड़ैला। हताई मे चिलम पीवता लोग जद धांसी मे अळूझता तो वानै घणो रस आवतो—"और पीवो इण मा राड नै, आखो गुण इण में ही है, अर जे पीवो तो अक्खूं-अक्खूं करण री कै जरूत है, आंख्यां थारी धांसतां री बारै आय रैयी है पण फेरूं ई इण रैं काठा चिमट रैया हो।" पीवण वाळां आपरी आख्या पूंछतो वांरी इण बात माथै मुळकनै रैयजावतो। वै कोई नसो नी करता इण सूं कोई तकरार भी नीं करतो। कोई हिम्मत करनै कैंयतो तो ई इतो-'काओ करां बिसन पड़ग्यो लालूजी, पड़तो तो पड़ग्यो अबै छूटणो दुमग्यो ओखो।' वै लज-खाणो पड़्याड़ै मिनख नै बुचकारता—"लाडेसर, छूटै कोनी ओ किसो अम्मल है, छोडण नै लोग उणनै ई छोडै ई है, हरेक चीज मन मे घिरणा कर्‌या सूं छूटै...मन नै धिठ करनै वगाय दो कै इण नै पीवां तो गाय रो खून ही पीवां।"

पण पीवण वाळा वांरी अैड़ी बातां री कद गिनरथ करता। वै काना ई नी ढोरता। इती वांनै भी कांओ पड़ी ही जको नसो छोडावण खातर

खुदरी चामड़ी बाढ़ै। कोई छोड़ै तो चोग्गो नीं छोड़ै तो जाय'र थैड में पड़ो। वांनै तो लागी जिसी मारग दी। अबै आगलां रै पोसावतो हुवै ज्यूं करो। घणो कँवण रो जमानो कोनी...क्यूं कै कोई किणरी कैय मानै तो आथ कोनी-करै सगळा आपरी जची-जची है...पछै कँणै में कांई सार है...?

वा आपरी जिंदगी में लोगा नैं कांई काई नीं कँयो। पण जिण आदमी आखी जिंदगाणी में किणी भात रो नसो-पतो नीं कियो वो इण भात दमैं रो सिकार हुय जावैला आ तो वा कदैई ई नीं सोची ही। पछैती में जावना इण भात माचो झालण सूं तो पांच साल पैली रामजी उठा लैवता तो किसी कोर खाडी हुवै ही। आ तो उण जैड़ै आदमी खातर रोज मरणै जैडी वात हुयगी। समझ पकड्या पछै स्यात ईं कोई होळी रैयी हुवैला जद रावळै सूं निकळतो ढोल अेकलो ई गड़गड़ावतो बिना वांनै होळी मगळावण नैं वूहो जावै।

ढोल री अेक अेक गड़गडाट वांरै माथै में वाज रैयी ही। लोग होळी घोरियैं पूगग्या हुयसी। पूजा पछै होळी मंगळावणी सरू कर दी हुसी। पण थाम कुण निकाळ्यो हुवैला। समझ पकड़ंया सूं लैय'र आरली होळी ताईं तो थाम वैं ई निकाळता रैया है।

वै ओचक नै बैठा हुवण नैं खस्या पण बैठा हुवतांई घांसी रो अैडो अळूझो आयो के तकियै माथै अधडांखा हुयनै खेंखार थूकण लागा। दम सूं उपड़ रैयी ही पण चितारैं सूं होळी रो थाभ हेठै नीं उतर रैयो हो। आज पहली बार वै होळी मगळावण नै नीं जाय सक्या। अैडा काम खातर वांनै कदैई तेडां री जरूत कोनी रैयी। मरणै-परण्यै का होळी-दिवाळी हाजर नीं हुवै वो मिनख ई किसो?

वास में कोई चल जावै तो दाग वैळा मुसाणा में लामूजी बिना, काम ई नीं चालतो। लास नैं उथळावणो का लास माथै खेंजड़ी रा मोटा-मोटा ठूंठ चिणना कोई हैंसी-खेल रो काम नीं हुवै पण वांरै खातर तो अैड़ा काम हैंसी-खेल रा ई है। किणरी ई काम निकळ जावै तो पछै वांरो कांई पसीजै है। पण, आज बळता मडभोलिया सूं थाभ वांरै कुण निकाळसी...

वै हेलो देवणो चावता हा पण इण उपडती सांस में सावळ हेलो ई नीं

देयीजे । घरवाळा सगळा होळी रो जीमण जीमता हुयसी । भरजोर हेलो देवण री कोसिस अेकर भळै करी—"हरि ऽऽ ऽऽ।"

"आयो बाबोजी......" कैंवतो हरि रसोई में सू जीमतो अध-विचाळै ई उठनै आयो। बूझ्यो—"कांई लाऊं ?"

"थांभ..." आगै दम बोलण नीं दियो तो वै सांस टिकावता बोला रैयग्या। हरि रै की समझ में नी आयो कै वै कै'य कांई रैया है।

"पाणी लाऊं बाबोजी ?" हरि बूझ्यो।

वां नस हलाय'र ना रा लटको कर्‌यो। कई ताळ री हबक्यां पछै दम जम्यो तो मंदी आवाज में कैयो—"बेटा ओ ढोल क्यांरो बाजै है ?"

"होळी मंगळावण नै गया है बाबोजी..."

"हम्मं...हम्मं बुलावो कोनी आयो कांई...थांभ कुण निकाळसी... तू जावतो बेटा,...।"

"ओ हो ! बाबोजी, कठै चित्या हुई है...थे सोवो, हाकै ई निकाळ लैसी कोई न कोई।" मुळकतो हरि वांरा खांधा पकड़नै सावळ सुवाण दिया।

गैलो है हरि, मनै चित्या नी हुवैला तो किणनै हुवैला, ओ कोई हंसी-ठ्टा रो काम है जको हर कोई कर लेसी। लाय मांय सूं आदमी निकाळण सूं बेसी दोरो काम है। जिण नै उजस हुवै वो ई कर सकै। रजाकर साव नूवा आदमी हुवै अर थांभ नहीं निकळै तो ममूळै बास खातर कैंण-कथीण जैड़ी बात हुवै। सुगन तो माड़ा हुवै ई।...बख, बख री बांता हुवै। वा आपरो जमारो ई तो अैडी बातां मे गमायो है।

वांनै चेतै आवै, काल्है री सी बात है वै कछियो पैर्‌यां घूमता। तीन कोस दूर खेत सू घरै दौड़ता-दौड़ता आवता। आवता ई रसोई मांय बड़नो अर दावै ज्यूं ई खाय पीयनै मस्त रैवणो। उण दिन री बात नै आज किता साल हुयग्या हुसी...साठ सू तो बेसी ही हुया हुसी...उण दिन वै खेत सूं घरै आया। भूख घणी अकरी लाग्योड़ी ही पण रसोई में हेर्‌यां सूं रोटी कै खीच कीं नी मिल्यो। चूल्है री वैवणी में मसोड़ दियोड़ी फगत दही री जमावणी पड़ी। वां नै और की नीं सूझ्यो तो मुंडै फाड़ नै उणनै ई गटागट पीयग्या। इतै मां आयगी। घणा रोळा कर्‌या—"नागड़ै खादड़ा, इयां

भूखां मरतै रा किसा पिराण पड़ै हा...रोटी कर देवतो...अबै सारला मगळा जणा हाथ में रोटी लेय'र ई खाया मलाई, लगावण तो सगळो तू चेपग्यो।" इण पर वां मुंडो पलकारतां कैयो हो—"तो कोंअी हुयो मा, रोटी ऊपर सू खाय ले सू, लगावण मे मिल ज्यासी..." इतो सुणताई मा चीपियो उठायो हो अर वो रसोई स बारै मलगा देयग्यो।

अैडी खुराक ही जणै ई वै अेकला दावे जको सेजड़ै के रोहिड़ो वाढनै ऊंट माथै घाल घरै लेय आवता। ढाच माथै भाठो ढोयनै तो आखी गवाडी कर लिन्ही। हालाकि छोटकियै रो मारो रैवतो पण तो ई वांरी धर्योड़ी टोळा हालताई किण सू ई नी हालै।

वै भी तो कैडा दिन हा। आखै खेत नै वै दोवू भाई लाट लेता। दुनिया सू वैसी बावता इण वास्तै धान भी वेसी ही हुवतो। उण दिन, आहा...उण दिन तो भामी मे जवरी ही करी, आज चेतै आया ई हंसी आवै। उण साल मोठ अणुता ई हुया हा। खेत मे लाणिया ई लाणिया चिलकै हा, पण लाणिया नै खळै मे भैळा करण री दिक्कत ही। जूल भर भर नै माथै सू नाखण नाय सू तो किणी रो गाडी-नारो मांग लियो जावै तो वेगा भैळा हुवै अर दुख ई कम पावणो पड़ै। आ सोच'र वा छोटकियै नै कैयो—"जा मामी रै खेत सूं गाडी-नारो लेय आव।" मामी रो खेत वांरै चिपोचिप ई हो। छोटकियो थोड़ी देर में पाछो आयग्यो। कैयो—"मामी ना करदी, कैवै वळध रो पेट चालै है...।"

"किमो पेट चालै, आपरा भैळा करै हा जणा तो की कोनी चालै हो खैर नटण रा हजार रस्ता हुवै...।" वा कैयो—"पण देखस्यां, अबै तो भैळा गाडी माथै ई कराला..."

"गाडी नै वे नट ईग्या जणै किसा धिगाणै कराला...और सरै मे कोई गाडी कोनी..."

"तू देखतो रै ई।" कैयर दोवू भाई दिन भर दूजै विलै लागग्या। रात नै सोपो पड़्या वा सगळी योजना छोटकियै नै बता दी। दोवू भाई सीव-सीव गया। मामी रै डेरै माथै साण पाण सोपो पड़ग्यो हो। गाडी डेरै सू की पसवाडै धागड़्या कर्योडी उभी ही। दोवां कानी खाधा लगा-यनै दोवू भाई उणनै ऊंचनै खेत में लेय आया। आखी रात मे सगळा

मोट मेला कर लिन्हा। भांभरकं जावता छोटकियं कैयो—"भाया अवै पूगा आवा गाडी नै ?"

"ऊं हूं..." वां मुळकना नाट कर दी। मीवा जोड़ अडाव रै मांय अेक दूफाडियो रोहिड़ो हो। गाडी नै उण दूफाडियै में टाग आया। दिनुगै मामी हाथ ममळती आई—"डावड़ा लादू, म्हांरी तो गाडी नै कांओ ठाः कुण लेयग्यो। लेय जावण रा चिल्ला ई कोनी मंडियोडा। ठाः नी कुण उखण नै लेयग्यो...अवै काओ करूं...।"

"मामीजी, इण मू तो आछो हो कालै म्हानै देय देवती...पण अवै तो जोवो मामी, कठै ई उडणी जहाज दाई पाख्यां तो नी आयगी हुवै...।" केवता वानै हेंसी आयगी तो मामी नै टोमो पड़ग्यो। "डावड़ा कोई मस-खरी करो हो तो ठा है जणा मावळ-मावळ ई बता देवो..."

"मावळ बतायां कांओ देवाला...?"

"धपा'र लापसी जीमा दे सू।"

"अेक बात है मामी थारी गाड़ी नै तो ओळखू कोनी, पण अबार कनलै अडाव रै दोफाडियै रोहिड़ै माथै बैठी एक गाडी जरूर दीठी... फागण चेत मे कीड यां पाखीजै ज्यूं कठै ई गाडी ई पांखीज नी गी है, वेगा सम्हाळो पाख्यां आयोड़ै जिनावर रो कोओ अवार उण रोहिड़ै माथै है थोड़ी ताळ नै बीजी ठौड़ बूही जावै।"

"नागडै खाधां, इणनै हेठै तो उतारो। रोहिड़ै हेठै धकारिया देवती मामी वरडावै ही। मामी रा रोळा सू कनलै-कनलै खेत रा मिनख भी भेळा हुयग्या। सगळा जाणै हा करतूत किणरी है। सगळा ई उतारण रो कैयो तो वां मामी मू कैयो—"किया मामी बळध रो पेट चालणो टळ्यो कै नी...?"

कंडी कंड़ी कोगत करण रा दिन हा। दिन जावता ठाः ई नी लागै। दोवूं मायां रो ब्याव ई हुयो। धणियाणी रै माता निकळी अर मरगी। उणरो ब्याव हुयां पछै धणियाणी रै माता निकळी। उण साल घणा छोरा-छोरी माता सू मरग्या हा। दूसर ब्याव रो मतो ई नी कर्यो।

वां आपरी जिंदगी में कदै ई लारै मुड़नै नी देख्यो। अवखै सूं अवखो काम वारै खातर साव मोरो हुवतो। सुभ-असुभ हरेक मौकै गांव में वांरी

मौजूदगी तो हुवती । वै तो हरेक सूं इयां ई कैया करता, "मैं अेक दिन अचाणचकै ई जावूला...सुड़-सुड नै मरणो, खुरड़ा खोतरड़नो, आपांरै कोनी पोसावै..." पण, लागै कैयी वाता अणपोसावती भी करणी पडै, भुगतणी पडै ।

वा अेकर मळै हरि नैं हेलो दैयनै बुलायो । बूझ्यो—"आपा रै घर सू गयो है काओी कोई होळी मंगळावण नैं ?"

"पप्पूडो गयो है ।"

"पप्पू सू काओी हुसी...पप्पू तो टाबर है रे...तू जावतो बेटा..."

"थे आराम करो-बाबोजी...।"

"आराम ही तो करू हूं पण,...।" वारी गिरगिराटी मिट नी रैयी ही । होळी-गौर्‌या रो ढोल सुणतां ई वै करड़ धज्ज होयनै घर सूं निकळ जावै । गौर परणावण नैं जावता तो वारी करड़ धजाई लोग देखता ई रैय जावै । नूवो रंगायोड़ो केसरिया साफो । धोळो धक चोळो भीणी धोती-जको फगत इणीज दिन पैरीजै । खांधै तरवार लटकायोड़ी नैं हाथ मांय सैल । देखै जको ई मुळकै—सितर सू बैसी आयग्या पण ठरको हाल वो ई है ।

हरि रसोई मे जायनै थाभ री बात कैयी तो सगळा हंस पड़्या—"बाबोजी रै आछी चिंत्या लागी नी...थांभरी...अबै थांभ घणा ई तिकाळ्या...आगै काढ्या...।"

थोडी ताळ में पप्पू बारै सू आयग्यो । हरि आवता ई उणनैं बाबोजी कनै भेज दियो ।

"कुण पप्पू ?..." वा बूझ्यो ।

"हा दादोजी...पप्पू नाड़ नीची कर्‌यां हुंकारो दियो ।

"कठै गयो हो बेटा ?"

"होळी धोरियै ।"

"होळी मंगळादी बेटा ?"

"हां दादोजी !"

"भळ कठीनै गई ही बेटा ?"

"आपारै गेत कानी...।"

"सेत बाया वेटा, जमानो हुवैला।" कैवता वै इता अेकै सागै सवाल पूछणै सू हांफरड़ै चढ़ग्या। पप्पू रो हाथ वै आपरै हाथ मांय लैय राख्यो हो। सांस टिकावता मळै बूझ्यो—"आज थांम कुण निकाळयो ?"

"थांभ...?" कैवतो पप्पू खिलखिलाय नै हंस पड़्यो..."दादोजी, आज जोरदार मजो हुयो...होळी मिलगाया पछै केई ताळ हुयां लोग खाथा-खाथा थांरो नांव लेवता रैया। लाधूजी कठै, अरे लाधू वडो कठै... जणा मैं कैयो दादोजी तो बेमार है नी...वै लोग पछै रोळा करण लागा...थांभ निकाळो भाई थाम...दो तीन मोट्यार बळता भड़भोलियां में कूदा पण हांथ मुंडो बळता देख पाछा सिरक आया। छैकड लाठ्या सू भड़भोलिया खिडावतां खिडावतां थांभ नै नारेण बळनै कोयला हुयग्या। उण कोयलै नै लाय लोगां कूवै रै कोठै में नांख्यो...।"

"हरामखोरां थांभ नै बाळ नांख्यो ?" वै भचकै उभा हुवण चाया। थिगता-थिगता साळै सू बारै आय हेलो पाड़्यो..."सुण्यो हरिया...ओ पप्पू काई कैवै...थांम नै बाळ दिन्हो हरामखोरा...इण सू तो आछो हो...उभोड़ा मांय सू ई बळ जावतो कोओ...अरे कमीणा जाणो कोनी थांभ बळिया कांई हुवै रे...थांभ नी बळ्यो है सैंग गांव वाळां री हूणी आई है..." कैवता वै आंगणै में माथो भालनै वैठग्या।

सगळै घर रा देख रैया हा जाणै थाम नी बाबोजी खुद ही बळग्या हुवै।

आंगणै विचाळै भींतां

छोटोड़ी बीनणी घर आवती ही पैलड़ो काम भाठा भिड़ावरोण करचो। उण चात्रग नेता री गळाई घर री थित नै आसगली। भाठा छेकण मे ही उण रो आपो सुधर सकै। बस ! पछै उणनै कांई तेवड़णो हो ? पी'रै में ई उण घणो पुन्न कमायो, भोजायां नै टांकणै कर्योड़ी राखती। पी'रै में, बोछरड़ापणै आळै अंग-चंग बस्योड़ै तेवटै नै, वा सोरै सांस अळघो कीकर मेल दै ?

खावतै-पीवतै इण घर में कमी काय री ? पण वा आपरा करतव नी करै तो ओ भाखर जैड़ो जमारो किण भात सुधरै ? बीन णी नै जे आठाना रा किरचा ही मंगावणा हुवै तो कणां ही बडोड़ी जेठाणी रै टाबरा नै तेवै तो कणा ही छोटोड़ी जेठाणी रै टाबरा नै। दोनूं जेठाण्या देराणी री इण सूगली आदत माथै घणी ही कळपै, पण वा रै कळप्यां सूं वणै कांई ? ज्यांरा पड्यां सुभाव, जासी जीव सू...!

मासू-सुसरा तो रामजी रा जीव। पछेती मे आवतां धीजो धार लियो। किणी भांत रो कारो-कुटको हुवो, वां नै को लेवणो-देवणो नी। वां रै भवा धी री मूण ऊंधी हुवो चावै सित्तर करोड़ री माया भेळी हुवो... वै तो माळा-मणियै मे ही मगन। टावरी आपो साभ लियो तो मोह-माया नै परै कर दी। पाच टावर हुमा अर पांचूं ही मुंडागै। सगळा परण्या-पाता। दोय छोरया आपरै सासरै में सुख-बसै। दोय छोरा आपरो न्यारो-न्यारो टुगारो चलावै अर एक छोटोड़ो हाल मणीजै।

दोनूं भाई आपरो न्यारो-न्यारो विणज करै। एक रै तो केनवास री

दूकान अर बीजोड़ँ रँ लूण-पिसाई री चक्की। पण घर में एकँ चूल्है रोटी बर्ण। दोनू मोटोड़ँ भाया नँ परण्यँ-पातँ छोटे भाई री भणाई माथँ कीं उजर कोनी हो। महीनँ आळै दिन उणनँ तो पोथी-पानड़ा अर जेब-खरचो आळा मिल ही जावता।

टाबर, रोजीनँ फोड़ा घालण रँ कारणँ, छोटोड़ी काकी सूं छाटा लेवता रैवे। पण काकी ई किसी कम ही। उण जद देख लियो कँ छोरा काम करण सूं मांय-रा-मांय नटण लागग्या, तद उण केई नूवा उपाव सोच लिया।

छोटोड़ी जेठाणी रँ छोरँ नँ बुलाय'र कैयो—"संतोषजी, औ लो डोढ रिपियो। मनँ दोय लाल गटयां लाय दो नी...अबार ही दोय कब्जा सीड़णा है।"

छोरो ऊभो-ऊभो गुद्दी कुचरण लाग्यो। पछै आमँ कानी जोवतो बोल्यो—"काकीमा, देखो नी सूरज मयारँ आयोड़ो है, तावडँ री इण भाय में मंगवाय'र काईं करस्यो? मिझ्या रा ठंड हुयां लाय देसूं।"

उण जेठाणियां नँ सुणावती उतावळी बोल'र कैयो—"ठंड हुयां काईं माथँ में लेवणी है? ठंडँ-ठंडँ तो इण घर रो खोरसो ही कोनी नीवड़ँ—खुद आळो खोदवी काईं घूड़ काढ लेवँ।"

रसोई में बैठी दोवू जेठाणियां एक साथ ई चिमकी...देखो नादीदी नँ! कित्ती कूड़ बोलँ? किसो ग्वोरसो करँ? आखँ दिन तो हाथ पर हाथ धरयां बैठी रैवे।

उण भळै, छोरँ नँ, बीणती कम अर हुकम बेसी देवतां, कैयो—"जावो-जावो ल्याय द्यो नी लाडी—अबार आय जासो।"

"म्हारँ सूं तो इण लाय में कों जाईजँ नों।" छोरो सफा नटग्यो। वो जावण खातर मुड़्यो ही हो, कँ सामँ बडोड़ी जेठाणी रो बेटो अशोक आवतो दीठो। उण हाथोहाथ, वो डोढ रिपियो एक आठानी भळै मिलाय'र अशोक नँ पकड़ाय दी। वो काकी नँ देखण लागग्यो।

"जावो लाडी, उण आठानी रा तो किन्ना लेय लिया अर डोढ रिपियँ में दोय लाल गटयां लावणी है, उण मोड़ आळी दूकान सूं...जावां देखा, फुरती सूं।"

छोरो आठानी रै लोभ में वेगो-सो न्हास्यो। पगो-पग ही पाछो आयग्यो "ल्यो काकी, ऐ गट्या !"

"ल्यो काकी ऐ गत्या !" दूजोडो छोरो, जाको उठै ही ऊभो हो, उणरी कूट कढाई।

काकी चिणखी—"क्यू, आभो थारै ही ताण टिक्योड़ो है कांई ?... कामचोर...!"

'कामचोर' सुणतां ही छोरो बिदक्यो—"मैं क्यू कामचोर...कामचोर हुवोला थे...ओ अशोकियो तो लिगतो मरै...तावडै मे गयो तपड़का मारतो।...ऐ तो थोडी ताळ में मळै हुकम करसी...पांच पइसा री मिरचा, दोय पइसा रो तेल ल्या'र दिया अशोकजी...मनै तो दूकानदार सू टकै-टकै री चीण मागतां ही सरम आवै...अड़ौस-पडौस रा सगळा दूकानदार ओळखै...हुंह...।" अर छोरो खवो मचकोड़तो बारै निकळग्यो।

लाय-पलीता लागग्या बीनणी रै। इण बिसोरै रो बंट निकाळणो तो घणो जरूरी, पण इण रो बंट काढण खातर बीजोडै सूं वणाय'र राखणी पड़सी। उण हाकरता जेठूतै अशोक नै आपरै नेड़ै बुलायो अर माथै हाथ फैरतां कैयो—"वो सतोषियो तो गूगो सांड है, थे स्याणा हो। आ लो आठानी मळै, कुलफी खाय लेया पण उणनै दिखाय'र खावणी है, चिगा-चिगा'र...जैड़ो देखै वैडी ही अक्कल आवै। बापूजी लूण रो धधो करै अर खारास इणरै मूडै जमियोडो...!"

छेकडली बात वा की आकरी बोली सो घर रै मांय ताई पूगगी। संतोष री मा बिदक'र आई। उणनै झाळ तो ऐडी उठी कै देवराणी री नस भटक देवै।

"क्यू बहूराणीसा ! उणरै मूडै तो खारास है, पण थारै मुंडै तो पंप रा फूल झड़ै है नी...वाळू घसको आयो ही...कोई करीजै नी थारो गोलीपो...इसो हाळी चाहीजतो हो तो लावणो हो पी'रै सू...टकै-टकै री चीजा खातर टीगरां नै तगड़ बोकरै !"

बीनणी रै आं वातां सूं भावै ही लाज नी आई। जेठाणी रा ताना उण केई वाता सोच'र टगर-टगर सुण लिया।

अशोक री मा अवचळ ऊभी ही आंगणै। ऊण कनै दोवां सू ही अड़वी करण जैंडो की नी हो। वा भोरचां मुरै अर टोरचां टुरै जैंड़ी ही है। घणी दारून्दी कोनी। आखै दिन चूल्है-चौके सू खसती रैवै। वडी हुवण सू चौको उणनै ही संभाळणो पड़ै। घर सूं बारै ही को निकळ सकै नीं। एक छोटोडी बीनणी है जकी नै इण घर मे आयां वखत ही कित्तोक हुयो है, पण आड़ोस-पाडोस री मोकळी लुगाया सू जाण-पिछाण कर राखी है।

संतोष री मा तो आपरी बात कैय'र विलै लागगी। थोड़ी ताळ में ही बारै सूं अशोक रोवतो...आंख्यां मसळतो आयो। हाथ मांय कुल्फी रो बिना बरफ चिप्योडो घोचो लियां हो। उण नै इसका भरता देख'र संतोष री मा बूझ्यो—"कांई हुयो रे अशोक?"

"संतोषियो मनै बिना बात ही कादे में पटक दियो अर म्हारी कुलफी खोस ली।"

"कठै बळै है वो?" कैवता वा बारणै सू बारै झाकी तो संतोष बारणै कनै ही ऊभो हो। बावळियो पकड़'र घर में ल्याई—"क्यूं रे, इण रै मारी कोकर? चाल, माफी माग।"

"कांई बात री मांगू माफी?" छोरो अटग्यो।

छोटोड़ी बीनणी नै तो इत्तो ही चाहीजतो हो। वा सीवणो बिचाळै ही छोड'र बारै आई। अशोक री मा कनै मुंडो कर'र कैयो, "ऐ किण री मागै?"

आ बात संतोष री मा आछी तरा सुण ली। पण अवार कसूर खुद रै टाबर रो हुवण सू कीं नीं बोली। छोरै नै ही बकी, "चाल, मिला इण सू हाथ अर कय कै मनै माफ करदै।"

"कैय दियो नी मैं कोई माफी-वाफी कोनी मांगू।"

"कियां कोनी मांगै? कसूर थारो है, माफी तो मांगणी ही पड़सी।"

"मैं इणरै ठोकी जरूर, पण कसूर म्हारो कोनी।"

"हूं-हूं, ठोकी ही ये अर कसूर ही कोनी?" देवराणी भळै जेठाणी न चिमावती-सी बोली।

संतोष री मा नै देवराणी री बात माथै झाळ आयगी। वा कैवण

लागी—"थे पछै कांई थाणेदारी करो हो, मैं आपै ही ऐकै पाणी न्याव कर देसूं। म्हारै खातर तो संतोष अर अशोक एक-सा है। हूं किण री ही नी राखूं।"

संतोष री मा दोवूं छोरां नै झाल राख्या हा—"हां, अबै बता तूं इणरै ठोकी क्यूं?"

"इण ने ही बूझ लो।"

"नी तू बता।"

"ओ कुल्फी लेय'र आयो अर मनै चिगा-चिगा'र खावै हो पण मैं की नी बोल्यो।"

"तो...?"

"कुल्फी खायां पछै ओ थोचो म्हारै मामी कर'र कैवण लाग्यो, *थारा जीसा लूण रो वौपार करै इण खातर थारी जबान खारी हुयोड़ी है, लै थोडी मीठी करलै।*"

उण दोवां रा बावळिया निसकारै सागै छोड़ दिया।

छोटोडी वीनणी राजी हुई कै अशोक मा-बेटां रा मोर वळै जैड़ी बात उण रै सिखाया कैय ही दी।

वा अशोक नै माय लेयगी अर कूड़िया आँसू ढळकाया—"थे चिन्ता ना करो, इण ठोकणै री तो कसर काढ लेस्या।"

□

खंखारै सागै दोनूं भाई घर री कुत्ता-किवाड़ी खोलनै आंगणै में आया तो हरेक कमरै मे चुपाचुप हुयगी। तीनूं भायां में गाढो सनेव। न्यारा-न्यारा धंधा करतां ही जीमण खातर सागै ही घरै आवै। छोटोडो भाई कोई डिप्लोमा खातर बारै गयोड़ो। तीनूं भायां मे गाढो हेत। कदै ही दो जीम को हुया नी, इण करता लुगायां ई आंकस मानै, आपस में माठा मोरण री कोसिस नी करै। लुगायां री खडबड़ आंयण भरतारां आगै बखाणीजै कोनी। तीनूं लुगायां जाणै कै भाई-भाई आपरै टाणै घरम-घीया है, इण रांडा-गिगरथ री की गिनरथ नी करैला। पछै बकवाद

कर'र मुंडो कोझो करणनै अर आपरो माजनो देवणनै कुण त्यार हुवै !

पण छोटोड़ी बीनणी रै तो धाय-फाय लाग्योड़ी हीं । वा हरमेस खावा-पीवा'र अशोक नै एकदम आपरै हाथवस कर लियो । उणनै सागीडी पाटी पढा नाखी कै समझायै मुजब काम कर ही देवणो है । अशोक उणी मुजब करयो ।

जीम्यां पछै दोवू भाई की ताळ आड-टेढ करै । अशोक तो मौको ही ढूढतो हो । खूटी माथै लटक्योड़ी, आपरै जीसा री कमीज रै गोजै सूं पांच रो एक लोट काढ'र भट काकी कनै पूग गियो । काकी उण नै स्यावासी दी, "अवै वात उण लपरै मुंडै री ...पण जद जेब में पचास अर पाच रा दोय लोट हा तो पचास वाळो क्यू कोनी निकाळयो ?"

"म्हारी तो हिम्मत नी पड़ी, काकी ।"

"कोई वात नीं । पण, अवै ठा तो पड़णो हीज है, इण वास्तै म्हारै बतायै मुजब ही करणो है...साची वात रो थारी मा नै ही भणकारो नीं पड़ै...सौगन है म्हारी...।"

छोरो थूक में आगळी कर'र कंठां अर माथै रै तीन वार लगावतो सौगन लेय ली ।

तावड़े-तावड़े आड-टेढ करयां पछ दोवू भाई घधैसर जावण नै अड़-थड़या । आप-आपरी कमीज गळै में घाल'र वहीर हुआ । छोटो भाई हाल बारणैं सूं निसरण वाळो ही हो कै आपरी घिराणी नै हेलो पाड़यो, "अरे, सुणै है नीं ! लै, पइसा लै.। ऐ दूध वाळै नै देवणा है । ऐ पिच्या-वन रिपिया दिया आज ताई रा चूकत हुय जासी । हूं अबार भूल ही जावतो ।"

वो भट देणी आपरै गूंजै सूं पचास रो सोवटयोड़ो लोट काढयो । उधेड'र देख्यो । अचरज सूं जोयो-धरतै तो कोनी पड़यो...पांच रो लोट गयो कठै...इण पचास आळै रै बिचाळै ही तो हो...! इण तरां बड़-बड़ावतां वो धणियाणी नै लोट देवतो बूझ्यो—"जेब मांय सूं पांच रो लोट तू काढयो कांई ?"

"थानै बूझ्यां विना थांरी जेब मे कदै ही हाथ घाल्यो हो कांई ? जरूरत हुयां थां सूं ही माग लेवती ...मनै लागै लारै ही कठै-न-कठै नाख

दियो हुमी।"

"थारो मिर ! नाखतो तो पछै पचास वाळो सागै नीं पड़ जावतो ? इण रै विचाळै हो वो।"

हेला पाड-पाड़'र सगळै टाबरां नै बूझ्यो। सगळा ही अणजाणपणो दरसायो। छेवट अशोक नै बूझ्यो तो उण ई नकारो देय दियो, पण होळैसी एक टुणकलो ई नाख दियो—"थे सूता हा जणा संतोषियो रिपियै-रिपियै आळी कुलफ्यां खाय रैयो हो।"

"कोई बात नी टाबर ही तो है।"

वो दूकान कानी टुरग्यो। छोटोड़ो भाई पैला ही गयो परो। अबै लुगायां रै इण चोरी री घणी हुल-हुल हुयगी। चोरी री सगळी तुम्मत संतोष माथै आय पड़ी। छोटोड़ी बीनणी ई साख भरदी कै जेठसा सूता हा तद संतोष खूंटी कनै खड़ा हा। अशोक पैलां ही कैय दी ही कै वो उण नै रिपियै-रिपियै आळी कुलफ्या खावतै देख्यो हो।

अबै तो इण चोरी री घणी ही गिगरथ माची। सगळा ही जद संतोष नै चोर ठैराय दियो तो उण री मा रै टो'मो पडग्यो कै कठै ही ओ साचोणी चोर तो नी है ? घर री बात गळी तांई पूगगी कै आज संतोषियो आपरै बाबै री जेब सू पांच रो लोट काढ लियो। उण री मा ठगा-पोटा'र बूझण लागी—"बेटा ! ओ काई करियो ? इया कुलफ्यां खावण खातर चोरी जैडो नाजोगी काम क्यू करियो ?"

छोरो सूनी आख्या सू मा रै सामै जोवतो बोल्यो—"मा ? तूं ई ऐडी बात करै ! मैं कुल्फी खातर रिपियो स्कूल री बचत बैंक सू कढवाय'र लायो हो...मनै तो अशोक नै दिखावणो हो कै तूं आठाना री कुल्फी खावै तो मैं एक रिपियै आळी खाय सकू।"

"मा-बेटा कैडा सचवादा बणै ? अबार लावू मनू री मा नै...वा आखा देखै अर उणरै मुंडै पितरजी ई बोलै...अबार कूड़-साच चवड़ै आय जासी।" छोटोडी बीनणी विचाळै ही बोली।

छोटोडी बीनणी झट करती मनू री मा कनै गई। उण नै बताय आई कै सगळां रो वैम तो संतोष माथै है। आज वो आं पइसां सूं घूपेटा उडावै हो। पण चोर अर उणरी मा इण बात नै कद सदरै ? सिझ्या रा

पांच वजी थांनै आवणो है आखा देखण नै...।

सिञ्या दोवूं भाई घरै आवै तो न्यारो ही नजारो। घर में लोबान री सुगन्ध खिंडयोड़ी। मनू री मा सेर-एक गवा कानी जोवैं अर सामैं जगतै दीवै री बाट नै ई ऊंची सारती जावै। पछै जोर सूं बड़क दीवी—"चोर पारको कोनी...घर में ही है...।" अर वा तीन-च्यार मवेरचां दीवी।

तीनूं लुगायां हाथ जोड़्यां थर-थर धूजण लाग रैई ही। तीनूं ही खयावळी-सी बूझ्यो—"कुण है म्हाराज......नांव बतायां ठा पड़ै नी!"

"बूझो कांई हो विचोटियैं आळो छोरो है...बिचलै रो बेटो...।"

वडोड़ी अर छोटोड़ी बीनण्यां रै चे'रा पर चिलक वापरगी पण संतोष अर उणरी मा रै मुडै री रंगत उतरगी। अबै तो वा ई आपरै बेटै नै चोर सिदर लियो हो, पण पेट रै फरजंद नै कियां डंडै? टाबर है···चोरी कर ही ली हुवैला!

थोड़ी'क ताळ मवेरचां खाय'र मनू री मां तो आखां नै बाथ ओढणियैं रै पल्लै अर आपरै थान-मुकाम गई परी।

विचलै भाई नैं बात री निगै नी हुवण सूं ओ सांगो समझ में नीं आयो। भाई नै बूझ्यो तो उण टाळ दियो कै टाबर है, कोई भूल हुयगी हुसी, की कोनी।

पण वात किसी छानी रैवती? अबै वो सगळी बात समझग्यो। उण लप करतो संतोषियै रो हाथ झाल'र एक रैपट जड़ दी। छोरै रै होठां सूं खून तिड़कग्यो।

"साला इत्तै मान रो ही चोरी करै?...आज तो मारयां विना नी छोडूं···।" वो उणनै बोझै ढाळै कूटण लाग्यो। संतोष रै डीडावणै सूं अशोक रो बाळ-मन ई आपरो धीजो छोड दियो। उण देख्यो, इयां तो काकोसा संतोष नै मार नाखसी।

छोटोड़ी काकी रो हाथ आपर खवे पर सूं छेड़ करतो अ चिल्लायो, "मैं बतावूं काकोसा...!"

सगळा चिमक्या पण छोटोड़ी बीनणी लप करती आपरो हाथ उणरै मुडै मार्थ धर दियो।

बिचोटियो भाई छोरै नै छोड'र हारयोड़ै जुवारी दांई आंगणै सू चाल'र कमरै में बड़ग्यो।

बडो भाई टुकर-टुकर आंगणै रा तीन फाड हुंवता देख रैयो हो।

संतोख

खेजड़ी रै च्यारूंमेर फेरी दियां पछै लुगायां अेकर भळै श्रगूण मुंडो कर'र सुरजी नै हाथ जोड़या अर पछै आप-आपरी जूत्यां कानी लफण लागगी।

"पाणी रा गड्डिया कांअी भर्योड़ा पाछा थोड़ा ई ले जावणा है।" अेक अधबिचैरी-सी बीनणी आप सू कीं बड़ी बीनणी नैं मुळकतां थकां कैयो।

बड़ी बीनणी झेंपगी। हाथ में भरियोड़ो गड्डियो झट देणी खेजड़ै री जड़ां मे उंधा दियो।

"ले देखोक हूं ई किसीक भूलोकड़ हूं, अरध रो गड्डियो हाथ में लियां ई उभी हूं।"

पंथवारी रै इण खेजड़ै हेटै, आसचौथ रै बरत री कथा सुणन आई पांच-छव लुगायां में दोय अधखड़सी ही अर तीन नैनी बीनण्या। उणरी गड्डियो नीं उंधावण री भूल माथै सगळी अेकै सागै हैंसी अर कैयो—

"आ बाळनजोगी है ई भूलोकड़।"

"जणै ई तो आई साल आस माता आंनै भूल जावै।"

बीनण्या मांय सू जकी भरियोड़ो गड्डियो अखरावणवाळी ही उण कैयो अर कैय'र आपरी जीभ नैं बोचली। जीभ बळै हाड मांस वायरी हुवै नी जचै ज्यां बोलज्यावै। आगलै माथै दावै जियां बीतो। पछै तो उणनै ई घणो पछतावो हुयो, उणनै अैड़ी अकरी बात नीं कैवणी चाहिजै। पण अबै

तो कँयीजगो जकी कँयीजगी। तरकस सू छूट्योड़ो तीर पाछो कीकर आवै।

भूलोकड़ बीनणी रै मुँडै रो पाणी स्सो उतरग्यो।

"भाग-आप आप रो, बापड़ी आस माता माथै किस्सो जोर थोड़ो ई है।"

आ बात कँवतां वा रोवणखाळी-सी हुयगी।

अेक बीनणी जकी अबार तांई बोलबाली ही। उण सूं भी अँडी अणखावणी बात सँयीजी नीं।

"थानै जिठाणीसा कोई सू कदै ई सूवो बोलणो आवै है काई।"

बोनाळ बीनणी रै चेहरै माथै अपराध बोध भळकै हो। गेलै मे तीनूं ई बीनण्या घरै आई जठै ताई चुपचाप ई आई, अर कनै-कनै रा आप-आप रा फळसा मे बडगी।

◻

फूला जड़ियो ओरणो उतारती बगत उणनै घणो दरद हुयो। उणरो मन तो करै वा उण ओरणै नै उतारै ई नीं पण उण कनै अेडे-टाकलै ओढण खातर ओ एक हीज ओरणो है अर एक हीज पूणी दो मरी रो हारियो। वरत री कहाणी सुणन नै जांवती वँळा उण आ दोवा ई चीजां नै घणै भाव सू पैरी ओढी ही।

हारियो खोल'र उण देख्यो-डावैं कानलै फूल रो अेक नाको तो सफा ई धसीज चुक्यो हो। भळवाणो पड़सी। 'सारै आने केयो हो, भळवाय'र लाय दैया। इतो ई धिनक नांव है, अेडै-मेडै पैरण जिस्सो रैय जावै ज्यू। पण म्हारी रांड री कुण सुणै है। केवै-कोई ढंगरो सुनार मिलै तो भळवाऊ नीं। अठै तो सगळा ई नकां जोगा है। भळाई-भळाई मे सामै वँठ्या री आग्या मे थूड़ नाख देवै। अेकर डोरै सू बांध लै। कणै ई वख पडसी जणै भळवाय देसूं। आनै अबै कुण समभावै, नाकै री भळाई-भळाई में आगलो खा'र कोई सगळो हारियो तो खावै कोनी। तुम खण राखसी जको तो सोनार री जात सू रैयोजै कोनी, मर्‌या ई छोडै नी।

उण नै अेक बात चेतै आय'र हँसी आयगी।

आप काल रै दिन हारियो अडाणै मेल्यो हो, जणा जात रा तो घणाई बामण हा पण पाछो छुडवाय'र लाया जणा बिचलै फूल हेटला तीन घूघरिया कोनी हा। अे तो म्यासै दांई लिमाया, हूं कैयो इण में तो नीचली फाकडी सू घूघरिया निकळ्योड़ा है। नीची ढूढ घातली। फगत इतो ई कैयो—"करसी जका भरसी 'म्हारै सू तो अबै जाय'र इयां को कैयीजै नीं कै थे इयै मांय सू घूघरिया काढ लिया। आगलो सीधी नाक मायै सळकावै हा। म्है काढ़ लिया घूघरिया, ई बापड़ै महूकार कानी देखो रै। अठै सीनो नांव रा दरमण आज अिण ई कराया है। हुवा तोड लिया तो फूटा बांरा। हू तो बुहार विगाड़न नै जाय'र कोनी कैवू कै थे पिडतां हारियै रा घुघरिया तोड लिया। बळो आगा-भोगो ! ब्याज ई भोग्यो है नीं महीना बारै रो। आनलै तरनाट करतो तीन रिपिया सैकड़ै सू लियो है नीं। हाथी तुलै बठै गधेड़ा काण में जावै। मिनखा सरीर रै काम पड़तो ई रैवै। आं री कांओ, आज घसकायोडा हुवै जणा काल पाछा किसै मुंडै सू जावां। चीज मैल'र भी पईमा देवण नै त्यार कोनी हुवै—"ना भाया, म्हांरो तो घणो ई मोलो देख्योडो है। भळै थारै काल नै घूघरिया तूट जावै। इसी जगां मुडो फलको सो कर'र रैवणो पडै। गरीब री घोरको करयां जोर कोनी चालै, पेट मोटो करणो ई पड़ै। गरज आपरी हुवै। अेडा-मेडा तो चावै गरीब हुवो चावै अमीर सगळा रै पड़ता ई रैवै, अर अेडै-मेडै मे आनै सिवरणा ई पडै।" ले...बीरा...हूं...ई कांओ कांओ सोचण लागगी। काम नै तो मोड़ो हुय रैयो है......पडी हारियै रै सोच में दूबळी हुवण लाग रैयी हूं...गडको लैय'र आवण वाळा व्हेला अजू रोटी टुकडै री कोई तजवीज ई नी है।

उण हारियै नै अेक डब्बी में धर'र काटीज्योड़ी सिंदूक में कपड़ा रै हेटै धर दियो।

'या साळ सू बार आई जितै में छोटोड़ी छोरी जागगी ही। गूदडां मे बैठी छोरी ठिणकण लाग रैयी ही। बडी ही बडी छोरी सायर उण नै मुळावण में लाग रैयी ही, पण मां नै देख'र अर की दिनुगै-दिनुगै उठतां ई आपरी बाण रै मुताबिक सायर री मुळाई रैयो कोनी तो उण कैयो,

"मा बैन नै ले, आ म्हारै सू रैवै कोनी।"

"आवू बेटा आवू, आज तो कहाणी सुणन नै जावण सू सगळा काम रैयग्या। फूस बारी कढ़ी नै कोई वंट चंटो चढ्यो, पाणी वाळो तो अबार कूवो बंद कर देसी, पाणी नै न्यारो मोड़ो हुयग्यो, थानै स्कूल खातर न्यारी त्यार करणी है। वा संतूड़ी कठीनै गयी ?"

"बा तो उठतां ई बारै गई मां खेलण नै...।"

"हुवा गई तो बा किस्सो काम करै है केयोड़ो। अळवादण है वाळण-जोगी, कुदड़का रै सिवाय की चोखो कोनी लागै बीनै तो। घड़ी स्यात ई दीगरी नै ई राख लेवै तो, तू तो कीं स्सारो देवै नी...?"

"बुलाय'र लावू काँई मा ?"

"नही रैवण दे। वा पड़ी बुहारी, तू थोड़ो आगणै रो छीछो काढ़ दै...वितै हूं इनै बोबो दे देवू...।"

छोरी मां री गोद्या मे आवता ई दापळगी।

मायर आगणै री बुहारी काढती जावै ही। आंगणै रै विचाळै राती अर धोळी माटी सू वणायोड़ै चौक माथै उण अधर-अधर बुहारी फेरी। चौक अबार होळी माथै उण री मां वणायो हो. अर उण नै वो आगणै रै विचाळै भोत चोखो लागै। छोरी हाळ नव साल री ई नी हुयी ही पण समझणी किती। सगळै घर रा कंवळा वणाया तो मां रै सागै आफळी। किस्सो ई काम हुवो, वख नी पड़ो पण लटूमण नै त्यार रेवै।

मां सायर नै फूस काढ़तां हिंवळास सू देखण लाग रैयी ही। सागै ई बोवो लेवती छोटोड़ी छोरी रै कंवळा भूरा वाला मे ई हाथ फेर रैयी ही।

सायर आंगणै रै दिखणादै पासै वणायोड़ै झूंपड़ै रा खिर्योड़ा डोका नै बुहारी छेड़ै मैल'र मेळा करण लाग रैयी ही। उण झूपडै कानी गेहरी दीठ सू जोय'र आपरी मां नै केयो—

"मा झूपडै री छावण अबै नूवी करावा जद हुवै, अे डोका तो मुरण लागग्या !"

"थारै जीसा नै कैयो कै सरकंडा मगवावो झूपड़ो छवावा ज्यू।" कंवता उण वोवो देंवती छोरी सू बोवो छुड़वाय'र आगणै मे वैटा दी।...

कमै की गड्डा-गुड्यां री खाली पेट्यां, जिणा में थोडाक-थोड़ाक गुवार रा दाणा घात'र मै'ल दी। धाप'र दड़ादोट हुयोड़ी छोरी रमण लागगी।

"सांयर हूं पाणी लियावू, फूस तो कढग्यो। छोटोड़ी बाल्टी सूं पाणी काढ़'र बटैड्यां में घाल दैयो अर बटो ऊर दैयो। पाणी घणो नां घाली, पड़घो इया ई ऊफणैला। खात आली हुयगी तो बटो सिझ्या ताई को भिजैला।"

छोरी हां रै लटकारै में नस हलादी तो वा इढूणी मिर माथै धर, पड़ियो मोड़ सूं बारै निकळना सिर माथै आडो धर लियो अर बहीर हुयगी।

गेलै में वा मोचण लागगी—

लुगायां किती मटयोली हुवै...छोरो-छोरी किस्सो मिनख रै सारै हुवै...काल म्हारै साम परणीज'र आई। भिडतां ई एक टिगर कै हुयग्यो फुलीज पिट्याळ हुगी। 'आम माता भूल जावै...और कोई माता भूल जावै, बातां किती आवै नादीद्या नै...।'

फेरूं दिस्मां जावती कैवण लागगी...म्है तो म्हारै एक टावर और हुंवता ई अपरेसन करवाय लेस्या घणै कौसाई में काओ पड़घो है। अबै ई करवावै नी कुण पालै है तनै...गरम बायर्यां हर कोई नै चोबको देवण ने त्यार रैवै...।

कुवै माथै छीड़ ई ही, उण वेगी सी घड़ो भर्यो अर बहीर हुयगी। लुगायां छीड़ हुवो चावै भीड़ सागै नै उडीक बोकरै, पण वा तो को रावकी मे नी कोई देवकी में। मरड सरड़ गई अर आई। दूजी लुगायां जिती हलर-फलर वी नै आवै कोनी।

घड़ो लैय'र घरै आई तो उणरो मोट्यार गाडी सू नारो खोल रैयो हो अर मायर संतूड़ी नै सिनान करावण लाग रैयी ही।

'मोडो हुयग्यो अबार एक घड़ियो ही ल्याईजसी बाकी, सिझ्या ल्यासूं, अै ई गड़को लैय'र आयग्या, अठीनै छोर्या नै ई जीमाय'र स्कूल भेजणी है।'

वा रोट्यां पोवण लाग रैयी ही। मघाराम हाथ मुंडो धोय'र रसोई

मे आयग्यो । रोटी री सुगंध सूं उणरी भूख हीं जद सूं घणी वधगी उण सूं कैयां बिना नीं रैयीज्यो ।

"रोटी बेगी सी घाल...आज तो भूख अकरी करती लागी है ।"

"आज इती अकरी कियां लागी ?" वा मुळकती साम्हीं आवी ।

"कामौ ठा ।" कैवंता उण पाळौ गमछै सूं पूंछ'र सामीं धरदी ।

"कित्ता गडका लाग आया ?"

"तीन गडका ।"

वो जीमण नैं रोटी मैंप'र बैठ्यो ई हुवैला कै बास मे जोरदार रोळो माच्यो । गाभै ई लुगायां रो कूकणो अर गाभै मोट्यारा रो हाको । पण [illegible] मे ई हाथ मोचा री मचगी । वो उठ गड्यो हुवण नैं हुयो वो उण पाछो बैठाय दियो—

"मळनदूयो नीं थांरो काभौ लेरै, थे थांरी रोटी जीमांनी ।"

"ठा तो कांई हुय गई है ?"

"ठा हुयोडो है गार्नसिगत बाषोजी रा बेटा लई ।"

बातैं तो बिपेटियां छोरो मा नैं धक्को देव'र पटक मारी, बारडी घणी [illegible].. [illegible] जोगो मा पाथा नैं अे दिन देखण लाग'र मोटा [illegible] हा कांई ? [illegible] बातां मे [illegible] नारा लागै ।"

बात तो बाल्डो आ यी पळै देव'र पाथ दिन हुवग्या बैटी रै [illegible], आ [illegible] सूं सामां कुण [illegible], मां ई हाथ मोछा [illegible]...[illegible] बात बात गई बैटा रै सुभाव मे [illegible] [illegible]...[illegible] कोई [illegible] नहीं पूछै ई उण बैटा रा...[illegible] है [illegible] [illegible] रा...।"

[illegible] रै [illegible] रै [illegible] [illegible] नैं [illegible]-[illegible] ई हैंसी [illegible] ।

"[illegible] [illegible] री बातां बात है । [illegible] [illegible] हुवै, [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] है कै कांई ?—[illegible] [illegible] कोई उत्तर सूं नईं ।"

[illegible] ई [illegible] [illegible] सूं हैंसी [illegible] । [illegible] हैंसी मे [illegible] [illegible] [illegible] है ।

सौदो

जोगनिया रै नेड़ै आंवतां-आंवतां सुरजी कसमल हुय'र धोरियै सू नीचै कूदग्या। उण पसवाड़ो फोरनै, च्यारूं कानी, उवासी लेवतो थको जोयो। फेर मन ही मन वड़बड़ावण लागग्यो—'ओजूं' तो जोगलियो ई आयो है (तळाव) फेरूं दुकोसो पछै मथाणियो अर उणरै पछै मणकार। मणकार ओजूं तीन कोस छेड़ै पड़यो है, मणकार पूगतां-पूगतां समक आधी ढळ ज्यासी। पण छोड़ो, जोगलियै सू तो अबार गुधळकै-गुधळकै निकळ जास्यां। अठै साळो डर फेरूं बतावै है।' वण अेक चिमकोर नीजर जोगलिया कानी फेंकी।...जोगलिया री पाळ माथै मुस्तैद 'इरणा' उणनै भूत सू कम नीजर नीं आया। उण सोच्यो...अठीनै देखू ई कोनी...धणी डरणै सूं ई भोताड खड़ंधो हुवै। अबार एक खेतवाई री ओजूं रैयी है आ डेहरी, अबार निकळ चालस्यां...इयां सोच'र वण बळधां री काछ विचाळै हाथ घाल्यो अर टिचकारी दैयी, पण लीलियै-धोळियै री चाल सागण रैयी। बो बळधां रै माठैपणै माथै जाड़ पीसण लागग्यो। साळा दोनूं ई धरम भाई है। आजलग कोअी पचासूं सौदा कर लिया पण अैड़ा माठा बळध तो देख्या ई कोनी...पण, किता दिन रैयसी? आगली गोपआठ्यू रै मेळै में निकाळ देसू साळा नै।' 'इण रै सागै ई उण लीलियै रै अेक धुदै री मार नांखी अर वड़बड़ायो—"मर साळा कदै ई तो खातो चालणै री सौगन भांग लिया करो।"

लीलियै-धोळियै माथै धणी री वातं रो रती भर ई असर नीं पड़यो

पण ऊल्टा गोचण लागग्या—'तू माळो माटियो मोशागर म्हांनै गाळो बनाय राखै है कै ? मूंटो हरामी। जिनरो ई नेम सूं धणी नी बण्यो। कूटनी पामरी अर निकाळ काड्या दूजी ठौड़। कपरो भी बस्ती सूं माग-मूग'र लागै अर फेरूं गरणट घाम ग्यारी भावै।'

इमात पो बळधां री मनगत भापग्यो। गाडी रै सूधै पिचाळै बैठी 'दुरगली' सूं बोल्यो—"ले, तू थोडी आगीनै आय'र बळधां री राम पकड़लै, इतरै में हूं अेक कामड़ी तोड़ ल्यावू। अे इयां ई धापता जोता कोनी।"

दुरगली इणगत बैठी रैयी जाणै कानां रै डाटा लगायेड़ा हुवै।

"सुण्यो कोनी...गोंगो पड़ज्यासी...अर ओजूं ताईं दुकोमां ई नीं आयो है। एक तो थारै बाप हरजीड़ै इयांई दिन आयग्या दियो, अर फेरूं थे मादरका काड़ मळप टको पावड़ो भर रैया है। ले राम ले। हूं कामड़ी तोड़ ल्यावूं ?" वो बळतो-भूजतो मो बोल रैया हो।

वा इण बार भी की नी बोली, पण वण जबरदस्ती राम उणरै हाथ में झलाय दी अर अेक खीप कानी लैफग्यो।

वो खीप कानी लैफ रैयो हो अर उठीनै दुरगली जकी लासी ताळ सूं साम मोस्या बैठी ही, नैहचै सूं सांम लियो। फेरूं घूंघटै री अेक कोर उठाय'र खीप कानी जोयी। लीलो करम खीपड़ी हो। वा सोचै ही—"हरामी ज्यूं ही खींपड़ै में हाथ घालै, परड़ोट डस ज्यावै। राम मार्‌यो।"

अठीनै वो खीप री डाळी तोड़तो सोच रैयो हो। "हरामजादी आ दुरगली भी कित्ता टसुआ कर रैयी है। छिनाल काठी-काठी फेरूं हुय रैयी है। बिड़दू काको केवै जकी बात साव साची है—त्रिया नै त्रास भलो'... राजा भोज जे भाणमती नै त्रास नी देंवतो तो ? बाप रो मथावणो, रडार रै लारै भाटै रो हुवण जाय रैयो हो पण, आधीटै में अकल आयगी... लगायी तीन-च्यार हरी बेंतड़ यां कै पाधरी हुयगी भाणमती। दो-च्यार हरी कामड़ या लगाय सूं तो आ तो कै इणरी छियां सीधी हुय ज्यासी।'

वो कामड़ी लेय'र आयग्यो। गाडी मायँ बैठतो वेळा भी उण दुरगली कानी जोयो हो। दुरगली लाल कपड़ो ओढायां, धान री बोरी हुवै ज्यूं बैठी ही, नी तो चुसकणो अर नी ही मुसकणो, दुरगली रै इण मूकपण

माथै उणनै फेरूं रीस आवण लागगी। पण उणनै रीस दाबणी पड़ी। वयुकै ओजूं रस्तो खासा ही बाकी पड़्यो हो, अर फेरूं सोपो पडनै रै नजीक हो। बण पूछ मरोड़'र लीलियै-धोळियै रै लगोतार तीन-तीन, च्यार-च्यार कामड़्या फटकारी। कामड़ी लपूसडां बापरी हुयगी, पण बळधा री रणकार में तो मामूली सी तेजी बापरी।

चिरचिर्‌याट्यां री झिणकार में बधेपो हुंवतो जाय रैयो हो अबै तो उणनै आवडी अेक सू तो ज्यादा की नीजरां ई नी पड रैयो हो च्यारूं कानी रात रो काळमस बधण लाग रैयो हो। दुकोसै रो धोरियो अेक सेत-वाई माथै ओजू रैयग्यो हो। दुकोसो स्याळिया री टेकरी रै नांव सू नांव जादीक धोरियो है। उणनै स्याळियां सू तो डर नी लागै पण न्हार बघेरा सूं बो जरूर डरै। बो सोचण लागग्यो। अजै तो चेत चालै है, लोग ओजू फोग काटण नै ई नी आय रैया है। जे कोओी एकाध आवतो ई हुवैला तो सिझ्या सू पै'ली-पै'ली फोग टाच'र चल्यो जावै। रात वासो कुण लेवै है अठै। असाढ़ उतरतै तो अठै ई मुन्याड कोनी रैवै। च्यानणा फळकण लाग ज्यासी पण अवार तो काग पड़ै है अर कुता भूसै है। बोळ वतलावण सू रस्तो सोरो-सोरो कट ज्यावै, पण आ दुरगली तो बैरण गुमसुम गांठड़ी बणी बैठी है।

बण वतळावण री गरज सू पूठ मोड़नै दुरगली कानी जोयनै कैयो "दुरगली...।"

बा फेरूं चुप रैयी।

उण फेरू वतळायी—'सुण्यो कोनी ? ···मैं तन्नै वतळायी है मलो। सू ऽऽऽ ओ जको मून धार रैयी है, ओ थारै ई कोनी पोसावैला।"

इण बार भी वा चुप रैयी, पण गोडा ऊपरां बांधोड़ा हाथ छोडणै सूं लाख री चुड़्या जरूर वाजी।

उणनै फेरू रीस आवण लागगी। रीस सू दोलड़ो हुवण लागग्यो दुकोसा री ढलांत उतरतै उण बळधा रै तीन च्यार कामड़ी फेरू फटकारी। इण दफ़ा ढळांत हुवणै रै कारण बळध भाजण लागग्या। वो जाड पीस तो बोल रैयो हो। गाडी रै धचका रै कारण उणरी बात बोटीज-बोटीजनै पूरी हुय रैयी ही।

"दुरगली...पा...आ...रे...अे...मैं...ध...पणा फोऽऽड़ा पड़ैल्या ...भ...अ...लो...तू...ऊं सगळा...टन्टसुआ भूल...ज्यासी...तूं म्हारै सू राजी रजा रैयसी तो अच्छन-अच्छन रास मू, पण थारा लो तौरा हणै ई बुर्मड़ा सा लागै।"

"तो तू कांअी तोरा सुधार देसी ?" दुरगली बोली ही।

वण तीरा बळती आख्यां सू दुरगली कानी जोयो, अर जाड़ रौ कटीड़ उपाड़यो।

"अच्छ्या; छिनाळ रै ई जीभ उग आयी ?" फैर की नेहचो वपरां—वता बोल्यो—"दुरगली लगाय'र खावैला तो घर बसतो जावैला, राजम करेन्ती मारी उमर, बी हीजड़ै हरजीड़ रै घरै कांअी पड़यो हो...मुला टुकड़ा सू माथो भांग रैयी ही। अठै ईसर री दया सू सो सुख है।"

उणरै मौळा बोला सू बा की ठंडी पड़गी। बोलता थका उणरो गळो अेक गेहरी ठेस पाळै पिछतावै सू भरीजग्यो।—"रामूडा तू म्हारै सूं इस्यो कै अणूतो सुख पाय लैसी ! थारी आ अनीत भगवान तो देखतो हुवैला ?"

उण गुमान सूं खूवा मचकोड़या।

"की कोनी देखै भगवान। हू तन्नै नातो कर'र ल्यायो हू।"

"इणनै तू नातो केवै है कै ?"

"क्यू तो और कांअी है ?"

'किणरी ई निबळाई री बेजा फायदो उठांवणो है। पण पाल कुन्याव की न्याव तो वो ई करतो हुवैला।" उणरो ओ हार्योड़ो फैसलो हो। विगत नै याद करनै वा सुबकण लागगी। रोही इण री सुन्याड़ मे उणरो सिसकणो उणनै दर ई दाय नी आयो। वो दकाल पड़यो।

"दुरगली बंद कर अे टसुआ, हू घणी ताळ सू सैय चुक्यो अे सव; छिनाळ थारी मा ई कदेई पतिभरता बणी ही कै ? कै मिलतो हो तनै उण हरजीडै री कैद में। हूं उण कसाई नै जणू कोनी कांअी ?"

"तू फेरू उणनै कसाई कैयनै पराछीत चढाय रैयो है।"

"हा-हा चढावूं हू पण घणी तरफदारी मत करना उणरी, गंडक री आंख जैडा सईकडा तीन सौ बाळनै आयो हूं इया ई कोनी ल्यायो।'

वा बेबस हिरणी री ज्यूं खाली आंख्यां उठाय'र रैयगी। हरजीड़ री पाश्‍विक मुळकण उणनैं खारी जैं'र जैड़ी लागी। वा मांय री माय बळीज'र रैयगी। वो परमोद छांट रैयी हो। "हूं तन्नैं हरजीड़ री कैद सूं निकाळी हूं। तूं जीवणैं पड़ग्यायी।"

"तूं मनैं कैद में नांख रैयो है।"

"तू...ऊँ...अे जका वाता रा नखतर सुभाय रैयी है, अे बारैं ई नी पोमावैला हूं तन्नैं सोरी राखण सारू ल्यायो हूं पण इण हैवाना सूं खोटी दुख पावैला।"

"दोरी राख'र मार ही तो देमी ? जीवणो किण नाजोगो है।"

"अच्छ्या तो आ बात है ?...जीवणो कोनी तो कन्नैं ई है सूरसागर कूवो, बांध पोट'र नाख देवूं ? सुरजो कुम्हार इण में ही पड़नैं मर्‍यो हो। उण भैली तूं ई रळ जायी।"

"तन्नैं परमोद छाटणैं अर पोट बाधणैं री जरूत ही कोनी पड़ैं, मन्नैं पड़नो आवैं है।"

उणरा अैड़ा निरबैंभरिया बोल सुणनैं वो मैं सूं कापण नीं तो सोचण खातर जरूर मजबूर हुमग्यो। उणनैं बात संभाळण सारू जबरन धीर धरणो पड़्यो। अबै उण की जबावदारी नी करी। वो खोड़ री चुप्पी मार्गै घुळग्यो। च्यावं-च्यावं करती चिराट्या उणनैं अपरोधी लाग रैयी ही। अबैं वैं मथाणियैं सूं निसर रैया हा। मथाणियैं रैं परलै धोरैं सूं मणकार रो च्यानणो साम्हो दीख रैयो हो। बावन घरां री बस्ती मणकार री किणी थाड़ नैं उलांघतो च्यानणो टिमटिमावै हो। उण अदाज लगायो अजैं समक सोपो तो नी पड़्यो है। रावळ री कोटड़ी रैं मुंड़ागैं हुवण वाळी हताई अजे खीडी नीं दीसैं ?

बण उतावळ करण सारू, बळधा री काछ विचाळै हाथ घाल्यो अर बड़बड़ायो—"अैं भुसरा, जैं इया ई बीद पगलिया करता रैया तो घड़ी दो घडी में ई गांव नी पूग सकाला। अर तदताई तो साव सुन्याड़ हुय जामी।" बण पूठ मोड़'र देख्यो—दुरगली खामोशी चबाय रैयो ही।

दुरगली भी उणनैं कनस्या सूं जोयी, उणरैं चेहरैं मार्थै घिरणा लैंरायगी। पून री फटकार सूं आर्गै बेठैं रामूड़ैं रैं कानां में लगाया; फोवां

री मैंकार, उणनै सुगंधी रै बजाय दुरगंधी लखाय रैयी ही। धोळा-धुप कपड़ा में सजैडो रामूड़ो उणनै शैतान निजर आय रैयो हो। वण 'पिच' करनै थूक दियो। वण आख्यां उठाय'र घणी हूंस सूं अळगैताई जोयो। उणरै मीतूड़ै री गांव 'पूनरार' अबै घणो लारै छुटग्यो हो। भोत घणोलारै।

गवरू, पण साव भोळै मीतूड़ै रो चेहरो उणरै आगे ले'रायग्यो। जाणै वा सीतूड़ै नै कैय रैयी है, उणरी ठोडी पकड़नै—"सीतूड़ा ओ आपणी जात में सौदो क्यू हुवै ? और किण ई जात में तो नी हुवै; कांओ घणा काळा खाली आपा हीज चाव्या हा ?"

वो हँसतो थको भोळैपण सूं कैंवतो—'इण सारू हूं, कांयी जाणू मन्नै तो खुद नै भूंभळ आवै, पण परापरी री चलायोड़ी रीत नै कुण तोड़ सकै ?"

"सीतू थारै में भोळै अर डरोकरा दोनूं गुण लखावै।"

वो खाली मुळण नै रैय ज्यावतो। वा फेरूं कैवती।

"मनै ई कोओी सौदो करनै लेयग्यो तो ?"

"लेय ज्यावै तो लैय ही जावै..." वो धीरै सोक कैवतो।

इण बात रो निस्तारो खुद (दुरगली) कन्नै ई नी हो कै कोओी उणरै सुमरें हरजीडै नै पइसा रै लालच मे नांख'र उणरो ई सौदो कर सकै है। वा मायरी मांय अमूज'र रैय ज्यावती, सीतूड़ै सू करियोडै खुद रै सवाल माथै।

उणनै वो खोटो दिन याद आयग्यो, जिण दिन ओ रामूडो उणरै फळमै आयो हो, वा बळधा नै नीरणी नीर रैयी ही। उण दिन वा नूंवी काचळी अर कसूमल ओढणी में सजैडी ही, रामूडो उणने अेक निजर सू देखताई उण माथै रीझग्यो। उणरै हाडोहाड उणसू सौदो करणै री जचगी। होको पीवतै हरजीडै सू उणरै सौदे बावत बात टोरी। हरजीडै उण सू पाच सौ मांग्या पण आखर सौदो तीन सौ में तय हुयग्यो। वो सो रो लोट साई रो पकड़ाय ग्यो अर परसू शुक्रवार रो दुरगली नै लैय ज्यावणै री बात पकी करग्यो।

उणनै, जद आपरै सौदे री बात रो ठा लाग्यो तो उणरात वा सीतूडो रै खूवै सू लागनै आखी रात रोयी। वा सारी रात कळपती रैयी।

"सीतूड़ा, तूं म्हारै कटार मार दै पण, म्हारो सौदो नां-कर...तू जाणै कोनी सीतूड़ा रामूड़ो कियांकलो आदमी है। आपरी तो दो बीसी उमर ढळगी। उणरा हाण ढळैड़ा है। वो मनै रोजीना नूवै मरद नै सूपसी अर थारै बापू नै दियोड़ा पईसा तीजै दिन उगाय लैसी।"

सीतूड़ो डाफा चूक हुयोड़ो सो उणरा कळपता बोल सुणतो रैयो। वो आपरै बाप हरजीडै सू मोत घणो डरै। उण सू उपकार नीं चाल सकै। नी तो हरजीडो दाव (कटार) बिना बात कोनी करै। सीतूडै नै लखाय रैयो हो कै वो मरद नी है, डांगरां नै चरावतो खुद भी अबोल डागर हुयग्यो है।

वा फेरूं गिरबिरावंती रोयी ही।

"सीतूड़ा...कांओ-काओ सुपना देख्या हा अर कांओ हुवण जाय रैयो है। मीतू जकै सरीर रै खाली तू ई हाथ लगायो अबै उण सरीर ने कैओ जणा भोगसी। कांओ थारै आ बात दाय आयज्यासी ?"

सीतूडै री उवाज डूगे कूवै मांय सूं नीकळै ही—"दुरगली; अबै बापू साई लैयली...अबै की नी हुयसकै दुरगली अबै की नी हुय सकै। तनै ठानीं आपा वचन लोया'तो राणै परताप री आण लोयां...आपां राणै परताप रा बेली हां...बापू थारै सौदे री बात रामूडै सू करली...अबै जै तन्नै रामूडै नै नी सूंप सकै तो वांनै सरीर नाखणो पड़ै।"

"तो फेर दाव तो है थारै कन्नै ? वो पछै के काम आयसी ?" वो कापग्यो।

"दुरगली थारी हित्या करणै सू तो आछो है कै मैं खुद दाव री खाय लेवूं।"

"तो फर चाल रातोरात भाज ज्यावा ?"

"नी...नी...दुरगली भाजनै कठै जावांला...घणो अळगो आपां सू भाजीजै कोनी। जै भाज ही स्यां तो कांयी थारी इज्जत खाली म्हारै ई तणी रैय ज्यासी...अळगै उलांतरै नी भाजस्यां तो, ऐही मागण सादिया आपांनै ओलख लैयसी, अर आपा रै उठै आणै रो कारण पूछसी, पछै कांओ गत हुयसी तू सोच सकै। तन्नै ठानी कोओ सादियो [illegible] करण नै त्यार नी हुवै तो उणनै सगळी न्यात [illegible] पड़ै। अर पछै ज-
ज्यार— —

माई लेयेड़ी हुवै नो मोदो करणो ई हुवै । हां एक उपाव है...?"

"बोल मीनू...बोल वो कांई है...हूं तो की करण नै त्यार हूं ।"

"वो ओ है कै एकर तो तन्नै रामूडै रै सागै जावणो पड़सी, पण थोड़ा दिना पछै...हू तन्नै पाछो मोदो करनै लेय आसूं ।"

वो भी समझग्यो अर वा भी समझगी कै उणरी इण वात मैं की तंत नी है । रामूडो लूठो धनवाळ है । वो कदांत ही मोदो नीं करैला । वो न्यात जिमावणै रो दमखम राखै है ।

अबै वा भी सीतूड़ै री नाचारी समझगी कै सीतूडो की नीं कर सकैला । उणरै मुंडै माथै अेक मरैड़ी मुळक आयगी । वा बोली —"सीतू तू मोत डरोक निकळयो...साच्याणी भोत डरोक निकळयो...।" उण एक मरजोर निसकारो नाख्यो ।

तीजै दिन (आज) रामूडो न्योळी अंटी रै बांधनै अर हाथ में डाग लेय आयग्यो । उण हरजीड़ै रै डेरै रै आगै आपरी डांग सूं लीकटी खेंचदी । हरजीड़ै नै दो सईकड़ा देय'र दुरगली नै उण लीकटी सू बारै फदाक दी । अबै दुरगली उणरी ही । दुरगली घणी ई रोयी पण छेकड उणनै उणरै लारै आवणो ही पड्यो ।

दुरगली रो सोचणो जारी हो पण, रामूडै रै बतलाणै सू उणरी तिन्द्रा भागीजगी, "देख अबै रावळैरै मुंडागै सूं निकळाला जको सावळ जच'र बैठज्या ।"

रावळै री हताई अबै ई खीडी ही...लोगडा आपू आपरै घरा कानी जाय रैया हा । रामूड़ै नै देखनै सगळा उणनै बतळांयो ।

"कुण रामूडो रे !"

"हा बापजी !"

"किया आज कोओी नूवो सौदो कर ल्यायो कै रे ?"

"हा बापजी, 'पूनरार रै हरजीड़ सू कीयो है ।।"

सगळा ई जणा हेंस्या ।

"बेटो थारड़ो काम जबरो है रे रामूडा···फट चौथे-पाचवैं महीनै नूवी बीनणी लेय आवै ।"

"हाँ बापजी म्हा साटिया रो तो काम ही सौदो है ।"

"जवरो है भाओ।" इतो कैय'र लोग आपू आपरै घरां चल्या गया। दुरगली रै कानां में रैय-रैय'र लोगां रा साद सुणीज रैया हा कै 'रामूड़ा थारो काम जबरो है चौथे-पावर्वे महीणै नूयी बीनणी लेय आवै।' वा माय री मांय ही भूसळीज'र रैयगी। वण अेक दिढ निस्चै कर लियो••• मन ही मन पको निरणै कर लियो...'नी...नी...अबै तो आ हीज छैली (छैकड़ली) बीनणी हुवैला...अबै नूवी मां रै जाया लायसी।'

रामूडै रो भूपडो आयग्यो हो। वा उणरै कैयां विना ही गाडी सू हेटै उतरगी ही। उणरै कैयां बिना ई उण बळधां नै खूटै सू बांध दिया। रामूड़ै नै ठाडो अचरज हुयो—कै जको सगळै रस्तै ठसाठस ही वा अबै मतोमती जाणै-चूणै घर री ज्यू काम कर रैयी है। फैर सोच्यो—'टैम हू ममझावण करली है ला, कै अबै तो अठै ई रैवणो पड़सी।

उण पूछ्यो—'रोटी बणायसी कै ?'

"नी अबै रात घणी बीतगी अबै दिनुगै ई जीमस्या...अवार तो नींद आयरैयी है..." वा अंगडाई लेवतां बोली।

वो न्याल हुयग्यो कै आ इतरी देर मे इती स्याणी कियां हुयगी। बोल्यो "अच्छ्या तो मन्नै भी भूख कोनी, अबै तो सो ही स्यां...ले, आ पेटी अर वा खुणं मे पड़ी लालटैण, चसा ले !"

वण चुपचाप दियासलाई लेय'र लालटैण जगाय ली। फैर दोवू सोय-ग्या। उणनै तो पड़तै-पड़तै नै नींद आयगी, थकेलै रै कारण। पण दुरगली री आंख्यां में ऊंघ कठै ? उणरी आंख्यां आगै तो भोळै-ढाळै साव मजबूर सीतूड़ै री छिव डोलै ही। वण एक निमकारो नाख्यो। 'सीतूड़ा तू तो साव डरपोक निकळयो पण हूं तो प्रण कियो हो कै साटणी हुय'र भी 'अेक' री हुयसू...अबै मनै लागै म्हारै प्रण री घडी नैड़ी आयगी है।'

वण लालटैण रै च्यानणै मे जोयो। रामूडो मस्त नींद लेय रैयो हो। उणरै मुंडै मायै नींद मे भी जीत री पाश्विक मुळक खिल रैयी ही। वा घिरणा सूं बळगी, वा धीरै सीक बिना अवाज करयां उठी...अेक खुणै में पड़ै पीपै नै विना खड़को करयां अधर से नीचे भोकयो—भूपड़ै रै सगळै आगणं में किरासणी ही किरासणी हुयग्यो। पीपै नै पाछो सूवो करनै आपरी ओढघोड़ी ओढणी उतारी, ओढणी उतार नै उण किरासणी में

भिजोयली। पछै लालटैण नैड़ी सिरकायनै धीरै सीक पाछी सोयगी, किरासणी सूं भिज्योड़ी ओढणी आपरै माथै ओढली अर अेक पल्लो उणरै आधै अंग माथै न्हांक दियो; झूंपड़ै रो एक डोको खोस'र लालटैण सूं चसालियो, डोकै ने अेक'र रो धरतै लगाय लियो; अर पछै आप माथै ओढयोड़ी ओढणी रै लगाय लियो।

अेकै सागै ही जद च्यारूं कानी सं ओग रामूड़ै रै लाग्यो तो वो चिमकर बैठ्यो हुवणो चायो। पण बैठ्यो नी हुय सक्यो। दुरगली आपरै पूरै जोर सू उणरै बाथ घालली। वो पूरी ताकत सू तड़फा तोड्या पण वा भी साटणी री जायी ही...हालण नी दियो—बोली, "रामूडा ऊपर आळो सगळी अनीत देखै है।"

इण हरख सू तो कोई सती भी काअी बळती हुवैला !

रुध्योड़ा मारग

घर में बड़तां ई उणरै माथै में सगळी वे बातां पाणी में डूब'र दम तोड़तै मिनख री भांत ऊंची उभर आई।

मा रो रोस अर खीज रळियावणी सुर गूंजै—"खाली हाथ ई आयग्यो ना?" फेर दुसरावण लागसी, "हम्में भई तूं बूढ़े बारै और कांओ करसी॰ चाय ई तो छुडायसी।" फेर अेक लांबो निसकारो, "सुख कठे है रे सुख कठेई कोनी ओ तो भागां सूं ई मिलै—खाली ओ ई क्यूं रतनाराम भी तो आपरी मां रै अेक ई है पण चाय तो कांओ दाळ रो सीरो खावै तो ई मनाही कोनी...तनै दोस कोनो लाडेसर लेख बिधाता रा..."

फेर मां कीं ताळ तांई बोली रैय जावै...बोली रैय'र आगै कीं कैवण री भूमिका घड़ै, बापू री मूंफल परगासीजै—"लालू ल्या देंवतो रै पच्चास गिराम चाय, बापड़ी निकाळ लैंवती बडकां रो नांव।" बापू छिणेक खातर कीं सोचै अर भळै बोलै—"कहः नशो है, नशो क्यांरो है, माटो जलमायो है अंगरेजां ईं कीर मुलक मे। आप तो मरग्या बुयाग्या आगा अर ओ नफै रो भरियो अठै संभळाग्या खूब पीओ दिन मे पांच-सात दफा कोनी कोई बरजण आळो कोनी अर बरजै ई कुण ईं बिना तो उठतां ई दिनुगै-दिनुगै सगळां रै ल्याळ्यां पड़ै।" बापू छिणेक चुप हुय जावै।

अी घर में कांओ पूरै मौहल्लै में ई खाली वो अर उणरो बापू चाय नी पीवै। इण खातर ई उणरा बापू चाय पीवणियां नै जी भर-भर'र

माटै । बापू ध्यावग सू मां नै समभावे—"लाई दिन भर मूं सट'र आयो है आंवतां ई तूं गावणो सरू कर दियो..."

बापू चुप हुवै नहीं के इतरै मां री हळकी-हळकी गिरायां बितरण लागै।

"की रो ई बुढ़ापो विगड़ै तो पछै गावळ तो विगड़ै, पण तू तो करलै धन भेळो, फदाम थारै तो हेली बणै । म्हारो कांई म्है तो पका पान हां—साल दो साल दोरा-मोरा ई काट लेस्यां...पण तू तो कर धन भेळो..."

मां री सारा में कैयोड़ी बात उणरै काना में गरम-गरर मीसै री भांत ऊतरै पण फेर ई वो मून धारयां रावै, मून नै उण आपरै शरीर रो एक अंग बणाय लियो। वो बोल बाली सुन्न में गम्योड़ो मां आंगणै में परीठी री छोटी भीतळी मार्थ बैठ्यो मा-बापू री बंतळ सुणतो रैवै। बंतळ रो विषय गाली पाय ही घर री भूख सूं जुड़ता और घणाई विषय हुवै। उणनै चेतै है मा-बापू री इण बंतळ में समभ पकड़्यां पछै भोत कम औसर अैड़ा हुवैला जद दोवां नै हरख सू बातां करतां देख्या व्हैला। मां-बापू री इण बतळ सुणनै में बदजात सुगनड़ी (उणरी लुगाई) रोटी वाळ नाखै। रोटी बळनै री सुगंध मां रै नाक मे घुस जावै। पछैम मां रै जळजळाकर गुस्सै रो बेवाव उण कानी हुय जावै।

"टा नी हरमेस कठै गमेडी रैवै। किसो दिन इस्यो हुवै जकै दिन रोटी बाळियां विना रैय जावै। काम कठीनै ई करै है अर बाको कठीनै ई फाड़मी। काम तो काम रै भळ हुवै...आछो ढगळ पानै पड़यो—कोई काम ढंगसर को कर जाणै नी...जबरा फूट्या ललियै रा ई मारज्या मरोसै...खा लिया कमा'र तूं...गधै दोई कमाई अर आ गमाई...तूं माज्या राखी अर आ लेखै लगाया राखसी...म्हारै माटी नै दोय टैम तो न्हावण-धोवण नै चाहीजै। पढ़ी-लिखी कवको ई कोनी पण न्हासी-धोसी दो टैम जरूर। जाट री बेटी'र काकोजी नाम...देखी कोनी बालिस्टर री बच्ची नै। इयाकलां फरफटिया सूं घर कोनी बसै।" मां थोड़ी ताळ खातर बिसांई खावै पण उणनै लखावै कै हाल तो वा आपरी बीनणी नै चौथाई लवड़धकै को लैय सकी है नी आ सोच'र मां आपरी विगत री बीनणी सूं ताळमेळ बैठावतां थकां पाछो बोलणो सरू कर देवै।

"अठै तो आखी ऊमर खोदल्डो ई खोदल्डो करयो। कदै ई रात नै रात नीं जाणी अर दिन नै दिन सो को जाण्यो नी जणै जार-पार पड़ी। उठतां ई तो पक्को पांच सेर 'पीसणो' पीसणो पड़तो अर आज कल्यारां सू सेर ई पीसावो नी देखां-जोर आवै। काम-काज कीं'नै सुहावै है...चोखो खा लेवो, चोखो पै'र लेवो, हम पीया हमारा बैल पीया अवै कूवा दुड़ पड़ो...। अे आज देख'र कोनी चालै आरो कालै कुण धणी हुयसी। टैम लाग्यां कीरवादो ई खिडमी, देखाणी कियां पार पटकै...म्है दोरी-सोरी पार तो घालली आं में हुसी मूडै तीतरांळी...सगळा फटफटिया धूड़ में नहीं मिल जावै तो मनै कैय देया। बच्चुआ माजोला तो ई पार नी पड़ैला, आगै जमानो ई थारै माथै बांधै जेडो आय रैयो है..."

अेकल बोल्यां ई चल्यो जावणो मां री साध्योड़ी बात है...इया किसी मां बोलणै में गड़गड़ाहट थोड़ी ई चढ़ जावै...बिचाळै-बिचाळै ठैर-ठैर म्हारा मुंडा भी जोवै...सुगनड़ी कानी ई जोवै...मां भूल जावै कै उणनै हाल सुगनड़ी नै लबड़धकै ओरू' लेवणी है।

"करल्यो मजा...किताक दिन करो देखां...हाल तो तिलक काढीज्या है ठा: तो सूक्या पड़सी। बूहा तो पैली भी हुया करती, मजाल है मूडो दीखज्या, पण आजकालै तो सरम के चीज हुवै आ जाणै ई कोनी। उघाड़ै मुंडै सांढ नांई आगी कर निकळ ज्यावै। म्हारै काळजै राध पड़गी आं बूहा नै देख देख'र पण की नैं कैवां कूवै ई भाग पड़गी। आंधै आंगै रोवो अर नैंण गमाओ। म्हारै माटाळी काम मे साव कम कस अर खावण-पीवण मे सासवां सूं आगै। चाय दूजै कीनै ई मिलो ना मिलो पण अे तो दिनुगै सूणी त्यार...। पण पी सी कठै सू खसम ल्यावै धणी नी...।"

अर बात जठै सूं सरू हुयी उठै ई आय'र सांस खावण लागगी। मां री सास खावण री फूरसत नै बापू भरणी सरू करदी—"तूं तो इयां कर... चायलारै सती हुज्या..." बापू मुळकै—"दोवू बिना पीयां की मरां नीं तो मरै तूं ई परतिया को नी...ई रांड ऊकाळी में कोई नशो कोनी पण पीवै *क्यूं कोनी मीठी बळै नी...चीणी हुवै नी मांय आठ रिपिया कीलो रो...* नशे री बात हूंतो इं में जद जाणू जद लूण घाल'र पीवै..."

बापू बात ई चिणखो लागै जैड़ी करदी अबै मां वोली कीकर रैय जावै।

कुम्हार-कुम्हारी नै नीं न्हावड़ सकै तो गधड़ी रा कान खींचै।

"हां-हां, अबै इती ई बाकी रैयी है बुढापै में लूण री चाय तो पाय ई सी...आ तो उम्मीद ई ही। ई खातर ही तो बडो करयो हो। दसवीं तांई पढायो हो (अबै मां नै कीकर समझाऊं कै मा आ बात मैं नीं बापू कैयी है) ताकि लूण री चाय पा सकै।"

उणरी होड़ भळै उणरै पाडौसी रतनाराम सूं हुवै।

"रतनाराम भी अेक ई है पण घर में चीज बसत री थेड़ लगायोडी राखै। बापडो मां-बाप सार समझै। रिण उतारै...। ई नै कैठाः ओ तो अबै अफलातून हुयग्यो। खेजड़ां नै कूण बडा करया हा। खुद रात-रात भर गीलै में सोयी अर इनै सुकेड़ै मे सोवाण्यो। लगातार तीन-तीन साल ताई काळ पडया पण ई नै तो ठा ई को पड़ण दीयो नी। मजूरयां मायं जा'र दोरो घणो पढायो है। लाडां-कोडा परणा-पता दीयो...घोड़ सी बीनणी ल्याय दी भळै ई म्हा में कोई कसूर हैं ? इसो की करो पण ई रै कै अेहमान है—कदै ई सोनै री तीब ई को देखीनी पण ईरी लुगाई रै तो भरी तीन घाल्यो अलबत पढ्यै-लिख्यै रै लारै आई है साव कोझी लागसी म्है तो म्हा कानी ऊंतण्या ई तण्या—पण अ ई ओ कै जाणै ई बात नै। दसवीं कराया पछै अेक साल ताई नौकरी खातर इयां ई भटकतो फिरयो तो ई म्है जाणो लाई नै कै तग करां नौकरी किसी ई रै हाथ री बात है। नौकरी लागसी जणा हाफै ई इसो कीं ठीक हुय ज्यासी-पण अबै किता ई दिन हुयग्या नौकरी करतै नै आज फगत दिनुगै नौकरी माथै जांवती वेळा इतो कैयो हो बेटा आंवतो एक पाव चाय लैय आई। जाबक नीवड्योडी है पण सफा खाली हाथ आयग्यो। ठीक...!"

मां आपरो लांवो भाषण दैय'र चुप हुय जावै।

अबै वो मां कनै आवै। बेबसी सू उणरी आंख्या भरीज ज्यावै। दिनुगै वो मां सूं क्यू कूड़ो वादो करग्यो आ जाणता थकां भी कै पूरो अेक महीणो हुयां सू पैलां वणरै हाथै एक पईसो नीं आय सकैला। अर बिना पईसा वो मा री मगाई चीज कीकर लाय सकसी।

दिन में उण एक दो दफा जरूर ओ दिरढ निश्चै कियो हो कै वो जे. ई एन. सू एक'र पाच दस रिपिया उधार मांग लेसी अर पछै मस्टर

रोल धणसी उण माय सूं कटा देसी पण जद-जद ई जे. ई. एन. उणरै सामै पड़्यो उणरी हिम्मत जबाब दैयगी। वो पईसा मांगण रो साहस नीं कर सक्यो।

लूठी पगचंगी कर'र तो वो वाटर वर्क्स री इण डेली वेजेज री नौकरी नैं पाय सक्यो है अर इण में ई विचाळै पईसा मांग्या सू कांअी ठा: अफसर नाराज हुय जावै तो ? तो वो आ कळपना कर'र मन ही मन धूज ग्यो। नौकरी खातर रुळियार गयोड़ा लारला साल उणरी आंख्या आगै लैराय-ग्या।

वो आपरी मां सू माफी मांगतो थको गिडगिडावण लागग्यो—

"मां हूं गुनहगार हूं लावण रो कौळ करयां पछै ई हूं लाय नीं सक्यो। म्हारी नौकरी नैं पच्चीस दिन पूरा हुयग्या। पाच दिन पछै मनै तिणखा मिलसी··· उण दिन मैं तनै पूरी एक कीलो चाय लाय देसू। ओ पाच दिनां रो कष्ट मेळो कष्ट है, बाम सू उधारी लैय आवो। दिनूगै सोच्यो एक'र अफसर कनै सूं पईसा लैय'र चाय लैय आवू पण मां हाल कच्ची नौकरी हुवण सू मैं ओ साहस कर को सक्यो नी।"

पाणी सू भर-भरीज ज्यावै आंख्यां। एक नाजोगी छोटी सीक चीज खातर कितो काळजो दुखायो है मैं मां रो।

"आ बात तूं दिनुगै ई बताय देंवतो···। हूं इती बातां कैंवती ई क्यूं, इता दिन धिका लिया जणै अबै किस्सो पांच दिन कोनी कढ़ै हा···हू ई की मोकळ मुंही हूं ई घणी...वा लाडो वा चोखो...ले हाथ धोयलै, बीनणी थाळी ल्यायी..."

नूंवो भोसम

कुवारो कांधे गू हेटै मेल्यां पछै, उण गाव निचैताई सू सांस लीन्ही। सीन्ह हूयू गुरजी कानी जोयनै अेकर जोरदार आळस मोड्यो। टाली शरीर रै किण अंग में सू तीन-चार कटका कटीड़ करता निकळ्या। उन्हाळती सूं हथनियो भरनै वाड नेड़ै बैठ'र मूंडै आंख्यां माथै केई छावका मार्‍या। बाकी सारै रैयो जकै पाणी नै सिर माथै उन्हा लियो।

उणनै लखायो जाणै ठंडो पाणी उफळनै डील रै पोर-पोर में पैरग्यो हूवै। वो सोचै—ओ पाणी भी कैड़ी सुखदायी चीज हुवै, आखै दिन रो आधो थाकेलो तो एक डोलियै पाणी सू ई जावतो रैयो। अेक डोलियो फैरूं डोळण री इच्छया हुई पण आगै उन्हाळिये में कम पाणी हुवण सूं उणनै आपरी इच्छया दाबनै राखणी पड़ी।

उण पाणी भरतै मूंडै नै पूछ्यो नीं। आलै मूंडै माथै झीणी-झीणी पून डाढी ई सुवावै। वो डोलियो लियां बाड़ कनै ई बैठ्यो रैयो।

मूंडो धोयां पछै सदीव ई वो अेकर कीं ताळ तांई मचली माथै आडो हुवै। जठै तांई सीजणी आ नी कैय देवै—भाखर बाजण री वगत हुयगी है, हू आटो ओसणू, थै निमट-निमटार आय ज्यावो। वो मशीन रो गळाई लोटो लेयनै धोरां कानी निसर जावै। धोरां जावै तो वो धोरां माथै ई घेयो जेज निमट'र आया पछै रेत सू हाथ मांजतां-मांजतां खेलण लाग जावै। टंडी-टंडी रेत उन्हाळै में हाथां-पगां रै घणी सुवावै। वो आखो दिन लकड़ियां फाड़ै। लकड़ियां फाड़नो उणरी बारूं मास री धंध्योड़ी कार है।

अैड़ी बात नीं है कै उणरी जात आळा सैंग लकड़िया फाड़ने रो ई काम करैं। कैयी उन्हाळै सियाळै चेजै-कमठाणै जावै, कैयी उणरै दांओ लकड़ियां ई फाड़ै, कैया रै दो बीघा जमीन है, जका छव महीणा उण सू उद्यम करै। पण थितू लकड़ियां फाड़नै रो काम तो एक वो ई करै, चावै किसी ई रुत हुवो। लकड़ियां फाड़ती वेळा वो घणी ई सावचैती वरत। हाथ-पग, आंख-नाक री, पण नहीं-नहीं करता पांचै-सातै एकाध लकड़ी रै किरचै री लाग ई जावै, अर लागै जकी ई घणकरी गोडा सू नीचै जठै धोती सू उगाड़ी पिंडघा हुवै। उण लाग्योड़ी ठौड़ वो निमट'र आयोड़ै पाणी गूं वाळू रा आला पींडिया बणाय-वणाय नै चेपै। उणरै रेत दुआई रो असर करै। दूजै दिन लाग्योड़ी माथै खरूंट आय जावै।

"तो अबै वाड़ कनै ई बैठ्या रैसो कांओ ?" तीजकी कैयो, तो वो गोडां माथै हाथ देवतो उठ्यो। मुडै माथै कंवळास सू हाथ फेरयो। पाणी सूक चुक्यो हो। उण डोलियो सागी जाग्यां राख्यो अर मंचली नैडे आयो तो मंचली री दसा देख नै ई सोचण लागग्यो। एक आ मचली ई लायण उणनै किनरो आराम देवै, फेर भी बापड़ी री कांओ दसा हुय रैयी है। हुवै पण क्यूं नी, ईस-सळू तो ठाः नीं कद रा है, मूंज नै ई बापड़ी नै दस साल नैडा हुवण ढुका है। ठौड़-ठौड़ सू खुस-खुस नै नीचै लटकगी।

उण मंचली माथै बैठनै नीचै जोयो—च्च्च...च्च...च्च लै भई गिणती में ई नी आवै—एक एक करतां खुस'र बणगल रा आधै सू घणा तातां धांड्यां री दांई लटक रैया है, विचाळै धूब पड़गी जकी न्यारी। अबै आनै गांठ्यां दैय-दैय नै कितरा दिन धिकावुंला-मरचोडा रो कांओ जीवै। मूंज रा लटकता तांतां नै देख'र उणनै टावरपणै में बाबै री सुणायोड़ी एक काणी चेतै आयगी कै आगै कोरवां-पाण्डवा में एक दादो भीसम हुया करतो, जको बाळ-ब्रह्मचारी हो अर मरयो जद तीरियां माथै सोयनै मरयो, ठाडो ई अपरवळो हो भीसम दादो...वियां अपरवळी तो हूं ई कांओ कम हूं आखै दिन ठूठियां रा भोड बाढू...अर आयण आयनै उणरै (भीसम) ई दांई इण मचली माथै सोवू, इणरै अै लटकती मूंजेवड्यां तीरियां दांई तो लखावै है—उणनै आपरै सोचणै माथै हेसी आयगी।

हेंसी ठम्यां पछै वो फेरूं सोचण लागग्यो—बापू कैंवता, भीसम

वापड़ें आखी जिन्दगाणी मे दुख ई दुख देख्यो अर पछै बुढ़ापो सुधरचो जको ई जुध में। बापू कंवता—भीसम'र कोरू-पाण्डू अे सगळा-सगळा केई सैंकड़ू बरसां तांई जीवतां, हुंह क्यू कोनी जीव सकै हा, वो सतजुग हो सतरै पाण जीवता लोग, एक-बीजै नै चांवता लोग। अबै तो सैंकड़ै किणनै हुवै, पेंसठ रा ई कोई कोई सा हुवै। आदमी आदमी रै बटकी बोढ़णी चावै। कोई नित चावळ सिजावै, केई लाघण ई काढै, पण किणनै जोर, कळजुग है, पण म्हारो ओई खाली गरीबां रै खातर, पईसांळा री तो ओई हाजरी भरै। गरीब जै साठ बरस ई जीव लेवै तो घणी है, उण खातर तो। इतरी में ई नाक नाक आय जावै।

हूं अजैस दो बीसी उमर को खाई नी पण लागूं जाणै तीन बीसी रै नेड़े उमर लैय लीन्ही हुवै। चांखी भी है, ओपै है मनै उमर। साठ बरस सूं जै दोय बरस और ऊपर हुवै तो और ई ओपै मनै आ उमर...अबै किणनै चाईजै जुवानी, जुवानी तो मां-बापू रै सागै ई मरगी ही...कांई करणो है जुवानी रो...अठै तो आखो दिन लकड़ियां फाड लेवू जितरी जुवानी चाईजै, इतरी है। उण री आख्यां में पाणी साचरग्यो अर मुंडै माथै मुळक आयगी। वो छाती माथै वेगो-वेगो हाथ फेरतो रैयो। वो मांय ई-मांय अमूझ रैयो हो। जाणै उण की सांतरी चीज गमाय दी हुवै।

पिछतावै सूं तो खाली दुख हुवै। वो इण बात नै जाणै, पण फेर भी उण रै आगै पिछतावै आळी ढकी-ढूमी वांतां उधड़ण-उधड़ण लागी।

हां याद है, वो अर उण रो मोटो भाओ छोटा थका ई हा कै उण रै बापू री आंख्यां जांवती रैयी, पण फेर भी रड़-भड़ नै कियाई कर'र बापू दोवू भाया नै पाळया। मोटै भाओ रो ब्याव बापू जीवता जीवतां ई कर दियो। मोटै भाओ रै ब्याव रै दूजै-तीजै साल ई एक एक साल रै आंतरै सू मा-बापू सरगां मेंळा हुयग्या, घर में खाली दोवू भाओ। मोटै भाओ रो मुकलावो अजै हुयो नी हो। पण भलो मिनख भोजाई रो बाप, मुकलावै रै दस्तूर कियां बिना भोजाई नै पूगायग्यो। डैण-डैणी लारै सजै सारू दाणा ई खिडाईज्या, पांच पचीस माथै ई हुया। मायाळा पईसा दोवू भाओ कार करनै चुकाया। उणरी भोजाई रामजी रो जीव आवतां ई घर सम्हाळ लियो। मा-बापू रो औसर करयां पछै घर मे धादो दाणो

ई नीं हो, पण भोजाई नाक सळ कदेंई नी घाल्यो। कदैई कोई कमी परगामी नीं। आथण काम कर'र आयोड़ा नै प्रेम सू खीच घालती।

दोव भाओ क्रिया ईं कर'र आघो धिकावंता। धीरै-धीरै रामजी री संजोवण, घर में नानकड़ा ईं आया, खरचै में फैरूं वधैपो हुवतो। एकाध वार तो नी, पण पछै ओ खरचो अचेरो भी लागतो, खाली मनै ई नी भायै-भोजाई नै भी, पण सांई री कुदरत नै कुण पूगै। दोवूं भाओ जिया-तियां कर'र संग जीवां रो पेट भरता।

इण हासातोड़ै में उणरी उमर व्याव री निसरणी रै गातां सू आगै निसरगी। अैडी वात नी कै उणनै छोरी नीं मिलती। व्याव सारू की तो चाईजै ई। पण उण अर उण रै भाओ कनै तो वा 'की' ई नी ही। भाओ-भोजाई रात्यू उणरै व्याव री चिन्त्या मे घुळता। एक-दोय दिनां री विचाळै-विचाळै उणरो भाओ मजूरी खोटी करनै, उणरै व्याव सारू तड़फा तोडणनै ई जावतो। घणो नी तो आगै बेटी रो वाप चांदी री मांकळी-वोरियो अवस मागतो, पण उणरै भाओ कनै तो वो ई नी हो। टैमोटैम जटै दाणा वापरै उठै साकळी-बोरियै री बात ई क्यू करो। भाओ हारनै घरै आय जावतो, पछै उण दिन री रोटी भाये नै नी भांवती, भायै-भोजाई री अैडी कळपण सू वो कायो हुय जांवतो। छैवट उणनै आखतो हुय'र केवणो ई पड़तो।

"भाया, थानै म्हारै व्याव री इती कांई चिन्त्या लागगी?"

भायो रोवणवाळी मुळक मे कैवतो—"चिन्त्या...अठै तो पहाड़ वण रैयो है चिन्त्या रो माथै ऊपर।"

"वा ओ वा भाया, आ ई कोओ वात हुयी, ईयां हूं काओ छोरी हूं जको थैं इतरा डरो अर कळपो...आपणी जात मे तो घणा ई कुवारा रेवै।"

"नही रै भाओ, आपणी जात में रैवता हुवैला पण आपणै वडकां में तो कोई नी रैयो, कदास आपणै ई सौ-पचास बीघा जमड़ी हुवती।" आगै भायै सू नी बोल्यो जांवतो। एक चितराम मंड जावतो।

साल-साल रै छेड़ै सू मां-वापू नै सौ साल पूगणा अर उणरो सेत -बाणियै रो हुवणो, उपरात पाच छः साल री बैगार काटणी। पण हुवो-

हुवावो, अेढ़ो तो मिनखां रो सो काढ़ दियो। कोओी अमीणी तो नी देय मकै कै थारा मां-बापू आकडां में फिरै घूड उडावंता।

वो भायै नैं समझावतो—"भाया अणैसो क्यू लावो, हूं थानैं म्हारै ब्याव खातर जैं कदेई दो जबान केवू तो जवान बाढ नाख्या, आपां तो फूटरा हिलमिल'र रैयमां।"

"नही आयी तू नीं जाणै, अेई सागण न्यात विरादरी आळा कालै मां-बापू रैं अेढे नैं सरावैं हा, जका पाछा नाक माथैं मारण लाग जासी... काओी करचो मां घराणो, माओी तो टांड सो कुवारो फिरै...इण खातर भाओी जीवतैं जीव नैं मो की करणो पड़ै।" भाओी रैं मुंडै माथैं घोळक मी पूतण लाग जांवती।

वो जाणैं मागण वातनैं, कैं भायैं नैं वेटी आळो वाप क्यूं खाली काढ देवैं। मैंग बेटी रा बाप जमी टटोळै, घर जाग्यां देखै, पछै वेटी देवैं, सैंग धन-डांगरा अर घर-गवाडी रैं लारैं वेटी देवैं। टावर (छोरो) नी देखैं, उणरा गुण-औगण नीं देखैं। जबरी है उणरी बिरादरी री रीत। असल मे साकळी-बोरियै री वात तो पछै है अर जकै कनैं इतरो सरजाम हुवै उणरै खातर तो माकळी-बोरियो भी भारी नी हुवै, एक मैंस वेचै उण में सैंग हुय जावै।

उणरैं भाओी कनैं इण मंहगाई रैं जुग मे नी हुय सक्या सांकळी-बोरियो। विनां साकळी-बोरियै रैं वो कीकर परणीज सकतो। पण फैर भी व्याव तो उण रैं हाथ री लीकटयां में मडचोडो हो, सो हुयो।

उणरी उमर रा पागड़ा तैंतीस-चौतीस नैं पार करग्या जणै उणरी भोजाई री मोटी वैन विधवा हुयगी। भोजाई री बैंन रो मोटचार दम-घामी रो रोगी हो, एक दिन मर पूरो हुयो। भोजाई री बैंन रा हाथ हुळका हुयगा। पण उणरा हुळका हाथ छोटी बैंनड नैं नी सुवाया। उणरै ई तो देवर कुंवारो हो। भोजाई भाओी सूं गुरवत करनैं एक दिन उणनैं पूछवायो।

"लालजी थे तो जाणो ई हो उण वापणी उण खसम रो कांओी देख्यो हो, वो खाली जाग्यां रूंध राखी ही, कोरो अडेखण हो।"

"कुण माभी?"

"कुण पछै कुण, म्हारी मोटोड़ी बेन लायण तीजूड़ी ।"

"हां...आ तो थांरै बापूजी नै पेलां सोचणी चाईजती ही ।"

"मिनख रै किसो माय वडीजै ओ लालजी, अर पछै रोग दोख तो सारै ई किणरै लायण तीजा रै करमड़ै में ओई चिडपिडो मुभाग लिख्योडो हो।"

"......" वो चुप रैयो।

"लालजी अेक बात केवू, हुयमी तो छोटै मुंडै री मोटी बात, पण फेर ई..."

"केवो भाभी हूं कांओ थांरी बात रो दोरो मानू ।"

"नही दोरो तो कदेई नीं मान्यो पण कठेई थे उत्तर देय दियो तो म्हारो कांओ माजनो रैयमी ।"

"क्यू माजनै आळी अैड़ी कांओ बात है ?"

"है जणै ई तो—हूं पीरै सू आई तो बापू घणा गळगळा हुया, रोवण लागग्या—सोनको तू थारै घरै सोरी-सुखी है पण लायण तीजूडी रो कांओ हुयसी, जणा हूं वांनै की भरोसो देय आई ।"

"भरोसो। कांय रो भरोसो ? म्हारै कोओ वख पड़ती है तो केवो ।"

"है तो वख पड़ती ई...।"

"जणै केयनै देखो ।"

"कैय दू ?"

"हां...हां...।"

"हूं थानै वहनोई बणावण रो बापू नै केय आई ।"

"भाभी ? ओ कांओ भरोसो देय आया ।"

"ओ तो मनै ठाः ही, आ कीकर हुय सकै, म्हारै मोटयार सूं छोटा देवरजी अर म्हारै सू मोटी बेन नै वै लुगाई कीकर मान सकै ?" भाभी रा इसका फूटण लागग्या—"अठीनै देवर कुंवारो, उठीनै बेन विधवा।"

"नही भाभी रोय नै क्यू मन मेलो करो, कोई कुंवारो नी रैवेला थारो माजनो राख सू ।"

"नी! लालजी! सांवरिया देवर तो देवै तो जुग में अैड़ा ई दिज्यो ।"

भोजाई री वात राखीजी, उणरो ब्याव हुयो। पण नी वो कांय रो ब्याव हुयो—चाळीस री लुगाई चौतीस रो वींन। अर पछै लुगाई ई दमै री मरीज। पैलडै मोटचार सू वा आ मोटी चीज सागै ई हुय आई ही। वां दोवू नूवा परणेतां खातर भाअी-भोजाई अलग सू झूपड़ो वांध दियो। पाच माल सू वो इण झूपड़ै अर उण रोगल लुगाई रै सागै रात वासो लेवै।

उणनै याद आयो—वापू कैंवता, भीसम वाळ-ब्रह्मचारी हो, पण वापू नै नी ठा: हो कै उणरो ई अेक वेटो भीसम हुयसी, साव वाळ-ब्रह्मचारी। उणरै वाप री अेल चालेला, पण खाली अेक वेटै सू। दूजोड़ो वेटो तो भीसम है नी—उणरो काम कोई अेल वचावणो थोड़ो ई है, उणरो काम तो तीरियां माथै सोवणो है।

अेकर आमै कानी जोयनै वो उठ वैठ्यो हुयो।

"ले भाअी कितरी जैज हुयगी धोरियां माथै ई वैठ्यो हूं-हुं ई कैड़ो पागल हू।" डोली हाथ में लेयनै आंख्यां पूछतो वो आपरै झूपड़ै कानी रवाना हुयग्यो।

सांसर

सनिवार रा बंक रो काम ओर दिनां सूं वेगो ई सलट जावै—बियांस सलट कांई जावै —सैंग बाबू आसै-पासै रा हुवण रै कारण इण दिन वेगा ई टाबरां मैळा रळना चावै। इण खातर जरूरी-जरूरी काम मलटायर बाकी छिटपुट काम सोमवार खातर पेंडिंग राख देवै क्यूं'क अगलो दिन दीतवार हुवण सूं वैं काम हू तो इया ई को सकैनी—खैर।

शनिवार अर दीतवार टाबरां में बितायां पछै सोमवार रा तो झांझ-रकै ई घूपरळो चालनो पड़ै। क्यूं'कै हूं जकै कस्बै री नौकरी करूं उण तांई दिनूगै बेगो पूगण रो साधन छव बजी आळी ट्रेन ईहै। छव बजी आळी ट्रेन दिल्ली सूं आवै, उण रै पछै अगली ट्रेन साढ़ी दस बज्यां आवै। उण सूं पूगण रो सवाल ई नीं, क्यू'क बेंक रे टैम तो वा अठै आवै अर रही बात बस सूं पूगण री' सो पूछो ई क्यूं—राम रुखाळो है—अेक तो टैमसर आवण री गिराटी कोनी अर दूजै म्हारै जिसा नितरा हिंडा खावणिया नै बस री अेम० एस० टी०, ई को पोसावै नी। ट्रेन री अेम० एस० टी० रो बापड़ी रो लागै ही कांई है। बस री अेक महीणै री अेम० एस० टी० में ट्रेन री साल भर री जात्रा हुय जावै।

रात मोड़ै तांई हताई करणै सूं आज आंख की ज्यादा देर तांई लागगी। उठचो तो देख्यो—छव वज चुकी ही। मरा दिया—आज तो बसड़ी सूं ई जावणो पड़सी दीखै— लागग्यो दीखै रुपिया आठ रो बटीड़ पण कांई ठा ट्रेन लेट-सेट ई हुवै—थोड़ी घणी लेट तो हरमेस ई हुवै ई है।

घरवाळा माथै कूडो-माचो भीकतो—सगळा नितकरम करतां कुल पन्द्रह मिन्ट लगाया अर ले साईकिळ ठेसण पूगग्यो। गाडी तो पूण घंटो लेट है ठा लाग'र ध्यावस हुयो—खैर सल्ला मौड़ो उठ'र ई टैमसर पूग तो ग्यो। कई देर रा आळा टोळा रै पछै ठेसण री बारलै पासली दुकान सूं पान खाय'र आयो जितै में तो गाडी स्टेशन कनली गोळाई सूं मुड'र मुंडो निकाळ रैयी ही।

गाडी में म्हारो कायदो है कै हूं हरमेस ऊपर वाळी सीट जोवूं—ठाट नूं मांवतो जावूं। दिन उगणवाळो हुवण रै कारण ट्रेन रै अठै आंवतां-आवना लोग मुंडो धोयनै नीचै आळी सीट माथै बैठ्यो हुय जावै।

अेक खाली सो डब्बो देख'र हूं उण में चढग्यो। ऊपरआळी सीट माथै चढण खातर मतो उमावै ई हो कै इतै मे किण ई बतळायो—

"कियां बाबूजी ?"

हूं पाछो फुर'र जोयो। बतळावण आळै रो चेरो पैचाण री कोसिस करी।

"कियां ओळख्या कोनी कांई ?" फेर बण खुद ई समस्या सुळझा दी—ओ तो मैं हूं रामेसर-दुळचासर आळो।"

अबै मनै ई चेतै आयग्यो—अरै हां लारलै दिनां दुळचासर में लोन बांटण खातर गया हा जणा हजार रिपिया रो लोन इणनै भी दियो हो। "ओळख तो लियो भाई पण काई बात है ओ-sss" मैं उणरै मुंडायेड़ै माथै अर मफाचट दाढी मूंछां कानी जोय'र कैयो।

वो मुळक्यो—"ओ, तो हरद्वार जाय'र आयो हूं।"

हूं ई मुळक्यो—"तो काई लोन इण खातर ई लियो हो ?"

वो हँस्यां बिना को रैय सक्यो नी—"लियो तो घणो ई को हो नी पण अबै इयै खातर ई समझो।"

"कुण हा ?" मैं बूझ्यो।

"थे समझो जकां में कुण ई नी।"

"तो कोई पारको पुन्न कर रैया व्होला। बार गांव मे तो थारै रीत हुवै कै कोई आकल हुवै तो फूल को घाल सकै नी। कोई प्यारो सैण हुवै जको घाल आवै। फूल जितै बारणै पड्या रैवै। घर री पुन्याई को बधै

नी। गांवरां री आ मानवो भळै हुवै।" "ओ तो थारो कणो माचो, गाव में रीतां तो इसी ई हुवै।" इतो सो कंय'र चुप हुयग्यो। उणरै गळै में घणी सारी गंगाजी री माळावां पडी ही। कनै ई सीट माथै लीक-लिकाट्या काढघोड़ी एक बेंत पडी ही। एक डवियो गंगाजळ सूं भरियो पड़्यो हो। अर एक थैलियो ई पड़्यो हो। वण थैलियै में हाथ घाल्यो अर लफैक चावळां री फुल्या अर मिंयोड़ा मखाणा काढ्या—"ल्यो थे भळै कणै मिलस्यो...परसाद..."

"पैलीपोत मनै ई?" हूं सकतो परसाद लैंय लियो अर उण मांय सूं थोड़ो-थोड़ो तीन च्यार कनैली सीट माथै बैठ्या गांवैड़्यां नै बाट दियो।

गांवैड़ी परसाद लैंय-लैंय'र आपरै खूंजा में घाल लियो। सगळा आप-आप री जेब सूं अेक-अेक रिपियो निकाळ'र रामेसर रै खोळां में धर दियो। रामेसर नां नुकर करी—"अरै ओ कांई करो माइतां।"

"नां लाडी ओ तो हुवै ई। अलबत हर री पैड़ी जाय'र आयो है। इतो पुन्न तो म्है ई कर सका। अर पछै थारै सूं सगळा बडा हा पगां लागै तो थारी मरजी है नही लागै तो कोई अणसर्‌यो को पड़्यो नी।" सगळा अेकै सागै केयो। हूं ई अेक रिपियो काढ़'र झट उणरै खोळां में धर दियो। गांव करै सो गैली।

रामेसर गांवैड़्यां री बातां सूं संकग्यो। वो नीचो लुळ'र सगळां रै वारी-वारी सर पगा लाग्यो। जीवतो रै री सगळां आसीस दी अर पछै सगळां ई जै गंगा माई री बोली।

अजब हिंवळास हुवै गांवरां में।

बणीसर री ठेसण आवतां ई सगळा गांवैड़ी अेकै सागै उतरग्या। अवै डब्बै में फगत हूं अर रामेसर दोवा दो रैयग्या। मनै बात करण रो कोई सिलसिलो नी मिल रैयो हो। रामेसर चुपचाप बैठ्यो हो।

"कियां कोई भायपै मे ही हो काई?" हूं मून-तोड़्यो।

"नही।" उण छोटो सो पडूतर दियो।

"तो पछै?"

रामेसर अबकाळै कोई पडूतर ई को दियो नी।

"काई बोलूं बाबूजी! बतावतां ई सरमं आवै।" रामेसर जीण संकै

री लाद नीचै दबग्यो हो।

"अरे वा हरद्वार जाय'र आया हो आ बतांवता सरम आवै कै पलाणै रा फूल घाल'र आयो हूं।"

रामेसर रो मुंडो उतरग्यो। रोवणवाळो सो लाग रैयो हो। उण कैयो, "था अंक्यारी सरम—थे अलबत पढ़्या-लिख्या हो हरेक चीज नै जाणो—स्यो बताऊं..."

अबै वो सीट माथै जच'र बैठग्यो। पगां री खड़ावूं धरतै खोल'र पालथी मारली सीट माथै।

"थे गाव में लोन बांटण खातर गया हा नी। उणरै दूजै ई दिन म्हारै हाथ सूं अेक ईन्याव हुयग्यो। हजार रिपिया थे देय'र गया ई हा, हूं उण दिन ई सिझ्या भूरजी रो ट्रैक्टर तोई कढावण नै खेत लैयग्यो। च्यानणी रात ही। रात नै अेक बजी ताई म्हारै बीघा चाळीस अेक जमडी सुधार नांखी। ट्रैक्टर माथै भूरजी रो छोटोड़ो बेटो लादू हो। लादू म्हारै ई सायनो है। तोई काढणै रै आधेक घंटै पछै लादू ताकड़ करणी सरू करदी कै रामेसर अबै रुवयां पार पड़ै कोनी। गाव ई चालस्यां। दिनुगै भळै लोकां रै जावणो है।

हूं ई पछै क्यू रोकतो। कैयो चाल तो चाल थारै जचगी जणां। लादू नै ट्रैक्टर चलावता देख'र म्हारै ई जीव मे आयगी। आधीटै आंवता मैं केयां—लादू थोडो मनै ई चलावण दे यार। उण बरज्यो नां तनै ठा तो है कोनी गैयरां-धैयरां री। हूं जिद कर्‌यो ई में पछै कांई भेद है, चलावै तो लुगाई रा जाया ही है नी। हूं घणो कैयो जणा—सीधो सो गैलो आयो। जणा वो स्टेयरिंग हळावणी वता'र म्हारै कनै ई लारगै पासी बैठग्यो। सूबो रस्तो हो कोई डर आळी बात ई को ही नी, रात रा रस्तो इयांई सुनो रेवै। ताल आळै ऐरियै कनै आवता ठा नी कठै सू ट्रैक्टर रो हरडाट सुण'र चाणचक अेक चिमकोर गावडी आगै आयगी। म्हारै स्टेरिंग घुमांवता-घुमावतां ई गावड़ी रो पग ई टूटग्यों दीसै हो। लादू फुरती सू ट्रैक्टर सम्हाळ लियो। उण जाड़ भींची—"जिद कर'र काढलियो नीं ताम।" उण ट्रैक्टर रोक दियो। दोवूं नीचै उतर'र गाय कनै आंया। म्हारो मुंडो पोळो हुयग्यो। आ आछी गिरह थाई नी।

गाबड़ी नें अठी-उठी देखी फोर'र—अेक पग में खौरसल आडा ले जांवती।

हूं न्हाटू कानी जोवै हो। आप कानी देख'र उण केयो।

मुंडो काअी देखै—करो पाटा पीळो—अर दिनुगै धणी वीं कैंकेंठ्यो।

न्यारो—पैली ही रोयो हो नी अे लकड़ा हरेक रै तावै को आदै"

ओळखै है कांअी की री है आ धेन ?" ग वात

हूं नाड़ हलाई। गाओ

"तो बैठ, उणनै यापड़ै नै खबर तो कर कै थारो धीणो सवायो करम आयो हूं।"

गांव आया जितै भ्रूंभरको हुयग्यो हो। बूढा-ठेरा नित-नैम में लागग्या हा। हूं पैलीपोत घरै नी जाय'र गाय रै धणी हरजी नामक रै अठै ई गयो। हरजी नै सारी हैम-नैस बताई। च्यार सौ रिपिया हरजीनै सरूप देवण री कैयो तो—अेकर तो वो थोड़ो किणतिणयो पण पछै मानग्यो। पण हरजी रै मान्यां सू कांई हुंवतो हो। दिनुगै पंचायत मे मनै बुलायो गयो। सिरेपंच समेत च्यार पांच मोजिज आदम्यां केयो कै—"भाई रिपिया तो तैं हरजी नै दिया है, बाकी वी सांसर नै कांई दीरीज्यो। ई रै वास्तै नाडेसर वी री सेवा तो तनै ई करणी पड़सी। वात भी वाजब ही, ई खातर मनै हूंकारो भरणो पड़्यो।

अवै हू नितउठ अेक कूंडै में पीळी माटी अर गोवर रो भारो कर'र लैय जावतो अर गाय रै पग माथै उणनै बांधतो। विरखा हुयोड़ी ही। डचावडी-गंठियो वापरग्यो हो। हूं उठै ई ऐरियै सू डचावड़ी-गंठियो उपाड़ ल्यावंतो अर उणरै आगै न्हांक देंवतो।

म्हारै इलम सूं गावडी दस-बारह दिनां बाद की ससवी हुंवती लखाई। पग री खौरसल में खासा फरक लखावतो। हूं सोचतो अवै अेक दो दिन में आ डांगड्यां सूं ऊंचाया उभी हुवण लाग ज्यासी।

पण कैया करै नी करम पतळा हुवै जणा को सेवा आडी आवै न कोई दवाई। अेक दिन दिनुगै भारो कर'र ले ज्याऊं तो आगै गावड़ी माथै चीलक्यां मूंदै। हूं देख्यो म्हारो ओ कांई विरतंग है। गावडती टांगड़्यां पसार्‌यां निढाळ पड़ी ही। हूं फुरती सूं आय'र नाक आडो हाथ दियो। पण मांय की हुवै तो आवै नी। अवै भारो की रै बाधै हो। राम जाणै गावड़ी

...क और कोई खेलो हुयो क ठाः नी।
... ।। पंचां कैयो—"भाइड़ा, सेवा
... लागणी हुवै जणां कांई हुवै। ठीक
... इ काम हो पण अबै तो लाई रै पईसा
पंचां रो वणावटी अफसोस की की म्हारी

... पच बोल्यो—"अरै पईसा तो बळो लागो लूगो—
... नी। दुनिया घणी जालस हुवै, खड़्या ई लोग गळ मार
... मार देसी।

"खैर आ तो है ई पण मांसर निमित करम कर्‌यां पछै अमीणी दवणआळै री किसी फुटघोड़ी हुवै।" सिरेपंच कैयो।

हूं सिरेपंच साम्हो हळको सो विरोध कर्‌यो—"माइता गावड़ी तो मन्नी चंगी हुयगी ही वा तो अेरू काटो···"

सिरेपंच म्हारी वात विचाळै ई काट नांखी—"भोळो है रै तू, जे गावडी चालण फिरण आळी हुंवती तो उणनै अेरूं काटो थोड़ो ई लड़तो डांगरा घणा सावचेत हुवै।"

मनै वां री वात मानणी पड़ी। पंचां-सरपंचां आगै नटण री किण री खिमता हुवै। राजाजी रै रैणा'र हांजी-हांजी कैणो।

गाय रो पूंछ गळै में घाल'र सगळै गाव रो चक्कर लगावण पड़्यो अर पछै पंचवारी आळै खेजड़ै सू लोगां मनै बहीर कर दियो। आज अबै थारै साम्हो हूं।

"जबर फोड़ा पड्या भई।" हूं कैयो।

"हाल तो की बाकी ई पड़्या है।"

"मळै ?"

"सासर रै लारै दाणा ई खिडावणा पडसी। गगेडा कर'र टावरा-टूवरा नै जिमावणा पड़सी। सोच्यो हो बैंक सू पईसा लैय'र कोई गाव-डती-गूवड़ती लेस्यू पण लेंवतो की रै वापरी करमचंदियै में लिख्योड़ी ई नीं हुवै जणा।" रामेसर री आंख्यां मजळ हुयगी ही। म्हारी समझ में नी आय रैयी ही कै मैं इणनै किणतरै रो ध्यावस वंधाऊं।

गूंगळी

जेठ रो तपतो महीणो अर ऊपर सू चालती कुलखारी लू। आलकतरै री सड़का नुहार री भट्टी सी तपै; पण गूगळी नै किण बात री फिकर। उणरै भवां (मले) लूवां क्यू लूवा रो बाप चालो नी चावै, मड़कां भट्टी क्यू रेल रै इंजन ज्यू तपोनी चावै। वा तो आखो दिन वियां ई उमराणी तपड़का मारै। अेक जाग्यां बैठी तो उणनै स्यात ही किण देखी हुवैला।

सियाळो, उनाळो, चौमासो किसी ही रुत हुवो। गूगळी रो एक पहरावो हुवै, फाड्योड़ो मैलो कुचैलो सो ग्याडियो, (घाघरो) टुकीआळी काचळी, अर अेक फाट्योड़ो सो ललूरियो (ओढणो) माथै ऊपर नांख्योडो। कितरो ई कडकड़ावतो पाळो पडो। गूगळी रै शरीर माथै बीजो गाबो नी दीसै। साधो-बुधो मिनख पाळै सू जकड़ीजज्या पण कै मजाल गूगली नै तेज तावड़ो चढै। कैवत साची ई कैयी है कै 'भोळा री भगवान राखै टेक...।

आपरो दीन धर्म विचार'र जै कोओी वासी-कुसी गूगळी नै देय देवै, गूगळी पोना री कायानै भाडो दे देवै अर फैरूं मस्त, पण गूगळी भी अजब तरीकै री सिटकणी (चिडोकली), उभराणी फिरती नै देख'र जद कोओी फाटी पुराणी चपलां देय देवै, तो गूगळी चपला नै पाछी दैवण आळै रै सिर माथै मारै, अर रोळा करै। गळियां मे भूवती वेळां कदैई नी वकती दीसै, पण जे समझदार मोटो मिनख लुगाई छेड़ लेवै तो रांडा-बूडा री गाळया काढयां विना नी रैवै। छतांपण गूंगळी मे अेक अनोखी बात फैरूं

ही, नान्हा टावरां नैं कंओ नीं कॅवती। नान्हां टावरां नैं देखता ही भाज'र माम्ही आवती अर टाबर नैं बांथ्यां मे उठा'र छाती सू काठो चॅप लॅवती, मुडै माथै सैंकडू वाल्हा (प्यारिया) जबरदस्ती लैंवता थका बडबडावती, "म्हारा नैंनकिया...म्हारै काळजियै री कोर...म्हारा नैंनकिया इतरा दिन नूं कठै रमायो हो...।"

अचाणचकै री गिरफ्त में आयोड़ो टावर गरळावतो।

"अे मां अे गूंगळी खा अे...मां म्हनै गूगळी खा...ऽऽऽ..."

टावर रो रोवणो सुण'र टावर री मां भाज'र वेगी-वेगी आंवती अर गूगळी रै हाथा सू टावर नैं छुड़ा ले जांवती। जाती-जाती पाच सात गाळ्यां री बगसीस गूंगळी ने बनाय जांवती।

"निसरमी रडार नैं ढोई ई को हुवै नी...डाकण गळी गळी हाडती फिरवो करती, टाबरां नैं सुख सू को खेलण दै नी...।"

टावर रो बावळियो भाल'र आगीनै करती टावर री मां पाछल फुर'र ओजू चेतावणी देंवती थकी कॅवती 'अबकाळै जै टींगरा नै अधाई तो बखोरो सौ; भांग नाखूली।"

गूगळी अेकटक जोवती रैंवती, जोवता ही उणरो ठीमर (धीरज) फूट ज्यावतो। नैंण सावण भादवै री झड़ी लगाय दैवंता। अेक भरजोर गेहरो निसकारो नांख गूगळी आगली गळी में रम जांवती।



आज जद म्है नानाणै सू भण पढीज'र दस वरसा सू पाछो गाव आयो तो लारली बालपणै री संग बाता मुडै आगै सनीमा रै पड़दै माथै चितराम आवै ज्यां आवण लागी। जुनीये पीपळ तळै हाडा लकड़ी रमया हा अर वीं टैम ही घूमती घामती आ ज्यांवती गूगळी। सँग रमणआळा टाबर चिड़ावणो सरू कर देवता—"गूंगळी थारै माथै ऊपर भाठो...गूगळी थारै माथै ऊपर माठो।"

टावरा सू गूगळी कदे ही नी चिड़ती टावर चाहे जचै ज्यां केवो छता पण टावर डरता भागण लाग जावता। गूगळी भाज'र म्हनै पकड लेंवती

अर म्हैं गरळांवतो म्हारो गरळावणो सुण'र मां आयर छुडा ले जांवती। फेर गूगळी केअी जेज तांई आसूड़ा ढळकावती।

आज जद अे वाता मुडै आगै आवण लागी तो मां सू पूछ बैठ्यो।

"मा, गूंगळी तो को दीसै नी आसै-पासै...काई हुयो उणरो ?"

मां रो आकरो सुभाव सदा सू है। पण म्हारी अचाचूक री आ वात सुण'र तो मुंडै माथै मुळक आ ही गी। फेर नेहचै सू बोली—"हुवै काओ हो मरगी, पण तनै आ अचाचूक री बात पूछण री काओ सूझी। दस बरस हुयग्या पण अजै को भूल्योनी ?"

"भूलू किंयां..." फेर थोडी जैज रुक'र बोल्यो—"मा, गूगळी जळम सूं ई पागल ही काओ...। उणनै टाबरा सू अणूतो कोड कीकर हो ?"

मां फेरू हंसी...

"बावळा ! तनै कांओ लेवणो है आं वाता सू। हणै तो नानाणै सू आयो है...बठै री वातां वता अे तो फेरू ही हुंवती रैसी।"

"नहीं मां ! मनै गूगळी रै बारै मे सगळी वाता बता। नानाणै रा काओ समचार है। सब राजी खुशी है।"

घणो अधायो जणै जा'र मा गूगळी रो इतिहास बतावणो सरू करियो।

"ओ...जको आपां रै अयूणै छेडै उपासरो है बो कदेई गूंगळी रो हुया करतो। गूगळी रो मोटियार, गूगळी अर उवैरो नैनो छोरो तीना तीन ई रैंवता। गूगळी रो मोटियार मास्टर हो। सगळां रै मुडै लागतो आदमी हो। इयै उपासरै में टाबरां नै भणावतो। टाबर भणावणै रै अेवज मे उणनै मोयलाळा जरूरत री चीजा देय देवता। मास्टर री जिन्नडी पोतारी सुख सू हालती ही। मास्टर आपरै रस्तै सर चालतो इण कारण सूं सैंग मोयलाळां रो प्यारो हुयग्यो। कोओ नै पण शिकायत रो मौको नी देवतो। पोता री ईमानदारी अर मैणत सू टाबरां नै पढावतो।

मास्टर सदा सू रिगली गारो हो। लोगा नै रोजीना सिझ्यारा उपासरै में भेळा कर लेंवतो अर उवानै आपरी घड़ियोडी का'ण्या सुणांवतो। उणरी का'ण्यां कोओ राजा-राणीयां री नी ही। भोगता जमीदारा री काट करणवाळी होंवती। उवां रा जुल्मां माथै मास्टर खार खाया बैठो

हो। कोओ भोगते नै उवैं री लिखियोड़ी का'णी पोंचगी। दूजेई दिन लोगां मास्टर अर उवैं रै नैने टावर री लाश दीठी। कोओी दोखी मास्टर अर उणरैं नान्हे छोरैं री कतल करदी ही।

मास्टरनी (गूगळी) जद मोट्यार अर आपरैं अेकलड़ें छोरैं री लाश दीठी तो तडाछ खाय'र पड़गी। च्यार दीना पछै मास्टरनी नै चेतो बापर्‌यो तो अबै वा मास्टरनी नीं ही। गूगळी रो रुतबो मिळ चुक्यो हो।'

गूगळी नैं आपरै अेकलपैं छोरैं सू भोत वती मोह हो। इण वास्तै वा सदा गळिया मे खेलता टाबरां में आपरै छोरैनै जोंवती रैवती।" मा इतरो कैयनै चुप हुयगी। मैं ख्याला रैं डूगै मागर में गोता लगावतो थको मा सू प्रश्न कर्‌यो—"पण मा वा इत्ता छोरा रैं होवंता थका म्हनैं क्यू बाथ्या मे भर लैवती अर मनैं ईं वयू वाल्हा देवती?"

मा बतायो।

"जिण दिन गूगळी रैं मोटियार अर छोरैं री हत्या हुयी ही उणी दिन थारो जलम हुयो हो पण गूगळी नैं इण बात रो पतो नीं हो वा तो थनैं इण वास्ते ज्यादा वाल्हा देवती कै' थारी अर उवैंरै छोरैं री मूरत अेक ही जैडी ही, उवैंनै श्यात थारैं चे'रे मे आपरो फरजन्द लखावतो।"

मा तो कैवणो वन्द कर दीयो हो पण म्हारो सोचणो जारी हो। मां रै मुंडै सू पूरी बात सुण'र तो मनै इया लागण लाग्यो कै जाणै गूगळी म्हारी मा ही अर वा अबै इण नश्वर संसार मे नी है। आख्या री कोरां मे हाथ लगायो तो वठै नमी ही। बैठ्यो बैठ्यो ही भर जोर निसकारो नांख्यो—'हे गूगळी मा तू जठै कठैई हुवै थारी आत्मां नै श्याती मिळै।

सीक बूझ्यो—"कांई हुयो ऐं बीनणी रै ?"

वो लाल-लाल आंख्यां सूं घूरतो पडूत्तर दियो—"की...नी।"

"तो आ ईयां अठै कियां पड़ी है ?"

"मन्नैं ठा: नी...।"

उणरी मां धरतै पड़ी बीनणी रो कांधो हिलायो, तो वा सफा अचेत। होठां माथै ही फठाई थापरगी। वा बोली—"बेटा! ओ कै कुजरबो काम कर नांख्यो...जा, जल्दी सेक गाडी जोत, असपताल ले चालां नीं जणास बाजो बिगड़सी।"

वो शून्यता में गमेड़ो सीक गाडी जोती, अर दोवू मां बेटो रळ'र बीनणी नैं गाडी मार्थ घाली।

असपताळ में डाक्टर केओ ताळ तांई उणरै ग्लुकोज चढायो। अेक-आध सूई भी लगायी...सूई लगांवतै डाक्टर उणरी मां नैं बूझ्यो।

"यह कहीं से गिर गई थी क्या ?"

"हां भीतळी माथै गारो दैंवण नैं चढी ही सो उठै सूं पडगी।"

"ओ हो...बड़े बुद्धिमान लोग हो तुम भी...जब तुम लोगों को यह पता है कि लुगाई को इससे बढ़कर कोई सीरियस स्टेज नहीं होता.. इन दिनों इसे पूरा आराम मिलना चाहिये था...लेकिन आप लोग तो काम के लोभी होते हो न ..।"

"नीं नीं डाक्टर सा'ब माडाणी ही चढगी भीतळी माथै...।"

"बहुत भला किया...अब देखो मैंने इसका पूरा ट्रीटमेन्ट...चेकअप कर लिया...बचने की तो कोई आशा है ही नहीं, क्योंकि पेट में मरे बच्चे का जहर बुरी तरह से फैल गया है...अलबत्ता कुछ क्षणों के लिए इस इंजेक्सन के प्रभाव से होश में जरूर आ जायेगी...।"

डाक्टर इंजेक्सन लगायो जितरै में वो भी बारै सूं चाल'र डाक्टर कनै आयग्यो। हाथ जोडतो थको बोल्यो—"नीं...नीं डाक्टर सा'ब इणनैं बचाओ पकाई...।"

"नो होप" कैय'र डाक्टर बारै चल्यो गयो। थोड़ी ताळ नैं बण चेतो करयो। सासू अर मोटियार उणरै कनै तो खड़्या ही हा...चेतो हुंवता देख'र उणरो माथो भाळ्यो। बण धीरे-धीरे आंख्यां उघाड़ी। दोवां कानी

चारी-वारी मर जोयो, फेर आंख्या भपकाय'र लीला हुयोडा होठा माथै जीभ फेरती थकी कैयो—"सासूजी मैं काम नी, करती ही नी...हू भौत गुनगार हूं—मन्नै माफी वगसाया, अबै हू बच नी सकूली...मन्नै भौत जोरदार गैळ आवै है...फेर नांड़ आपरै मोटियार कानी फोर'र दर्द सूं हौंठ मीच'र टूटती उवाज में कैयो—

"मैं...थांनै...आछी...नी लागती...ही...नो...हूँ'''मौतऽऽऽ... सूगली हूँ मन्नै मांफी दिराया...म्हारै...पेट मे डीक चालै'''थे'''पकायत ...दूजो...ब्याव...कर लेया...।"

"मां-वेटो दोवां मायो काठो भाल लियो।

"वीनणी चेतो करो तो...वीनणी...ओ बीनणी—" पण बीनणी कठै। उणरो पछी पीजरो खाली करग्यो हो। वो अचेत रै ज्यू हुयग्यो हो...आपरी घण री छेकडली बात उणरै माथै मे भूणचक्कर री ज्यूं घूमै ही। बो रोजीना ईयां चाया करतो हो कै वो इण लुगाई री काओ धार धारै है। पण, अबै उणनै आकाश टोपाळी सू खासा लाठो लागै हो। पैलड़ो ब्याव ही बापू जीवतो ही जणा किया ई करयो हो। अजै तांई तो पैलड़ै ब्याव रा पईसा ही नी उतरया है, अर दूजो ब्याव...हे भगवान!"

उणनै की नी सूझै हो। उणनै लखावै हो कै जाणै, धरती, आकाश अस्पताल कमरो, मां की चकरियां घूम रैया है, अर जाणे थोड़ी ही ताळ नै अै सगळा उणरै उपर पड ज्यासी।

"लास नै उठावो" री ताकीद सूं मा-वेटो दोनू चिमक्या।